THE LARGEST CIRCULATED AND READ HINDI DAILY IN TELANGANA & ANDHRA PRADESH

स्वतंत्र वार्ता

epaper.vaartha.com
Vaartha Hindi
@Vaartha_Hindi
Vaartha official
www.hindi.vaartha.com

गन्ना किसानों को मिले 3,500 प्रति टन का दाम

बेलगावी, 5 नवंबर (एजेंसियां)। कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री और भाजपा के वरिष्ठ नेता बसवराज बोम्मई ने मुख्यमंत्री सिद्धारमैया से अपील की है कि वे तुरंत हस्तक्षेप करें और राज्य के गन्ना किसानों को <3,500 प्रति टन का भाव सुनिश्चित करें। बोम्मई ने कहा कि किसानों की यह मांग पूरी तरह वाजिब है और सरकार को इसे लेकर स्पष्ट निर्णय लेना चाहिए।

बोम्मई ने सुझाव दिया कि शुगर फैक्ट्रियां <3,300 प्रति टन का भुगतान करें और राज्य सरकार <200 प्रति टन की सब्सिडी दे, ताकि किसानों को वांछित दर <3,500 प्रति टन मिल सके। उन्होंने आरोप लगाया कि राज्य सरकार के कई मंत्री खुद शक्कर उद्योग से जुड़े हुए हैं, जिसके कारण किसानों की मांगों को नजरअंदाज किया जा रहा है।

वर्ष-30 अंक : 220 (हैदराबाद, निजामाबाद, विशाखापट्टणम, तिरुपति से प्रकाशित) मार्गशीर्ष कृ.1 2082 गुरुवार, 6 नवंबर-2025

प्रधान संपादक - डॉ. गिरीश कुमार संघी हैदराबाद नगर * पृष्ठ : 16 मूल्य : 8 रुपये

सीमा-स्वीटी बनकर ब्राजीली मॉडल ने हरियाणा चुनाव में डाले वोट

राहुल गांधी ने चुनाव आयोग पर गंभीर आरोप लगाए

हरियाणा में 5 कैटेगरी में 25 लाख वोट चोरी हुए। इनमें 5 लाख डुप्लीकेट वोटर थे। राज्य में कुल 2 करोड़ वोटर्स हैं यानी हर 8 में से 1 वोट फर्जी था। इसके कारण 22 हजार वोट से कांग्रेस हारी।

राहुल गांधी
कांग्रेस सांसद

नई दिल्ली, 5 नवंबर (एजेंसियां)। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने बुधवार को चुनाव आयोग और बीजेपी पर गंभीर आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि दोनों ने मिलकर हरियाणा में कांग्रेस की 'भारी जीत को हार में बदलने की साजिश' रची है। बिहार विधानसभा चुनाव के पहले चरण से ठीक एक दिन पहले राहुल गांधी ने प्रेस कॉन्फ्रेंस कर 'वोट चोरी ' के अपने आरोपों को दोहराया और कहा कि उनके पास'100 फीसदी सबूत' हैं कि हरियाणा में करीब 25 लाख वोट या तो फर्जी हैं, या दोहराए गए हैं, या फिर हेराफेरी की गई है। राहुल गांधी ने आरोप लगाया कि मुख्य चुनाव आयुक्त और दो अन्य आयुक्तों ने भाजपा के साथ मिलकर हरियाणा में भाजपा की जीत सुनिश्चित की। उन्होंने दावा किया कि इनकी पीएम मोदी के साथ साझेदारी है।

राहुल गांधी ने आरोप लगाया कि 'हमें शक है कि वोट चोरी बूथ स्तर पर नहीं हो रही है बल्कि राज्य और नेशनल लेवल पर ये हो रही है। राहुल गांधी ने आरोप लगाया कि हरियाणा में हर आठ में से एक वोटर नकली है। उन्होंने कहा कि नकली फोटो वाले हरियाणा में एक लाख से ज्यादा मतदाता हैं।

राहुल गांधी ने कहा कि सभी सर्वेक्षणों में हरियाणा में कांग्रेस की जीत की संभावना जताई गई थी, लेकिन सुनियोजित ढंग से कांग्रेस की तय जीत को हार में बदला गया। राहुल गांधी ने कहा, "मैं "जेन जी" से कहना चाहता हूं कि देखिये कि कैसे आपके भविष्य की चोरी की जा रही है।' राहुल गांधी ने मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार पर भी हमला बोलते हुए कहा कि उन्होंने दावा किया कि मकान नंबर जीरो उन लोगों के सामने दर्ज कर दिया जाता है, जिनके पास घर नहीं होते. राहुल की प्रेस कॉन्फ्रेंस में चुनाव आयोग की प्रेस कॉन्फ्रेंस का वीडियो भी चलाया गया, जिसमें घर विहीन लोगों के लिए वोटर लिस्ट में दर्ज पते को लेकर जानकारी दी जा रही थी। राहुल गांधी ने कहा कि हमने क्रॉस चेक किया है। मुख्य चुनाव आयुक्त ने देश की जनता से खुलेआम झूठ बोला।

कांग्रेस नेता ने हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के बयान का वीडियो दिखाया जिसमें सैनी ने कथित तौर पर सरकार बनाने की "व्यवस्था' होने की बात की थी। राहुल गांधी ने दावा किया कि हरियाणा में पांच अलग-अलग तरीकों से 25,41,144 फर्जी मतों से "वोट चोरी' की गई। उन्होंने कहा कि हरियाणा की मतदाता सूची में फर्जी नाम डाले गए।

राहुल गांधी की प्रेस कॉन्फ्रेंस की बड़ी बातें

राहुल ने कहा, 'हमारे पास "एच फाइल्स' हैं। यह उस पूरी कहानी का दस्तावेज है कि कैसे एक पूरे राज्य का चुनाव चुरा लिया गया। हमें शुरू में लगा कि यह कुछ सीटों तक सीमित है, लेकिन बाद में पता चला कि यह राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर हो रहा है।'

राहुल गांधी ने बताया कि हरियाणा के कई उम्मीदवारों ने शिकायत की थी कि चुनाव में कुछ गड़बड़ है। उन्होंने कहा, 'उनके सारे अनुमान उलट गए। हमने ऐसा अनुभव मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और महाराष्ट्र में भी किया था। इसलिए हमने हरियाणा में जाकर पूरा विश्लेषण किया।' राहुल गांधी ने दावा किया कि हरियाणा विधानसभा चुनाव में करीब 25 लाख वोटों की हेराफेरी पांच श्रेणियों में हुई, डुप्लीकेट वोटर, फर्जी पते, सामूहिक वोटिंग और अन्य गड़बड़ियां। उन्होंने कहा, 'हरियाणा के इतिहास में पहली बार पोस्टल बैलेट और असली वोटों के आंकड़े अलग-अलग थे।' >14

मनी लॉन्ड्रिंग मामलों में ईडी कार्रवाई की तारीफ

नई दिल्ली, 5 नवंबर (एजेंसियां)। मनी लॉन्ड्रिंग के खिलाफ भारत की सख्त कार्रवाई की इंटरनेशनल लेवल पर सराहना हुई है। वैश्विक निगरानी संस्था फाइनेंशियल एक्शन टास्क फोर्स (एफएटीएफ) ने अपनी रिपोर्ट में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के काम को एक प्रभावशाली वैश्विक मॉडल बताया है।

रिपोर्ट में कहा कि भारत की कानूनी व्यवस्था और मनी लॉन्ड्रिंग रोकथाम तंत्र मजबूत और भरोसेमंद है। यह प्रणाली अपराध से जुड़ी संपत्ति को जब्त करने और पीड़ितों को राहत दिलाने के मामले में अन्य देशों के लिए मिसाल बन गई है।

महाराष्ट्र के एक मामले का जिक्र है, जिसमें अवैध कमाई से खरीदी गई संपत्तियों को जब्त कर पीड़ितों को लौटाया गया। एफएटीएफ ने कहा कि भारत ने वित्तीय अपराधों से जब्त संपत्तियों को समाजहित में उपयोग करने की दिशा में ठोस कदम उठाए हैं।

संस्था के मुताबिक, भारत का यह मॉडल अन्य देशों के लिए प्रेरणास्रोत बन सकता है।

लिकर इंडस्ट्री की चेतावनी

10 नवंबर तक बकाया क्लियर करो नहीं तो थमेगी सप्लाई

हैदराबाद, 5 नवंबर (स्वतंत्र वार्ता)। लिकर उद्योग इस समय अजीब पसोपेस में है। एक तरफ क्रिसमस और न्यू ईयर का फेस्टिवल सीजन आ रहा है। ऐसे समय में शराब की मांग बढ़ जाती है। लेकिन दूसरी तरफ इंडस्ट्री उस समय सप्लाई थामने की बात कर रहे हैं। जी हां, यह हालत तेलंगाना में आने वाली है। राज्य सरकार पर शराब उद्योग के करीब 3,000 करोड़ रुपये का बकाया है। वे सरकार से बकाये का भुगतान करने को कह रहे हैं, लेकिन ऐसा नहीं रहा है। इसलिए शराब उद्योग ने चेतावनी दी है कि यदि 10 नवंबर तक भुगतान नहीं किया गया तो त्योहारी सीजन के दौरान आपूर्ति में गंभीर कमी आ सकती है। मतलब क्रिसमस और न्यू ईयर की पार्टी बिगड़ सकती है।

यह चेतावनी तेलंगाना सरकार को ब्रेवरीज एसोसिएशन आफ इंडिया एवं इंटरनेशनल स्प्रिट एंड वाइन एसोसिएशन आफ इंडिया और कान्फीडेरेशन आफ इंडियन अल्कोहलिक वेवरीज कंपनी ने दी है। इन्होंने राज्य सरकार से शराब आपूर्तिकर्ताओं के लंबित भुगतानों को तुरंत जारी करने का आग्रह किया है। इनका कहना है कि पेमेंट नहीं मिलने से शराब बनाने वाली कंपनियां क्रिसमस और नए साल के दौरान बढ़ी डिमांड को पूरा करने में असमर्थ होंगी। उस समय शराब की डिमांड बढ़ जाती है, सामान्य मासिक औसत से 1.75 गुना अधिक। यह स्थिति विशेष रूप से तब गंभीर होगी जब अगले महीने नई शराब की दुकानें खुलने वाली हैं। उद्योग संघों का कहना है कि सरकार ने बीते अक्टूबर में ही शराब के नए खुदरा लाइसेंस जारी किए हैं। इस मद में सरकार को आवेदन शुल्क से ही 3,000 करोड़ रुपये मिले हैं। लिकर इंडस्ट्री का कहना है कि इस राशि का उपयोग लंबित बिलों के निपटान के लिए किया जाए। संघों ने कहा पर्याप्त शुल्क एकत्र करने और अक्टूबर में रिकॉर्ड बिक्री दर्ज करने के बावजूद, पिछले चार महीनों के औसत की तुलना में आपूर्तिकर्ताओं को भुगतान लगभग 50% कम हो गया है।

उद्योग के अनुमानों के अनुसार, राज्य पर जुलाई के लिए 697 करोड़ रुपये, अगस्त के लिए 614 करोड़ रुपये, सितंबर के लिए 1,010 करोड़ रुपये और अक्टूबर के लिए 484 करोड़ रुपये का बकाया है। यह कुल मिलाकर 2,805 करोड़ रुपये का बकाया बनता है।

उद्योग निकायों ने इस बात पर जोर दिया कि अल्कोवेब सेक्टर से तेलंगाना के खजाने में हर साल 38,000 करोड़ रुपये से अधिक का योगदान आता है। यह क्षेत्र रोजगार, खुदरा और आतिथ्य पारिस्थितिकी तंत्र को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसलिए सरकार इस इंडस्ट्री को नुकसान से बचाएं। उन्होंने चेतावनी दी कि निरंतर निष्क्रियता आपूर्ति श्रृंखला को बाधित कर सकती है और त्योहारी अवधि के दौरान खुदरा विक्रेताओं और उपभोक्ताओं को नुकसान पहुंचा सकती है।

भाजपा बोली- वोट चोरी पर राहुल के दावे फर्जी

नई दिल्ली, 5 नवंबर (एजेंसियां)। कांग्रेस सांसद और नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने बुधवार को एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में भाजपा और चुनाव आयोग पर वोटर लिस्ट में गड़बड़ी के आरोप लगाए। केंद्रीय मंत्री किरेन रिजिजू ने राहुल के आरोपों पर पलटवार किया। रिजिजू ने कहा- राहुल ने जो प्रजेंटेशन दिया, वह फर्जी था। राहुल गांधी ने अपनी प्रेस कॉन्फ्रेंस में कुछ विदेशी महिलाओं के नाम का जिक्र किया। वे संसद सत्र चलते समय विदेश चले जाते हैं। छिपकर थाईलैंड-कंबोडिया जाते हैं। उन्हें विदेशों से जो प्रेरणा मिलती है, उसके आधार पर वे लोगों का समय बर्बाद करते हैं।

केंद्रीय मंत्री ने कहा- हम भी कई चुनाव हारे, लेकिन कभी रोना-धोना नहीं किया। हमने चुनाव आयोग को गाली नहीं दी। हमने हमेशा नतीजों का स्वागत किया। बिहार में कल चुनाव है। वे ध्यान भटकाने के लिए मुद्दा लेकर आ रहे हैं। राहुल बोलते हैं कि एटम बम फटने वाला है। उनका एटम बम कभी फटता क्यों नहीं है?

रिजिजू ने हरियाणा चुनाव पर राहुल के आरोपों पर कहा- एग्जिट पोल, ओपिनियन पोल में उलटफेर होते हैं। 2004 में एग्जिट पोल में भाजपा जीत रही थी, लेकिन नतीजे में हार गई। लोकतंत्र में जीत हो या हार, इसे स्वीकार करना पड़ेगा। हमने चुनाव आयोग, एग्जिट पोल-ओपिनियन पोल को गाली नहीं दी।

वोटिंग के समय हर पार्टी का पोलिंग एजेंट होता है। ये चैक करते हैं कि कौन वोट डाला है, कौन हीं। बाहर से ऑब्जर्वर्स होते हैं। अगर वोटिंग में गड़बड़ी है तो पिटीशन दे सकते हैं। कोर्ट जा सकते हैं। काउंटिंग में भी पोलिंग होती है। तब भी पोलिंग एजेंट्स होते हैं। सभी चीजें व्यवस्था के मुताबिक होती है। ये अदालत नहीं जाते। इन्हें न्याय व्यवस्था में यकीन नहीं है। लोकतंत्र क्या ऐसे ही चलेगा।

'अदालत-एजेंसियों से न खेले'

आरोपी के दुबई से गायब होने पर सुप्रीम कोर्ट सख्त, ईडी को यह निर्देश

नई दिल्ली, 5 नवंबर (एजेंसियां)। सुप्रीम कोर्ट ने प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) को महादेव सट्टेबाजी एप के फरार सह-संस्थापक का पता लगाने और उसकी मौजूदगी सुनिश्चित करने का निर्देश दिया है। सट्टेबाजी प्रकरण का आरोपी दुबई से भागकर किसी अज्ञात स्थान पर चला गया है, जिसके बाद कोर्ट ने यह निर्देश दिया है। न्यायालय ने कहा ऐसे मामलों के आरोपी अदालतों और जांच एजेंसियों को खेल समझें, इसकी अनुमति नहीं दी जा सकती। न्यायमूर्ति एमएम सुंदरेश और न्यायमूर्ति सतीश चंद्र शर्मा की पीठ ने आरोपी रवि उप्पल की ओर से कानून प्रवर्तन एजेंसियों से बचने के मामले को गंभीरता से लिया और कहा, इससे हमारी अंतरात्मा को धक्का लगा है और अदालत को इस बारे में कुछ करना होगा।

भारत में कानून प्रवर्तन एजेंसियों से बच रहा उप्पल कथित तौर पर दुबई से भागकर किसी अज्ञात स्थान पर चला गया है। इसके बाद संयुक्त अरब अमीरात के अधिकारियों ने उसके खिलाफ प्रत्यर्पण की कार्यवाही बंद कर दी है।

पीठ ने कहा, उस जैसे सरगनाओं के लिए अदालतें और जांच एजेंसियां महज खेलने का साधन हैं। हमें इस बारे में कुछ करना होगा। पीठ ने ईडी को उसे तलाशने और हिरासत में लेने का निर्देश दिया। अदालत ने मंगलवार को कहा, "हम उसकी याचिका खारिज कर देंगे। पता लगाइए कि उसे कैसे हिरासत में लिया जाए। ऐसा लगता है कि वह एक जगह से दूसरी जगह जाने में काफी कुशल है।

शीर्ष अदालत उप्पल की एक याचिका पर सुनवाई कर रही थी जिसमें उन्होंने छत्तीसगढ़ हाईकोर्ट के 22 मार्च के आदेश को चुनौती दी है। अदालत की ओर से उप्पल को रायपुर की निचली अदालत में लंबित धन शोधन मामले की सुनवाई में शामिल होने का निर्देश दिया गया था। ईडी की ओर से पेश अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल एसवी राजू ने अदालत को बताया कि ऐसा लगता है कि उप्पल दुबई से भाग गया है, जहां उसे 2023 में हिरासत में लिया गया था।

राजू ने कहा कि वित्तीय अपराधों में संलिप्त आरोपी अक्सर ऐसे स्थानों पर भागने की कोशिश करते हैं, जहां भारत के साथ प्रत्यर्पण संधियां नहीं हैं। उन्होंने कहा, आपको यूएई से प्रत्यर्पित किया जा सकता है, क्योंकि भारत की उनके साथ प्रत्यर्पण संधि है। इसलिए हो सकता है कि वह ब्रिटिश वर्जिन द्वीप समूह जैसे स्थानों पर चला गया हो, क्योंकि भारत की उस देश के साथ प्रत्यर्पण संधि नहीं है।

अभिनेता विजय बने टीवीके के सीएम उम्मीदवार, गठबंधन पर होगा जल्द फैसला

चेन्नई , 5 नवंबर (एजेंसियां)। तमिल फिल्म अभिनेता और तमिलगा वेत्री कझगम (टीवीके) पार्टी के प्रमुख थलपति विजय को पार्टी ने 2026 के तमिलनाडु विधानसभा चुनावों के लिए मुख्यमंत्री पद का उम्मीदवार घोषित किया है। साथ ही, उन्हें गठबंधन को लेकर अंतिम निर्णय लेने का अधिकार भी दिया गया है। महाबलीपुरम के एक निजी होटल में बुधवार को आयोजित टीवीके की विशेष महासभा की बैठक में यह फैसला सर्वसम्मति से लिया गया। बैठक में विजय अपने ट्रेडमार्क सफेद शर्ट और हल्की दाढ़ी वाले लुक में पहुंचे।

बैठक के दौरान कुल 12 प्रस्ताव पारित किए गए, जिनमें तमिलनाडु की महिलाओं की सुरक्षा, श्रीलंकाई नौसेना द्वारा भारतीय मछुआरों की बार-बार गिरफ्तारी और मतदाता सूची की विशेष संशोधन प्रक्रिया (एसआईआर) जैसे मुद्दे शामिल थे।

करूर रैली में मारे गए 41 लोगों को दी श्रद्धांजलि

टीवीके महासभा ने अपने प्रस्ताव में कहा विजय सभी वर्गों के लोगों द्वारा पसंद किए जाने वाले नेता हैं। उनके नेतृत्व में पार्टी 2026 के विधानसभा चुनावों में उतरेगी। उन्हें गठबंधन से जुड़ा हर निर्णय लेने का अधिकार दिया जाता है। बैठक की शुरुआत करूर रैली में हुए स्टांपेड हादसे में मारे गए 41 लोगों को श्रद्धांजलि देने के साथ हुई। सदस्यों ने दो मिनट का मौन रखकर मृतकों को श्रद्धांजलि दी। साथ ही, एक प्रस्ताव में विजय और जनता को टीवीके आयोजनों के दौरान पर्याप्त पुलिस सुरक्षा देने की मांग की गई।

'इनका बंगाल विरोधी चेहरा फिर उजागर'

टीएमसी नेता सागरिका घोष ने भाजपा को घेरा

कोलकाता, 5 नवंबर (एजेंसियां)। तृणमूल कांग्रेस ने बुधवार को भाजपा पर तीखा हमला बोलते हुए उसे "बंगाल विरोधी' पार्टी कहा। इतना ही नहीं, टीएमसी सांसद सागरिका घोष ने आगे कहा कि संसद के सेंट्रल हॉल में देशबंधु चित्तरंजन दास की जयंती पर आयोजित श्रद्धांजलि समारोह में भाजपा के किसी भी बंगाल सांसद ने हिस्सा नहीं लिया।

घोष ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म "एक्स' पर लिखा कि भाजपा बंगाल में वोट पाने की कोशिश कर रही है, लेकिन उसके सांसद अपने राज्य के महानायकों को सम्मान देने नहीं पहुंचे।

टीएमसी की राज्यसभा उपनेता सागरिका घोष ने अपने पोस्ट में लिखा कि बंगाल में वोट जीतने को बेताब भाजपा को एक सवाल देशबंधु चित्तरंजन दास को श्रद्धांजलि देने के समारोह में भाजपा के बंगाल सांसद कहां थे? उन्होंने आगे कहा कि भाजपा का "बंगला विरोधी'

रवैया एक बार फिर सामने आया है। टीएमसी हमेशा बंगाल के महापुरुषों को याद रखेगी और सम्मान देगी। घोष ने दास को बंगाल का प्रतीक, महान वकील और स्वतंत्रता आंदोलन का नायक बताया।

लोकसभा सचिवालय की ओर से जारी बयान में कहा गया कि बुधवार को संविधान सदन के सेंट्रल हॉल में देशबंधु चित्तरंजन दास के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की गई। इस अवसर पर कई सांसदों, पूर्व सांसदों और लोकसभा के महासचिव उतपाल कुमार सिंह समेत लोकसभा व राज्यसभा सचिवालय के वरिष्ठ अधिकारियों ने स्वतंत्रता सेनानी को श्रद्धांजलि दी। समारोह में आए गणमान्य व्यक्तियों को दास के जीवन पर आधारित हिंदी और अंग्रेजी पुस्तिका भी प्रदान की गई।

लोकसभा सचिवालय के अनुसार, देशबंधु चित्तरंजन दास का चित्र संसद के सेंट्रल हॉल में 12 सितंबर 1958 को तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने अनावरण किया था। इस आयोजन का उद्देश्य स्वतंत्रता संग्राम के उन महानायकों को सम्मानित करना था, जिन्होंने भारत की आज़ादी की लड़ाई में अग्रणी भूमिका निभाई।

चित्तरंजन दास, जिन्हें लोग स्नेह से "देशबंधु' कहते थे, ब्रिटिश शासनकाल में एक प्रमुख वकील, राजनीतिक कार्यकर्ता और स्वतंत्रता सेनानी थे। उन्होंने बंगाल में स्वराज पार्टी की स्थापना की और सुभाष चंद्र बोस जैसे कई राष्ट्रवादी नेताओं के मार्गदर्शक रहे। बंगाल की जनता आज भी उन्हें अपने गौरव के प्रतीक के रूप में देखती है।

'एनडीए सरकार रही तो शायद आगे चुनाव ही ना हों...' प्रियंका गांधी

पश्चिम चंपारण, 5 नवंबर (एजेंसियां)। बिहार की रैली में कांग्रेस की सांसद प्रियंका गांधी ने एनडीए पर तीखा हमला बोला है। प्रियंका गांधी ने दावा किया है कि अगर यह सरकार रहती है तो हो सकता है कि आगे कभी चुनाव ही ना हों। सरकार सबकुछ बर्बाद कर सकती है। इस दौरान, उन्होंने हरियाणा में कथित 'वोट चोरी' का भी जिक्र किया और एनडीए पर बेईमानी का आरोप लगाया।

उन्होंने कहा कि हर गरीब परिवार को कम से कम एक सरकारी नौकरी देने की पूरी कोशिश करेंगे। अलग-अलग विभागों में लाखों वैकेंसी हैं, उनको भरा जाएगा। इसके अलावा, अगर महागठबंधन सत्ता में आया तो बिहार के लोगों को 25 लाख रुपये तक का मुफ्त इलाज मिलेगा।

बिहार में प्रियंका गांधी ने दावा किया कि सभी टेंडर और कारखाने गुजरात जा रहे हैं। जो लोग कॉर्पोरेट को जमीन और संसाधन देते हैं, वे गरीबों के लिए काम नहीं करेंगे।

पश्चिम चंपारण में प्रियंका गांधी ने कहा कि प्रधानमंत्री को अपराध और भ्रष्टाचार पर नियंत्रण से ज्यादा कांग्रेस के पोस्टर से तेजस्वी की तस्वीर गायब होने की चिंता है। बिहार में बेरोजगारी की उच्च दर के कारण युवा काम के लिए राज्य से बाहर पलायन करने को मजबूर हैं।

युवक से तलवे चटवाए थप्पड़ मारे और बाल खींचे

सीधी, 5 नवंबर (एजेंसियां)। सीधी के एक युवक से गुजरात में बदमाश ने पैर के तलवे चटवाए। चाकू की नोक पर धमकाया। चांटे मारे और बाल भी खींचे। इसके बाद से युवक लापता हो गया।

इसके दो वीडियो सामने आए हैं। वीडियो गुजरात के सूरत में बनाए गए हैं। परिजन का आरोप है कि काम के दौरान 'भोला भाई' नाम के व्यक्ति ने उसे चाकू दिखाकर धमकाया और मारपीट भी की। वीडियो सामने आने के बाद युवक के पिता गुजरात रवाना हो गए हैं।

बुधवार सुबह करीब 11 बजे परिवार बहरी थाना पहुंचा। उन्होंने थाना प्रभारी राजेश पांडेय को आवेदन देकर बेटे को खोजने और सकुशल वापस लाने की गुहार लगाई।

नकझर खुर्द गांव का रहने वाले 26 वर्षीय युवक गुजरात के सूरत में मजदूरी करने गया था। पहला वीडियो 4 नवंबर की रात उसके वॉट्सऐप और फेसबुक स्टेटस पर अपलोड हुआ। परिजनों का कहना है कि वीडियो सामने आने के बाद से उसका मोबाइल फोन स्विच ऑफ है। उससे संपर्क नहीं हो पा रहा।

जम्मू -कश्मीर को क्यों नहीं मिल रहा राज्य का दर्जा

बिहार के गवर्नर आरिफ मोहम्मद खान ने बताया

जम्मू, 5 नवंबर (एजेंसियां)। बिहार के राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान इन दिनों जम्मू और कश्मीर गए हैं। यहां उन्होंने इस केंद्र शासित प्रदेश के राज्य का दर्जा बहाली को लेकर बड़ा बयान दिया है। उन्होंने कहा है कि सब चाहते हैं कि जम्मू और कश्मीर को राज्य का दर्जा मिल जाए, लेकिन इसके लिए यहां हालात सामान्य होना जरूरी है। बता दें कि राज्य के दर्जा बहाली को लेकर यहां की गैर-बीजेपी पार्टियां कभी आक्रामक तो कभी निराशाजनक रुख अपना रही हैं। अदालतों का दरवाजा भी खटखटाने की कोशिशें हुई हैं।

बिहार के गवर्नर आरिफ मोहम्मद खान ने कहा है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की भी इच्छा है कि जम्मू और कश्मीर को राज्य का दर्जा मिल जाए। लेकिन, उन्होंने कहा कि इसके लिए जरूरी है कि इस केंद्र शासित प्रदेश में हालात बिल्कुल सामान्य हो जाएं। उन्होंने बुधवार को श्रीनगर में कहा, 'हम सब फिक्रमंद हैं...हम सब चाहते हैं कि नॉर्मल हालात हों...सबकी

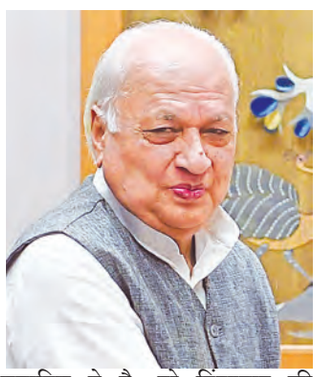

ख्वाहिश ये है...पूरे हिंदुस्तान की ख्वाहिश ये है...प्रधानमंत्री की है कि कश्मीर एक राज्य की हैसियत से खुद अपना सबकुछ तय करे...लेकिन, ये हालात नॉर्मल पैदा करने पड़ेंगे। ये आप और हमारा काम है कि हम वो हालात पैदा कर सकें कि जिस तरह से नॉर्मल कानून सब जगह चल रहा है, उस तरह से कश्मीर में भी चले।'

बता दें कि केंद्र सरकार का संसद से लेकर सार्वजनिक स्तर पर और अदालत तक में इस मुद्दे पर यही रुख रहा है कि समय आने पर जम्मू और कश्मीर का पूर्ण राज्य का दर्जा बहाल कर दिया जाएगा। खुद प्रधानमंत्री मोदी श्रीनगर में सार्वजनिक तौर पर यह भरोसा दे चुके हैं। लेकिन, इसके लिए कोई समय-सीमा तय नहीं की गई है। जबकि, प्रदेश में सत्ताधारी नेशनल कांफ्रेंस से लेकर अन्य राजनीतिक दल इसकी मांग को लेकर लगातार आवाज उठाते रहे हैं।

हाल ही में केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने भी यही वादा किया है कि जम्मू और कश्मीर में उचित समय पर राज्य का दर्जा बहाल कर दिया जाएगा।

18 अक्टूबर, 2025 को पटना में एक प्रेस कांफ्रेंस में जब गृहमंत्री से जम्मू और कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला के उस बयान की ओर इशारा किया गया कि उनकी सरकार बनने के एक साल बाद भी राज्य का दर्जा नहीं मिलने से जम्मू और कश्मीर और दिल्ली के बीच एक 'खाई'बनी हुई है। इसपर उन्होंने यूटी (UT) के लोगों से धैर्य रखने का आह्वान किया।

सेना का सिर्फ सैन्य धर्म : राजनाथ सिंह

नई दिल्ली , 5 नवंबर (एजेंसियां)। सेना को लेकर राहुल गांधी की ओर से दिए गए बयान के बाद सियासत गरमा गई है. कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने बिहार कुटुंबा में एक सभा में कहा था कि देश की सेना पर 10 फीसद लोगों का कब्जा है और 90 फीसद लोगों का हिस्सा खास वर्ग द्वारा मारा जा रहा है। इस बयान पर रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह की भड़क गए हैं।

राजनाथ सिंह ने कहा, हमारी सेना के जवानों का एक ही धर्म है। वह धर्म है "सैन्य धर्म'. इसके अलावा कोई दूसरा धर्म नहीं है. हमारी सेना को राजनीति में न घसीटें. जब भी इस देश पर संकट आया है, हमारे सैनिकों ने अपनी बहादुरी और पराक्रम का प्रदर्शन करके भारत का सिर ऊंचा किया है। राजनाथ ने आगे कहा कि जाति, संप्रदाय और धर्म की इस राजनीति ने देश को बहुत नुकसान पहुंचाया है और हमारी सोच है कि समाज के सभी वर्गों का उत्थान होना चाहिए। इसके अलावा उन्होंने कहा कि हम समाज के सभी वर्गों को साथ लेकर चलना चाहते हैं। हम जाति, संप्रदाय या धर्म के आधार पर भेदभाव नहीं करना चाहते. हमारे देश के ऋषियों और लोगों ने कभी इस बारे में सोचा भी नहीं।

वकील विक्रम सिंह की गिरफ्तारी का दिल्ली हाईकोर्ट और जिला बार ने किया विरोध

नई दिल्ली, 5 नवंबर (एजेंसियां)। दिल्ली की सभी जिला अदालत बार एसोसिएशनों की समन्वय समिति और दिल्ली हाई कोर्ट बार एसोसिएशन ने गुरुग्राम एसटीएफ द्वारा अधिवक्ता विक्रम सिंह की गिरफ्तारी की कड़ी निंदा की है। समिति ने इसे कानूनी पेशे की स्वतंत्रता पर सीधा हमला और अधिवक्ता को डराने का प्रयास बताया। समिति ने कहा कि अधिवक्ता का अपने मुवक्किल का बचाव करना उसका पेशेवर दायित्व है और इस आधार पर उसे अपराधी ठहराना कानून के शासन और न्याय व्यवस्था पर प्रहार है। समिति ने विक्रम सिंह के साथ एकजुटता जताते हुए तत्काल और बिना शर्त झूठे मुकदमे की वापसी की मांग की है। वहीं, समिति ने ये भी निर्णय लिया कि 6 नवंबर 2025 को दिल्ली की सभी जिला अदालतों में पूर्ण हड़ताल की जाएगी। इस दिन सभी अधिवक्ता कोर्ट के कार्य से दूर रहकर विरोध दर्ज करेंगे। दिल्ली हाई कोर्ट बार एसोसिएशन की कार्यकारिणी ने भी इस कार्रवाई को शक्ति के दुरुपयोग और कानूनी पेशे की गरिमा पर हमला करार दिया है और दोषियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है।

जिम से लौटा युवक, हार्टअटैक से मौत

इंदौर, 5 नवंबर (एजेंसियां)। इंदौर में जिम से लौटने के बाद एक युवक की हार्ट अटैक से मौत हो गई। युवक ने जिम के बाद हाफ फ्राय अंडा खाया था, जिसके बाद उसे एसिडिटी और घबराहट महसूस हुई। मामला बाणगंगा थाना क्षेत्र का है।

मृतक की पहचान संदीप (32) पुत्र श्याम सोनगिरा, निवासी सुखलिया ग्राम के रूप में हुई है। पुलिस के अनुसार, मंगलवार को जिम से लौटने के बाद संदीप अपनी दुकान पहुंचा और वहां हाफ फ्राय खाया। कुछ देर बाद जब वह घर लौटा, तो उसे एसिडिटी और बेचैनी महसूस होने लगी। छोटे भाई प्रदीप सोनगिरा ने बताया कि संदीप ने सीने में जलन और घबराहट की शिकायत की, तो वह उसे बाइक से डॉक्टर के पास ले जाने लगा। रास्ते में ही संदीप बेहोश होकर गिर पड़ा।

उसे तत्काल भंडारी अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने जांच के बाद हार्ट अटैक से मौत की पुष्टि की। बाणगंगा पुलिस के अनुसार, संदीप की मौत के मामले में बुधवार को मर्ग कायम किया गया है। शव का पोस्टमॉर्टम एमवाय अस्पताल में कराया गया है।

अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट की सुरक्षा में तैनात सिपाही की मौत, ड्यूटी के दौरान पड़ा दिल का दौरा

हलवारा (पंजाब), 5 नवंबर (एजेंसियां)। हलवारा अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट की सुरक्षा में तैनात पंजाब पुलिस के सिपाही बलजीत सिंह बंब (36) की बुधवार सुबह करीब 10 बजे दिल का दौरा पड़ने से मौत हो गई। बलजीत सिंह जिला फिरोजपुर की तहसील जीरा के गांव बंडाला नौ बंब का रहने वाला था।

एयरपोर्ट पर तैनात पंजाब पुलिस के चार सदस्यीय सुरक्षा दल के प्रभारी सब इंस्पेक्टर प्रेम सिंह ने बताया कि बलजीत सिंह एयरपोर्ट के मुख्य एंट्रेंस द्वार पर अपनी ड्यूटी कर रहा था, सुबह करीब साढ़े नौ बजे उसे घबराहट होने लगी और चक्कर खाकर गिर गया। बलजीत सिंह को तुरंत एतिआणा की डिस्पेंसरी में इलाज के लिए ले जाया गया। डॉक्टर ने बताया कि उसका रक्तचाप बहुत कम है। वहां से प्रथम उपचार के बाद बलजीत सिंह बंब को कस्बा सुधार बाजार स्थित चोपड़ा नर्सिंग होम ले जाया गया लेकिन देर हो चुकी थी।

डॉ। संजीव चोपड़ा ने बलजीत सिंह को मृत करार दिया। डॉ। चोपड़ा ने बताया कि उनके अस्पताल पहुंचने से पहले ही बलजीत की मौत हो चुकी थी। सुरक्षा दल प्रभारी प्रेम सिंह ने बताया कि बलजीत सिंह बंब के शव को पोस्टमार्टम के लिए जगरांव स्थित सिविल अस्पताल भेजा जा रहा है। पोस्टमार्टम के बाद बलजीत के शव को उसके गांव बंडाला नौ बंब ले जाया जाएगा जहां सरकारी सम्मान के साथ उसका अंतिम संस्कार किया जाएगा।

'सेना को राजनीति में घसीटकर दुश्मनी भड़काना चाहते हैं'

राहुल गांधी के बयान पर भाजपा का पलटवार

नई दिल्ली, 5 नवंबर (एजेंसियां)। राहुल गांधी ने अपने एक ताजा बयान में सेना को लेकर विवादित बयान दिया है। राहुल गांधी ने कहा कि देश की सेना 10 प्रतिशत आबादी के नियंत्रण में है। राहुल गांधी के इस बयान पर विवाद हो गया है। भाजपा ने राहुल गांधी के इस बयान को लेकर उन्हें घेर लिया है और नेता विपक्ष पर देश में ध्रुवीकरण को बढ़ावा देने का आरोप लगाया। भाजपा ने कहा कि राहुल गांधी को अपने बयान के लिए सेना से बिना शर्त माफी मांगनी चाहिए।

'राष्ट्रीय एकता को कमजोर करने की कोशिश'

भाजपा प्रवक्ता सीआर केसवन ने राहुल गांधी के बयान को लेकर कहा कि 'राहुल गांधी की टिप्पणी बांटने वाली है। वे हमारी सेना को खुलेआम राजनीति में घसीटकर, दुश्मनी और अविश्वास पैदा करना चाहते हैं। यह हमारी राष्ट्रीय एकता को कमजोर करने की एक बहुत ही खतरनाक कोशिश है। राहुल गांधी की टिप्पणी बेहद निंदनीय है और उनकी इन बातों ने सेना की इज्जत को ठेस पहुंचाई है।

राहुल गांधी एलओपी (नेता विपक्ष) हैं, लेकिन वह ध्रुवीकरण के नेता की तरह बोलते और काम करते हैं।' भाजपा ने कहा कि 'आज राहुल गांधी की दोपहर में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस है। उन्हें हमारी बहादुर सेना से बिना शर्त माफी मांगनी चाहिए। लेकिन आप राहुल गांधी और कांग्रेस पार्टी से और क्या उम्मीद कर सकते हैं, क्योंकि राहुल गांधी और कांग्रेस हमारी सेना को बेइज्जत करने के मामले में बार-बार ऐसा करते रहे हैं।'

बिहार चुनाव के पहले चरण के प्रचार का आखिरी दिन था। इस दौरान राहुल गांधी ने कुटुंबा में एक चुनावी रैली के दौरान कहा कि 'अगर आप गौर से देखें तो देश की 90 प्रतिशथ आबादी दलित, महादलित, पिछड़ी, अति-पिछड़ी और अल्पसंख्यक समुदाय की है। देश के 90 प्रतिशत लोग समाज के सबसे पिछड़े और आदिवासी तबके से आते हैं।'

राहुल गांधी ने आगे कहा कि 'अगर आप भारत की 500 बड़ी कंपनियों की सूची देखें तो आपको उनमें पिछड़े और दलित समुदाय का कोई व्यक्ति नहीं मिलेगा। वे सभी शीर्ष 10 फीसदी से आती हैं। सारी नौकरियां उन्हीं के पास जाती हैं। सशस्त्र बलों पर उनका नियंत्रण है। बाकी 90 फीसदी आबादी का कहीं भी प्रतिनिधित्व नहीं मिलेगा।'

युवक ने दान पात्र तोड़कर उड़ाए पैसे

इंदौर, 5 नवंबर (एजेंसियां)। मध्य प्रदेश के इंदौर से एक हैरान करने वाला मामला सामने आया है। मंदिर में श्रद्धालु बनकर पहुंचे एक व्यक्ति ने दान पात्र से पैसे चुरा लिए और गायब हो गया। इस घटना का वीडियो भी सोशल मीडिया पर सामने आया है। मामला सामने आने के बाद पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया है।

यह मामला इंदौर के सायाजी चौक स्थित एक शिव मंदिर का है। आरोपी व्यक्ति को पैसे चुराते हुए कैमरे में साफ देखा जा सकता है। घटना के दौरान आरोपी इस बात से अंजान था कि मंदिर में सीसीटीवी कैमरे लगे हैं। दान पात्र से पैसा चोरी होने के कुछ समय बाद जब स्थानीय निवासी मंदिर में पहुंचे, तो उनके होश उड़ गए। दान पात्र बिल्कुल खाली पड़ा था। वहीं, जब मंदिर में लगा सीसीटीवी कैमरा चेक किया गया, तो मामला सामने आ गया।

'एसआईआर' में लापरवाही भोपाल में पहली बड़ी कार्रवाई

डोर-टू-डोर सर्वे में नहीं पहुंचे बीएलओ; कलेक्टर ने बर्खास्त किया

भोपाल, 5 नवंबर (एजेंसियां)। भोपाल में वोटर लिस्ट के गहन परीक्षण यानी, स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन (एसआईआर) की शुरुआत हो गई। पहले दिन कलेक्टर से लेकर एसडीएम, तहसीलदार-नायब तहसीलदार, सुपरवाइजर और बीएलओ (बूथ लेवल ऑफिसर) डोर-टू-डोर जाकर वोटर्स को फॉर्म देने में लगे रहे। इस काम में लापरवाही बरतने पर पहली बड़ी कार्रवाई भी की गई है।

कलेक्टर कौशलेंद्र विक्रम सिंह ने एक कर्मचारी को बर्खास्त करने की कार्रवाई है। कलेक्टर सिंह ने बताया कि सहायक ग्रेड-3 प्रशांत दुबे बरकतउल्ला विश्वविद्यालय में पदस्थ हैं। उनकी ड्यूटी गोविंदपुरा विधानसभा के बूथ नंबर-150 पर लगाई गई थी। वे ड्यूटी पर नहीं पहुंचे।

इसलिए नौकरी से बर्खास्त करने की कार्रवाई की गई है। ऐसे कर्मचारियों की लिस्ट भी तैयार की जा रही है, जो इस महत्वपूर्ण कार्य में लापरवाही बरत रहे हैं। उनके विरुद्ध भी बर्खास्त करने की कार्रवाई की जाएगी।

किश्तवाड़ में सुरक्षाबलों और आतंकवादियों के बीच मुठभेड़

एक जवान हुआ घायल

जम्मू, 5 नवंबर (एजेंसियां)। कश्मीर में आतंकियों के सफाए के लिए सुरक्षाबलों की ओर से लगातार ऑपरेशन चलाए जा रहे हैं। अब बुधवार को प्रदेश के किश्तवाड़ जिले में आतंकवादियों और सुरक्षाबलों के बीच मुठभेड़ शुरू हो गई है। अधिकारियों की ओर से इस मुठभेड़ के बारे में जानकारी दी गई है। जानकारी के मुताबिक, ये मुठभेड़ तड़के किश्तवाड़ जिले के छत्रू इलाके में हुई हो रही है। सेना ने कहा है कि अभियान अभी जारी है।

भारतीय सेना के व्हाइट नाइट कोर ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर एक पोस्ट में कहा- ''आज सुबह जम्मू कश्मीर पुलिस के साथ समन्वय में शुरू किए गए एक खुफिया आधारित अभियान में व्हाइट नाइट कोर के सतर्क सैनिकों का छत्रू सामान्य क्षेत्र में आतंकवादियों से आमना-सामना हुआ। अभियान अभी जारी है।''अधिकारियों की ओर से दी गई जानकारी के अनुसार, मुठभेड़ तब शुरू हुई जब जम्मू-कश्मीर पुलिस ने भारतीय सेना की सहायता से आतंकवादियों की मौजूदगी के बारे में खुफिया जानकारी के आधार पर छत्रु इलाके में एक संयुक्त अभियान शुरू किया। समन्वित तलाशी अभियान सुबह के समय शुरू किया गया था, जिसके बाद सुरक्षा बलों पर गोलीबारी शुरू हो गई। ऑपरेशन अभी भी जारी है, सुरक्षा बल क्षेत्र में मजबूत उपस्थिति बनाए हुए हैं।

पहले चरण के चुनाव से ठीक पहले बीजेपी को झटका

विधायक ललन पासवान राजद में शामिल

पटना, 5 नवंबर (एजेंसियां)। चुनावी आपाधापी और पहले चरण के मतदान के ठीक पहले भाजपा को जोरदार झटका लगा है। बुधवार को भाजपा के पीरपैंती के वर्तमान विधायक ललन पासवान ने भाजपा छोड़कर राष्ट्रीय जनता दल की सदस्यता ग्रहण कर ली। पूर्व मुख्यमंत्री राबड़ी देवी से ललन पासवान ने आशीर्वाद भी लिया। राजद प्रवक्ता एजाज अहमद ने बताया कि नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी प्रसाद यादव ने ललन पासवान को राजद की सदस्यता रसीद के साथ प्रतीक चिह्न गमछा देकर इनका पार्टी में स्वागत किया। ललन पासवान के पार्टी में शामिल होने से राजद और सामाजिक न्याय की धारा को मजबूती मिलेगी।

तेजस्वी प्रसाद यादव ने आगे कहा कि भाजपा दलित समाज को उपेक्षा के निगाह से देखती है और दलितों, शोषितों, वंचितों के प्रति भाजपा की क्या सोच है, यह स्पष्ट रूप से दिखता है। सिर्फ राजनीतिक फायदे के लिए ही इन वर्गों को साथ रखा जाता है।

लेकिन जब भी इन वर्गों को हक और न्याय की देने की बात आती है, तो उपेक्षा के भाव से इन्हें अलग कर दिया जाता है। ललन जी की सोच हमेशा लालू जी के सामाजिक न्याय के प्रति रही है।

बच्ची को शराब पिलाकर प्रेमी से दुष्कर्म कराती रही मां, अब अदालत ने दी 180 साल की सजा

तिरुवनंतपुरम, 5 नवंबर (एजेंसियां)। केरल की एक विशेष पोक्सो अदालत ने एक महिला और उसके प्रेमी को 180 साल जेल की सजा सुनाई है। दोनों को यह सजा 12 साल की बच्ची से दुष्कर्म के आरोप में सुनाई गई है। अभियोजक ने बताया कि महिला का प्रेमी दो साल से बच्ची के साथ दुष्कर्म कर रहा था, जबकि महिला उसकी मदद कर रही थी। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, महिला शादीशुदा है और कुछ समय पहले तक वह अपने पति और बेटी के साथ तिरुवनंतपुरम में रहती थी। इसी दौरान महिला एक अन्य व्यक्ति के संपर्क में आई और दोनों के बीच विवाहोत्तर संबंध बन गए। इसके बाद महिला ने अपने पति को छोड़ दिया और वह अपने प्रेमी और 12 साल की बेटी के साथ पलक्कड़ और मल्लापुरम में साल 2019 से लेकर 2021 के बीच किराए के मकान में रही। इस दौरान महिला के प्रेमी ने बच्ची के साथ दुष्कर्म किया और कथित तौर पर बच्ची की मां ने भी दुष्कर्म में अपने प्रेमी का साथ दिया। पीड़ित बच्ची को शराब पीने के लिए मजबूर किया जाता था। अभियोजक ने बताया कि महिला और उसके प्रेमी ने बच्ची को डराया-धमकाया और दुष्कर्म की घटनाओं के बारे में किसी को भी न बताने की धमकी दी। दोनों दो साल तक बच्ची का शोषण किया।

पोक्सो विशेष अदालत के जज अशरफ एएम ने दोनों को पोक्सो कानून की विभिन्न धाराओं में दोषी ठहराया। हर धारा में दोनों को 40-40 साल की कठोर कारावास की सजा सुनाई गई। साथ ही अदालत ने दोनों पर 2 लाख रुपये का जुर्माना भी लगाया है। अदालत ने कहा कि अगर दोनों जुर्माने की रकम अदा नहीं करते हैं तो दोनों को 20 महीने की अतिरिक्त सजा काटनी होगी। सरकारी वकील ने बताया कि पोक्सो कानून के तहत किसी महिला को मिली यह सबसे कठोर सजा है।

मांड्या जिला आयुक्त ऑफिस के सामने आत्मदाह करने वाले किसान की मौत, मुआवजा न मिलने से था परेशान

मांड्या, 5 नवंबर (एजेंसियां)। कर्नाटक के मांड्या जिले में जमीन अधिग्रहण का मुआवजा न मिलने से नाराज एक किसान ने आत्मदाह कर लिया। मूदानहल्ली गांव के रहने वाले 55 वर्षीय एम। डी। मंजेगोड़ा ने मंगलवार को जिला आयुक्त कार्यालय के सामने स्थित कावेरी पार्क में पेट्रोल डालकर खुद को आग के हवाले कर दिया। स्थानीय लोगों ने तुरंत आग बुझाने की कोशिश की और उन्हें मांड्या इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज में भर्ती कराया।

गंभीर रूप से झुलसने के कारण उन्हें बेंगलुरु के विक्टोरिया अस्पताल भेजा गया, जहां बुधवार को इलाज के दौरान उनकी मौत हो गई। प्राथमिक जांच में सामने आया है कि मंजेगोड़ा कई वर्षों से अपनी जमीन के अधिग्रहण मुआवजे का इंतजार कर रहे थे, लेकिन उन्हें न तो मुआवजा मिला और न ही वैकल्पिक जमीन आवंटित की गई। मांड्या पुलिस ने बताया कि अब तक परिवार की ओर से कोई औपचारिक शिकायत दर्ज नहीं कराई गई है।

'100 रुपये का पानी, 700 रुपये की कॉफी'

मल्टीप्लेक्स की ऊंची कीमतों पर सुप्रीम कोर्ट की बड़ी टिप्पणी

नई दिल्ली, 5 नवंबर (एजेंसियां)। फिल्म देखने का शौक इन दिनों आम आदमी की जेब पर भारी पड़ता जा रहा है। टिकट के बाद पॉपकॉर्न, कोल्ड ड्रिंक और पानी जैसी साधारण चीजों के दाम भी मल्टिप्लेक्स में आसमान छू रहे हैं। सुप्रीम कोर्ट ने मल्टीप्लेक्स की मनमानी कीमतों पर कड़ी टिप्पणी की। कोर्ट ने चेतावनी दी कि अगर यही हाल रहा तो सिनेमा हॉल खाली हो जाएंगे। सुप्रीम कोर्ट की बेंच में जस्टिस विक्रम नाथ और जस्टिस संदीप मेहता शामिल थे। वे कर्नाटक सरकार के उस फैसले पर सुनवाई कर रहे थे, जिसमें फिल्म टिकट की कीमत 200 रुपये तक सीमित करने का आदेश दिया गया है। मल्टीप्लेक्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया ने इस फैसले को चुनौती दी है।

'हॉल खाली हो जाएं तो होने दीजिए'

मामले पर सुनवाई के दौरान जस्टिस नाथ ने कहा, 'पानी की बोतल के 100 रुपये और कॉफी के 700 रुपये लिए जा रहे हैं। इन कीमतों को नियंत्रित करना चाहिए। सिनेमा पहले से ही गिरावट पर है। लोगों को आने-जाने में मजा आए, इसके लिए कीमतें उचित रखिए, वरना हॉल सूने हो जाएंगे।' मल्टीप्लेक्स की तरफ से सीनियर वकील मुकुल रोहतगी ने बहस की। उन्होंने कहा, 'ताज होटल में कॉफी 1000 रुपये की मिलती है, क्या उसे भी फिक्स किया जाएगा? यह तो चॉइस की बात है। हॉल खाली हो जाएं तो होने दीजिए। यह सिर्फ मल्टीप्लेक्स के लिए है। लोग साधारण सिनेमा हॉल में जा सकते हैं। यहीं क्यों आना है?'

'साधारण हॉल अब बचे ही कहां हैं?'

मुकुल रोहतगी की दलील पर जस्टिस नाथ ने कहा, 'साधारण हॉल अब बचे ही कहां हैं? हम डिवीजन बेंच के साथ हैं, टिकट 200 रुपये ही रहना चाहिए।' यह मामला मल्टीप्लेक्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया एंड अदर बनाम कर्नाटक स्टेट फिल्म चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड अदर्स का है। मल्टीप्लेक्स मालिक कर्नाटक हाई कोर्ट के उस आदेश को चुनौती दे रहे हैं, जिसमें राज्य सरकार के 200 रुपये की टिकट सीमा को सही ठहराया गया है। कर्नाटक सरकार का मकसद फिल्मों को आम लोगों की पहुंच में लाना है, क्योंकि खर्च बढ़ता जा रहा है। हाई कोर्ट की डिवीजन बेंच ने टिकट कैप को फिलहाल रोक दिया है, लेकिन सख्त शर्तें लगाई हैं।

हाई कोर्ट ने लगाईं हैं ये सख्त शर्तें

कोर्ट ने कहा है कि मल्टीप्लेक्स को हर टिकट का ऑडिटेबल रिकॉर्ड रखना होगा, ऑनलाइन-ऑफलाइन खरीदारों को ट्रैक करना होगा और चार्टर्ड अकाउंटेंट से समय-समय पर अकाउंट वेरिफाई करवाना होगा। कोर्ट का कहना है कि अगर राज्य केस जीत जाता है तो इससे उपभोक्ताओं को रिफंड मिल पाएगा। रोहतगी ने हाई कोर्ट की शर्तों को 'अव्यवहारिक' बताते हुए कहा, 'जजों का मानना है कि टिकट काउंटर से बिकते हैं। टिकट तो बुकमायशो से बिकते हैं, उनके पास डिटेल्स होती हैं। मैं आईडी नहीं रखता।

टिकट खरीदने कौन आईडी कार्ड लेकर जाता है?' राज्य की तरफ से वकील ने बचाव किया कि ये शर्तें सिर्फ 'रिफंड की व्यवस्था' के लिए हैं। अगर कोई आज 1000 रुपये देता है और राज्य कल जीत जाता है, तो उसे 800 रुपये वापस मिलेंगे।

मद्रास हाईकोर्ट ने निजी जमीनों पर बने कब्रिस्तान को किया अवैध घोषित, 12 हफ्तों में कब्रों को हटाने का आदेश

चेन्नई, 5 नवंबर (एजेंसियां)। मद्रास हाईकोर्ट ने निजी जगहों पर बने कब्रिस्तान को लेकर बड़ा फैसला सुनाया है। कोर्ट ने ने कहा है कि लोग मृतकों को सिर्फ सरकार द्वारा अनुमोदित कब्रिस्तानों में ही दफनाया जा सकता है। अदालत ने यह आदेश चेन्नई में एक चर्च के पास स्थित एक निजी कब्रिस्तान के लिए दिया है। यह कब्रिस्तान एक रिहायशी इलाके के पास है। न्यायाधीश ने जमीन मालिक को 12 हफ़्तों के अंदर दफन किए गए शवों को हटाने के निर्देश दिए हैं। अगर मालिक ऐसा नहीं करता है, तो चेन्नई नगर निगम शवों को हटा देगा और मालिक से उसकी लागत वसूल करेगा। कोर्ट का ये आदेश एक निर्माण कंपनी द्वारा डाली गई याचिका पर सुनवाई करते हुए आया है।

कोर्ट ने जमीन मालिक का उस जमीन पर दफनाने का लाइसेंस भी रद्द कर दिया है। न्यायाधीश ने कहा कि लाइसेंस गलत तरीके से और बहुत जल्दी दिया गया था, जिससे नियमों का उल्लंघन हुआ। हालांकि, जमीन मालिक को नए लाइसेंस के लिए आवेदन करने की अनुमति है, जिसकी निगम को कानून के मुताबिक कड़ाई से जांच करनी होगी।

मदनन्थपुरम गांव में स्थित सीएसआई सेंट मैथ्यू चर्च के निजी कब्रिस्तान का मामला कोर्ट पहुंचा था। एक निर्माण कंपनी की याचिका पर सुनवाई करते हुए जस्टिस एन। माला ने ग्रेटर चेन्नई कॉर्पोरेशन (जीसीसी) की ओर से जारी दफनाने के लाइसेंस को रद्द कर दिया। अब कोर्ट ने जमीन मालिक को 12 हफ्तों का समय दिया है। अगर 12 हफ्तों तो तक शवों को दूसरी जगह नहीं दफनाया गया, तो मालिक पर कार्रवाई की जाएगी। याचिकाकर्ता कंपनी ने कोर्ट में दावा किया था कि उस इलाके में निर्माण कार्य 2021 से शुरू हो गया था, लेकिन जमीन मालिक बिना मंजूरी के लगातार दफनाने का काम कर रहा था, जबकि उस जमीन को कभी भी कब्रिस्तान के लिए आधिकारिक तौर पर नामित नहीं किया गया था।

सब्जी बेचने वाले की लगी 11 करोड़ रुपये की लॉटरी, दोस्त को देगा 1 करोड़

चंडीगढ़, 5 नवंबर (एजेंसियां)। पंजाब की एक यात्रा, एक दोस्त की थोड़ी सी मदद और किस्मत का साथ, यह कहानी है राजस्थान के एक सब्जी विक्रेता की जिसने राज्य की लॉटरी में 11 करोड़ रुपये का जैकपॉट जीता है। अमित सेहरा ने अपने एक दोस्त से पैसे उधार लेकर बठिंडा की एक दुकान से लॉटरी टिकट खरीदा और इस टिकट ने उन्हें पंजाब स्टेट लॉटरी-दिवाली बंपर 2025 का शीर्ष विजेता बना दिया। अमित सेहरा ने भावुक होते हुए कहा कि उनके पास लॉटरी पुरस्कार प्राप्त करने की औपचारिकताएं पूरी करने के लिए चंडीगढ़ जाने के लिए भी पर्याप्त पैसे नहीं हैं। जयपुर के कोटपुतली से आये और ठेले पर सब्जी बेचने वाले अमित ने कहा, ''यह भगवान का आशीर्वाद है कि उन्होंने मुझे 'छप्पर फाड़ के' दिया।'' उन्होंने कहा कि वह यह पैसा अपने दो छोटे बच्चों की पढ़ाई पर खर्च करेंगे। अमित ने यह भी बताया कि वह अपने दोस्त मुकेश को लॉटरी टिकट के वास्ते पैसे उधार देने के लिए एक करोड़ रुपये देंगे।

20 दिनों से आतंक फैलाने वाल नरभक्षी तेंदुआ ढेर

पुणे, 5 नवंबर (एजेंसियां)। महाराष्ट्र के पुणे जिले के शिरूर तालुका के पिंपरखेड और आसपास के क्षेत्रों में पिछले 20 दिनों से लोगों पर हमला कर आतंक फैलाने वाले नरभक्षी तेंदुए को आखिरकार वन विभाग की टीम ने मार गिराया। इस अभियान के बाद ग्रामीणों ने राहत की सांस ली है। 12 अक्टूबर 2025 को 6 वर्षीय शिवन्या बोंबे, 22 अक्टूबर को 70 वर्षीय भागुबाई जाधव, और 2 नवंबर को 13 वर्षीय रोहन बोंबे- इन तीनों की मौत तेंदुए के हमले में हुई थी। लगातार हो रही इन घटनाओं से पूरे इलाके में दहशत का माहौल था।

तेंदुए के हमलों के विरोध में 12 और 22 अक्टूबर को पंचतळे में बेल्हे–जेजुरी राज्य मार्ग और 3 नवंबर को मंचर में पुणे–नाशिक महामार्ग पर नागरिकों ने ठिय्या आंदोलन कर करीब 18 घंटे तक मार्ग रोके रखा था। गुस्साए लोगों ने वन विभाग की गश्ती गाड़ी और स्थानीय बेस कैंप की इमारत में आग भी लगा दी थी।

तेंदुए को मार गिराने का आदेश जारी हुआ था

स्थिति गंभीर होते देख वनसंरक्षक पुणे आशिष ठाकरे ने प्रधान मुख्य वनसंरक्षक नागपुर से अनुमति लेकर तेंदुए को पकड़ने या मार गिराने का आदेश जारी किया। इस विशेष अभियान के लिए पुणे की रेस्क्यू संस्था से डॉ। सात्विक पाठक (पशु वैद्यकीय विभाग), शार्प शूटर डॉ। प्रसाद दाभोळकर और जुबिन पोस्टवाला की नियुक्ति की गई। पथक ने कैमरा ट्रॅप, पदचिह्न निरीक्षण और थर्मल ड्रोन की मदद से खोज अभियान चलाया। रात करीब 10:30 बजे तेंदुआ घटना स्थल से लगभग 400–500 मीटर दूर दिखाई दिया। पहले उसे बेहोश करने के लिए डार्ट मारा गया, लेकिन नाकाम रहने पर तेंदुए ने हमला करने की कोशिश की, जिसके बाद शार्प शूटर ने गोली चलाकर उसे मार गिराया। प्रारंभिक जांच में यह लगभग 5 से 6 वर्ष का नर तेंदुआ बताया गया है। बाद में उसका शव ग्रामीणों को दिखाया गया और फिर माणिकडोह तेंदुआ बचाव केंद्र में पोस्टमॉर्टम के लिए भेजा गया।

सुविचार: अन्याय में सहयोग देना, अन्याय के ही समान है!

श्रीधर बाबू ने सभी चुनावी वादों को पूरा करने का संकल्प लिया

हैदराबाद, 5 नवंबर (स्वतंत्र वार्ता)। आईटी एवं उद्योग मंत्री दुदिल्ला श्रीधर बाबू ने बुधवार को दोहराया कि कांग्रेस सरकार चुनाव से पहले जनता से किए गए हर वादे को पूरा करेगी और नागरिकों से अपील की कि वे विपक्ष के "भ्रामक और चिंताजनक आख्यानों" से प्रभावित न हों। मंत्री ने मतदाताओं से कांग्रेस की निर्णायक और भारी जीत सुनिश्चित करने का आग्रह किया और कहा कि समावेशी कल्याण और विकास सरकार के एजेंडे के मूल में हैं। उन्होंने कहा, "केवल कांग्रेस ने ही समाज के सभी वर्गों के लिए लगातार काम किया है। हम यह सुनिश्चित कर रहे हैं कि सरकारी पहलों का लाभ हर घर तक पहुँचे।" बीआरएस नेतृत्व की आलोचना करते हुए, श्रीधर बाबू ने कहा कि जिन लोगों ने "नौ साल तक बेरोज़गार युवाओं की अनदेखी" की, वे अब उपचुनाव से पहले "मगरमच्छ के आँसू बहा रहे हैं"। उन्होंने कहा, "हमारी कल्याणकारी योजनाओं और विकास कार्यक्रमों ने तेलंगाना के लाखों परिवारों पर सकारात्मक प्रभाव डाला है। इस बदलाव को स्वीकार न कर पाने के कारण, बीआरएस और भाजपा के नेता झूठे प्रचार और निराधार आरोपों का सहारा ले रहे हैं।"

केटीआर की गिरफ्तारी के लिए राज्यपाल की अनुमति की आवश्यकता नहीं: भाजपा सांसद

हैदराबाद, 5 नवंबर (स्वतंत्र वार्ता)। भाजपा सांसद रघुनंदन राव ने मंगलवार को मुख्यमंत्री ए. रेवंत रेड्डी द्वारा बीआरएस नेता के.टी. रामाराव की गिरफ्तारी के लिए राज्यपाल की अनुमति लेने पर सवाल उठाया और आरोप लगाया कि कांग्रेस सरकार इस मुद्दे पर केवल राजनीति कर रही है।नामपल्ली स्थित भाजपा के प्रदेश कार्यालय में पत्रकारों को संबोधित करते हुए, रघुनंदन राव ने कहा, "किसी विधायक को गिरफ्तार करने के लिए राज्यपाल की अनुमति की क्या आवश्यकता है? क्या विधायकों को पहले गिरफ्तार नहीं किया गया है? बीआरएस शासन के दौरान रेवंत रेड्डी को स्वयं दो बार गिरफ्तार किया गया था – क्या तब केसीआर ने राज्यपाल की अनुमति ली थी?" भाजपा सांसद ने मुख्यमंत्री पर जनता को गुमराह करने का आरोप लगाया और दावा किया कि रेवंत कथित फॉर्मूला ई कार रेस घोटाले में केसीआर के परिवार के खिलाफ कार्रवाई करने के बजाय 'झूठ बोलकर समय खरीद रहे हैं'। रघुनंदन राव ने यह भी बताया कि एनडीएसए और पीसी घोष आयोग की रिपोर्ट और सीबीआई जाँच के आदेश के बावजूद, राज्य सरकार तेलंगाना उच्च न्यायालय में जवाबी हलफनामा दायर करने में विफल रही, जिसके परिणामस्वरूप केसीआर, हरीश राव और वरिष्ठ आईएएस अधिकारियों के खिलाफ जाँच पर रोक लगा दी गई। उन्होंने जुबली हिल्स उपचुनाव में कांग्रेस पर 'वोट बैंक की राजनीति' करने का आरोप लगाया और आरोप लगाया कि पार्टी एआईएमआईएम के साथ गठबंधन कर रही है। उन्होंने सवाल किया कि क्या मंत्री मोहम्मद अजहरुद्दीन को पिछड़ा वर्ग या अल्पसंख्यक कोटे के तहत यह पद दिया गया था। रघुनंदन राव ने कहा, "कांग्रेस और बीआरएस जुड़वाँ बच्चों की तरह हैं।" उन्होंने यह भी कहा कि रेवंत रेड्डी में भ्रष्टाचार और पिछड़ा वर्ग आरक्षण के मुद्दे को सुलझाने में ईमानदारी की कमी है।

सुदर्शन रेड्डी ने सरकारी सलाहकार का पदभार ग्रहण किया

हैदराबाद, 5 नवंबर (स्वतंत्र वार्ता)। कांग्रेस विधायक पी. सुदर्शन रेड्डी ने बुधवार को सचिवालय में तेलंगाना सरकार के सलाहकार के रूप में औपचारिक रूप से कार्यभार ग्रहण कर लिया। बोधन विधानसभा क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करने वाले सुदर्शन रेड्डी को हाल ही में सभी प्रमुख कल्याणकारी और विकासात्मक योजनाओं के कार्यान्वयन के लिए सलाहकार नियुक्त किया गया है, और उन्हें कैबिनेट मंत्री का दर्जा प्राप्त है। इस अवसर पर बोलते हुए, सुदर्शन रेड्डी ने कहा कि उनकी मंत्री पद पाने की तीव्र इच्छा थी, हालाँकि उन्होंने स्वीकार किया कि कुछ परिस्थितियों के कारण उन्हें यह पद नहीं मिल पाया। उन्होंने सौंपी गई ज़िम्मेदारियों को पूरी ईमानदारी से निभाने की अपनी प्रतिबद्धता दोहराई और सरकार के सलाहकार के रूप में सेवा करने का अवसर देने के लिए सोनिया गांधी और राहुल गांधी सहित अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के नेताओं का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा, "हम गाँवों की समस्याओं के समाधान के लिए प्रतिबद्ध हैं। तेलंगाना की स्थापना के बाद से प्रगति में कमी आई है। तेलंगाना के लोगों ने पिछली सरकार के दौरान अप्रभावी कार्यक्रमों का अनुभव किया है। अब कांग्रेस सरकार के सत्ता में आने के बाद, हम राशन कार्ड, उच्च गुणवत्ता वाले चावल और महिलाओं के लिए मुफ्त बस परिवहन जैसी विभिन्न सेवाएँ लागू कर रहे हैं। अब तक, राज्य सरकार ने 7,000 करोड़ रुपए आवंटित किए हैं। राज्य की वित्तीय स्थिति सर्वविदित है। हम मौजूदा पहलों को लागू करने के लिए योजनाएँ तैयार करेंगे।" इससे पहले, सुदर्शन रेड्डी ने सचिवालय स्थित अपने कार्यालय में अपने परिवार के साथ विशेष प्रार्थना की। मंत्री तुम्मला नागेश्वर राव सहित कई निर्वाचित अधिकारियों और वरिष्ठ प्रशासकों ने बधाई दी।

आईसीओआईएस एफआईजीए 2025 की मेज़बानी करेगा, नीली अर्थव्यवस्था की संभावनाओं की तलाश

हैदराबाद, 5 नवंबर (स्वतंत्र वार्ता)। भारतीय राष्ट्रीय महासागर सूचना सेवा केंद्र (आईसीओआईएस) 6 से 8 नवंबर तक हैदराबाद में भारतीय भूविज्ञान संघों के महासंघ (एफआईजीए 2025) की चौथी त्रैवार्षिक कांग्रेस की मेज़बानी करेगा। इस कार्यक्रम में प्रमुख भूवैज्ञानिक, समुद्र विज्ञानी, मत्स्य विशेषज्ञ, नीति निर्माता और अंतर्राष्ट्रीय प्रतिनिधि "नीली अर्थव्यवस्था के लिए भूविज्ञान – हिंद महासागर की क्षमता" विषय पर विचार-विमर्श करेंगे। भारत सरकार के प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार, प्रो. अजय कुमार सूद मुख्य अतिथि होंगे, जबकि पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के सचिव, डॉ. एम. रविचंद्रन विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहेंगे। एफआईजीए 2025 का उद्देश्य समुद्र विज्ञान, भूभौतिकी, जल विज्ञान और संसाधन प्रबंधन में अंतःविषय सहयोग को बढ़ावा देना है। इस सम्मेलन में मुख्य व्याख्यान, तकनीकी और पोस्टर सत्र, एक युवा वैज्ञानिक सम्मेलन और स्कूली छात्रों के लिए एक महासागर विज्ञान आउटरीच कार्यक्रम शामिल होगा। आईसीओआईएस के निदेशक डॉ. बालकृष्ण नायर ने कहा, "एफआईजीए 2025 की मेजबानी करके, आईसीओआईएस एक ऐसा मंच तैयार कर रहा है जो सतत विकास के लिए विज्ञान, प्रौद्योगिकी, नीति और व्यवहार को जोड़ता है।" यह आयोजन हिंद महासागर क्षेत्र में समुद्री भूविज्ञान, आपदा प्रतिरोधक क्षमता और सतत नीली अर्थव्यवस्था पहलों को आगे बढ़ाने के लिए आईसीओआईएस की प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है।

हैदराबाद कलेक्टर ने 'कुत्तों के साथ सुरक्षित' अभियान शुरू किया

हैदराबाद, 5 नवंबर (स्वतंत्र वार्ता)। अपनी तरह की अनूठी पहल के तहत, हैदराबाद कलेक्टर हरिचंदन दासारी ने सुरक्षित मानव-कुत्ते के आपसी संबंधों और ज़िम्मेदार पालतू पालन-पोषण को बढ़ावा देने के लिए 'कुत्तों के साथ सुरक्षित' अभियान शुरू किया। आयोजकों ने कहा, "साथ मिलकर काम करके, हम हैदराबाद को मनुष्यों और जानवरों, दोनों के लिए अधिक सुरक्षित और दयालु बना सकते हैं।" चिकित्सा स्वास्थ्य विभाग द्वारा हैदराबाद कैनाइन क्लब (एचसीसी) के सहयोग से आयोजित इस अभियान का उद्देश्य हैदराबाद को लोगों और पालतू जानवरों के बीच सह-अस्तित्व के लिए एक आदर्श शहर बनाना है। यह पहल 'कुत्तों के साथ सुरक्षित' भागीदार कार्यक्रम के तहत ज़िम्मेदार पालतू प्रतिष्ठानों की पहचान और प्रमाणन करेगी। प्रमाणित भागीदारों को तेलंगाना सरकार से आधिकारिक मान्यता मिलेगी और हैदराबाद 'कुत्तों के साथ सुरक्षित' निर्देशिका में शामिल किया जाएगा। पहला प्रशिक्षण और ऑनबोर्डिंग सत्र 'हाइकैन 2025' के दौरान होगा, जो 8 और 9 नवंबर को नरसिंगी स्थित ओम कन्वेंशन में आयोजित किया जाएगा। एचसीसी सचिव फिलिप बट ने कहा, "कुत्तों के साथ सुरक्षा सिर्फ़ पालतू जानवरों के बारे में नहीं है – यह लोगों के बारे में भी है।" उन्होंने आगे कहा कि इस प्रयास से सार्वजनिक स्थानों पर भय और संघर्ष को कम करने में मदद मिलेगी। इस शुभारंभ समारोह में जिला चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. वेंकट और हैदराबाद कैनाइन क्लब की प्रबंध समिति के सदस्य शामिल हुए।

केटीआर ने रेवंत को सार्वजनिक बहस की चुनौती दी

कांग्रेस के दो साल के शासन की आलोचना की

हैदराबाद, 5 नवंबर (स्वतंत्र वार्ता)। भारत राष्ट्र समिति (बीआरएस) के कार्यकारी अध्यक्ष के.टी. रामाराव (केटीआर) ने बुधवार को मुख्यमंत्री ए. रेवंत रेड्डी को हैदराबाद के विकास पर सार्वजनिक बहस में उनका सामना करने की चुनौती दी और कांग्रेस सरकार पर अपने दो साल के शासन के दौरान शहर को विफल करने का आरोप लगाया। जुबली हिल्स प्रगति रिपोर्ट विमोचन समारोह में बोलते हुए, केटीआर ने कहा कि बीआरएस किसी भी भाषा में और किसी भी स्थान पर इस बात पर चर्चा करने के लिए तैयार है कि पार्टी ने अपने दस साल के शासन के दौरान हैदराबाद के लिए क्या हासिल किया और कांग्रेस ने पिछले दो वर्षों में क्या किया है। केटीआर ने कहा, "अगर रेवंत रेड्डी में हिम्मत है, तो उन्हें तारीख, समय और स्थान तय करना चाहिए। चाहे वह कमांड कंट्रोल हो, गांधी भवन हो या विधानसभा – हम तैयार हैं।" उन्होंने मुख्यमंत्री को आगे आने और "जनता को यह तय करने देने की चुनौती दी कि किसका रिकॉर्ड असली है।" केटीआर ने बीआरएस के शासनकाल की कई नागरिक उपलब्धियों का ज़िक्र किया और उनकी तुलना कांग्रेस की निष्क्रियता से की। उन्होंने 42 फ़्लाईओवर और कई अंडरपास के निर्माण, स्वच्छ हैदराबाद और एसएनडीपी जैसी पहलों के तहत स्वच्छता में सुधार, एक सतत ठोस-कचरा संग्रहण प्रणाली, जिसकी क्षमता उन्होंने प्रतिदिन 7.5 मीट्रिक टन बताई, और बड़ी संख्या में दो बेडरूम वाले घरों के निर्माण का ज़िक्र किया। उन्होंने वर्तमान सरकार पर कई परियोजनाओं को रोकने या रद्द करने का आरोप लगाया, जिससे शहर में गड्ढे, पानी के टैंकरों पर निर्भरता और बढ़ती अपराध दर को बढ़ावा मिला। बुनियादी ढांचे के मुद्दे पर, केटीआर ने कांग्रेस को चुनौती दी कि वह पिछले दो वर्षों में पूरी हुई एक भी नई सड़क, एलईडी लाइटिंग, नर्सरी या मेट्रो विस्तार का ज़िक्र करे। सांप्रदायिक और राजनीतिक बयानबाजी पर, केटीआर ने कांग्रेस और भाजपा पर तेलंगाना में एक सिद्धांतहीन गठबंधन बनाने का आरोप लगाया और कुछ नेताओं की उन टिप्पणियों की आलोचना की, जो अल्पसंख्यकों का अपमान करती हैं। उन्होंने मांग की कि रेवंत रेड्डी उन बयानों के लिए माफ़ी मांगें जिनसे विशेष समुदायों का अपमान हुआ हो; केटीआर ने चेतावनी दी कि अगर ऐसा नहीं हुआ, तो जनता मतपेटी में नतीजों का फैसला करेगी। बीआरएस के कार्यकारी अध्यक्ष ने जुबली हिल्स के मतदाताओं से बयानबाज़ी से नहीं, बल्कि रिकॉर्ड पर गौर करने का आग्रह किया। उन्होंने कहा, "हम दिखाएंगे कि हमने क्या किया और फिर वोट मांगेंगे। अगर कांग्रेस ने दो साल में कुछ ठोस किया है, तो उन्हें जनता के सामने इसका स्पष्टीकरण देना चाहिए। अगर वे ऐसा नहीं कर सकते, तो जनता 11 नवंबर को अपना फैसला सुनाएगी।"

शब्बीर अली ने बीआरएस पर विश्वासघात का आरोप लगाया

कांग्रेस ने अल्पसंख्यक कल्याण को पुनर्जीवित किया

हैदराबाद, 5 नवंबर (स्वतंत्र वार्ता)। वरिष्ठ कांग्रेस नेता और सरकार के सलाहकार मोहम्मद अली शब्बीर ने बुधवार को भारत राष्ट्र समिति (बीआरएस) पर मुसलमानों को धोखा देने और अल्पसंख्यक कल्याण पर झूठे प्रचार से उन्हें गुमराह करने का आरोप लगाया। गांधी भवन में अल्पसंख्यक कल्याण मंत्री मोहम्मद अजहरुद्दीन और अन्य नेताओं के साथ एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए, शब्बीर अली ने कहा कि 10 साल की उपेक्षा के बाद बीआरएस को मुसलमानों के कल्याण के बारे में बात करने का 'कोई नैतिक अधिकार' नहीं है। पूर्व मुख्यमंत्री के. चंद्रशेखर राव ने 2014 में 12% मुस्लिम आरक्षण का वादा किया था, लेकिन इसे पूरा नहीं किया और सुप्रीम कोर्ट में 4% आरक्षण के मामले को भी नज़रअंदाज़ कर दिया। उन्होंने कहा कि कोई भी सरकारी वकील पेश नहीं हुआ, लेकिन कांग्रेस ने इसका बचाव किया। इसके अलावा, शब्बीर अली ने आरोप लगाया कि केसीआर ने मुस्लिम और दलित नेताओं को निशाना बनाया, उर्दू स्कूलों को बंद कर दिया और 80% से ज़्यादा अल्पसंख्यक कॉलेजों को बंद होने दिया। उन्होंने कहा, "विश्वविद्यालयों या आयोगों में एक भी मुसलमान प्रमुख पद पर नहीं है।" उन्होंने आरोप लगाया कि बीआरएस वक्फ की ज़मीनों को बहाल करने में विफल रही और 2017 में वक्फ रिकॉर्ड अनुभाग को भी सील कर दिया।

एक जाति सर्वेक्षण का हवाला देते हुए, जिसमें मुसलमानों की आबादी 12.58% बताई गई है, वरिष्ठ कांग्रेस नेता ने कहा कि यह आँकड़े आरक्षण की रक्षा और विस्तार में मदद करेंगे। मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी की इस टिप्पणी का ज़िक्र करते हुए कि 'मुसलमान और कांग्रेस एक हैं', उन्होंने दावा किया कि यह तुष्टिकरण नहीं, बल्कि समावेशिता को दर्शाता है। उन्होंने जुबली हिल्स के मतदाताओं से कांग्रेस उम्मीदवार नवीन यादव का समर्थन करने की अपील की और धर्मनिरपेक्षता और समानता के प्रति पार्टी की प्रतिबद्धता पर जोर दिया।

इस्तेहार हर खास व आम
न्यायलय जिला न्यायधीश, झुन्झुनू (राज.)

पीठासीन अधिकारी श्रीमती दीपा गुर्जर, (जिला न्यायधीश संवर्ग/आर.जे.एस.), झुन्झुनू सिविल विधिक प्रकरण (उतराधिकार) संख्या – 52/2025

मातादीन जांगिड़ उम्र 58 वर्ष पुत्र श्री मातादीन धुकलराम जांगिड़, निवासी ग्राम धमोरा, तहसील गुढागौडजी, जिला झुन्झुनू (राज.) हाल निवासी 14-1-397/1/ए, सीतारामपेट, अगाहपुरा, नामपल्ली, जी.पी.ओ. हैदराबाद।

– आवेदक

बनाम

1. हर आम व खास
2. अरुण कुमार जांगिड़ पुत्र श्री मातादीन जांगिड़, उम्र व्यसक , निवासी ग्राम धमोरा, तहसील गुढागौड़जी, जिला झुन्झुनू (राज.) हाल निवासी 14-1-397/1/ए, सीतारामपेट, अक्षाहपुरा, नामपल्ली, जी.पी.ओ. हैदराबाद।
3. राकेश जांगिड़ पुत्र श्री मातादीन जांगिड़, उम्र व्यस्क, निवासी 14-1-397/1/ए, सीतारामपेट, अक्षाहपुरा, नामपल्ली, जी.पी.ओ. हैदराबाद ।
4. रेशमा जांगिड़ पुत्री श्री मातादीन जांगिड़ पत्नी अजय शर्मा, उम्र व्यस्क, निवासी ग्राम धमोरा हाल निवासी मकान नं. 259, वार्ड नं 13, गांधी चौराहा, मंदसौर, मध्यप्रदेश।
5. लक्ष्मी जांगिड़ पुत्री श्री मातादीन जांगिड़ पत्नी अभिषेक शर्मा, उम्र व्यस्क, निवासी ग्राम धमोरा हाल निवासी बस स्टैण्ड, वार्ड नं 10, गोपाल नगर,मालपुरा, टौंक(राज.)
6. कैनरा बैंक शाखा उदयपुरवाटी, जिला झुन्झुनू (राज.) जरिये शाखा प्रबन्धक

– अनावेदकगण

आवेदन पत्र अन्तर्गत धारा 372 भारतीय उतराधिकार अधिनियम सार्वजनिक सूचना

उपरोक्त आवेदक ने इस न्यायलय में एक प्रार्थना पत्र अन्तर्गत धारा 372 भारतीय उत्तराधिकार अधिनियम 1925 के अधीन प्रस्तुत कर निवेदन किया है आवेदक की पत्नी व अनावेदक सं. 2 लगायत 5 की माता नानू देवी जांगिड़ की दिनांक 03.03.2025 को मृत्यु हो चुकी है। आवेदक व अनावेदक सं 2 लगायत 5 के अलावा मृतका नानू देवी जांगिड़ के अन्य कोई वैध वारिसान नही है। आवेदक द्वारा मृतका नानू देवी जांगिड़ के नाम से कैनरा बैंक शाखा उदयपुरवाटी, जिला झुन्झुनू के बचत खाता सं. 30112010105560 में जमा राशि 2,57,504.31/- रुपये मय ब्याज प्राप्त करने हेतु उत्तराधिकार प्रमाण पत्र जारी किये जाने हेतु आवेदन किया गया है जो उक्त राशि को प्राप्त करने के लिये उपरोक्त आवेदक के पक्ष मे उत्तराधिकार प्रमाण पत्र जारी किये जाने में किसी को किसी प्रकार की आपति या ऐतराज हो तो स्वंय अथवा अपने अधिवक्ता के माध्यम से इस न्यायलय में दिनांक 29/11/25 को उपस्थित होकर प्रस्तुत करें। अन्यथा आवेदक के पक्ष में उत्तराधिकार प्रमाण पत्र जारी कर दिया जावेगा और एतराज समाहत नही किया जायेगा। आज दिनांक 28/10/25 को मेरे हस्ताक्षर व मोहर कार्यालय से जारी किया गया है।

मोहर
न्यायलय के आदेश से मुंसरिम,
जिला एवं सत्र न्यायलय झुन्झुनू

हत्या का आरोपी पुलिस हिरासत से फरार

पिट्टागुड़ा गांव में 1 नवम्बर को हुई हत्या के मामले में पकड़ा

कुमराम भीम आसिफाबाद, 5 नवम्बर (स्वतंत्र वार्ता)। हत्या के एक मामले में गिरफ्तार आरोपी मंगलवार रात रेबेना पुलिस स्टेशन से फरार हो गया, जिससे आसपास के गांवों में दहशत फैल गई। आरोपी की पहचान सिदाम विनोद के रूप में हुई है, जिसे तिरयानी मंडल के मंगी ग्राम पंचायत के पिट्टागुड़ा गांव में 1 नवम्बर को हुई हत्या के मामले में पकड़ा गया था।

उस पर 50 वर्षीय हनुमंत राव की गला रेतकर हत्या करने का आरोप है। बताया जाता है कि राव पर जादू-टोना करने का शक होने के कारण यह वारदात हुई थी।

पुलिस के अनुसार, पूछताछ के दौरान जब विनोद को रात का खाना खाने की अनुमति दी गई, तो वह मौके का फायदा उठाकर थाने से भाग निकला। पुलिस अधीक्षक कांतिलाल पाटिल ने बताया कि आरोपी की तलाश के लिए विशेष टीमें गठित की गई हैं। आरोपी के फरार होने के बाद ग्रामीणों ने अपनी सुरक्षा को लेकर चिंता जताई है।

उनका कहना है कि विनोद उन पर हमला कर सकता है क्योंकि उसे कई लोगों पर शक था। पुलिस ने पिट्टागुड़ा और आसपास के इलाकों में सुरक्षा बढ़ा दी है और आरोपी को जल्द पकड़ने का आश्वासन दिया है।

पीडीएस चावल के अवैध भंडारण का खुलासा , एक गिरफ्तार

हैदराबाद, 5 नवंबर (स्वतंत्र वार्ता)। डीसीपी मध्य क्षेत्र की टीम ने खैरताबाद स्थानीय पुलिस के सहयोग से एक विशेष अभियान चलाया।

इस अभियान के दौरान, मोहम्मद अज़ार निवासी बीजेआर नगर, खैरताबाद को दोपहिया वाहन पर अवैध पीडीएस चावल ले जाते हुए पकड़ा गया। आरोपी ने उक्त चावल सार्वजनिक वितरण प्रणाली (पीडीएस) लाभार्थियों से खरीदा था और उसे अपने सहयोगी अब्दुल रहमान के बीजेआर नगर, खैरताबाद स्थित आवास पर ले जा रहा था। अब्दुल रहमान के घर पहुँचकर, जब वे चावल को गाड़ी से परिसर में ले जा रहे थे, तभी डीसीपी सेंट्रल ज़ोन की टीम ने खैरताबाद पुलिस के साथ मिलकर विश्वसनीय सूचना पर कार्रवाई करते हुए उसे गिरफ्तार कर लिया। जाँच करने पर पता चला कि अब्दुल रहमान के घर के अंदर लगभग 1000 किलोग्राम (10 क्विंटल) अवैध पीडीएस चावल से भरे 27 प्लास्टिक बैग रखे हुए थे। इसके बाद, आगे की जाँच के लिए मामला दर्ज किया गया।

सड़क हादसे में चार की मौत

एक घायल की हालत नाजुक

संगारेड्डी, 5 नवम्बर (स्वतंत्र वार्ता)। कर्नाटक के गंगापुर स्थित दत्तात्रेय मंदिर से लौट रहे नारायणखेड़ मंडल के जगन्नाथपुर गांव के पांच तीर्थयात्रियों में से एक और की बुधवार तड़के हुमनाबाद के निकट सड़क दुर्घटना में मौत हो गई, जिससे मृतकों की संख्या चार हो गई है।

तीन श्रद्धालु नवीन (22), राजप्पा (45) और नागराजू (48) की मौके पर ही मौत हो गई थी, जबकि चौथे तीर्थयात्री काशीनाथ ने अस्पताल में दम तोड़ दिया। पांचवां यात्री प्रताप बीदर के एक अस्पताल में गंभीर हालत में भर्ती है। पुलिस के अनुसार, सभी श्रद्धालु कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर पूजा करने के लिए नारायणखेड़ से कार द्वारा गंगापुर गए थे। लौटते समय उनकी गाड़ी सामने से आ रही कार से टकरा गई। घायलों को बीदर के सरकारी अस्पताल में भर्ती कराया गया है और मृतकों के शवों को पोस्टमॉर्टम के लिए स्थानीय सरकारी अस्पताल भेजा गया। हादसे की खबर मिलते ही नारायणखेड़ से मृतकों के परिजन और मित्र बीदर के लिए रवाना हो गए।

नाचाराम में पेंटर का अपहरण, यौन उत्पीड़न और हत्या

चार युवकों को पुलिस ने किया गिरफ्तार, पीड़ित ने मरने से पहले दी थी गवाही

हैदराबाद, 5 नवम्बर (स्वतंत्र वार्ता)। हैदराबाद के नाचाराम क्षेत्र में सोमवार को एक दर्दनाक वारदात में चार युवकों ने 45 वर्षीय पेंटर का अपहरण कर उसका यौन उत्पीड़न किया और बेरहमी से हत्या कर दी। पुलिस के अनुसार, उप्पल के कल्याणपुरी निवासी पीड़ित रविवार रात सरूरनगर के जिल्लेलागुडा में अपने भाई के घर गया था। लौटते समय एलबी नगर के पास उसने कार में यात्रा कर रहे युवकों से लिफ्ट मांगी थी। आरोपियों की पहचान राघवेंद्र नगर के मोहम्मद जुनैद उर्फ जाफर (18), इंदिरानगर के शेख सैफुद्दीन (18), कार्तिकेय नगर के पी. मणिकांत (21) और मल्लापुर के केएल रेड्डी नगर के एक नाबालिग के रूप में हुई है। पुलिस के अनुसार, ये सभी युवक उस समय नशे में थे। कार में बैठाने के बाद उन्होंने पीड़ित के साथ मारपीट की और उसका यौन उत्पीड़न किया। एनजीआरआई इलाके के पास जब कार धीमी हुई, तो पीड़ित ने भागने की कोशिश की, लेकिन हमलावरों ने उसे पकड़ लिया।

इसके बाद आरोपी उसे नाचाराम के एक सुनसान औद्योगिक इलाके में ले गए, जहाँ उन्होंने उस पर चाकू से कई वार किए और घायल अवस्था में छोड़कर भाग निकले। पीड़ित कुछ दूर तक भागने में सफल हुआ, लेकिन सड़क पर गिर पड़ा। स्थानीय लोगों ने सुबह करीब 5:30 बजे उसे देखा और पुलिस को सूचना दी। घायल अवस्था में अस्पताल ले जाए जाने पर उसने पुलिस को बताया कि उसका अपहरण और यौन उत्पीड़न किया गया था। उसी दौरान उसकी मौत हो गई। पीड़ित के मृत्यु पूर्व बयान और सीसीटीवी फुटेज के आधार पर नचारम पुलिस ने मामला दर्ज कर सभी आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस आगे की जांच कर रही है।

भीषण बस हादसा, गुजरात के तीर्थयात्री घायल; अयोध्या से जा रहे थे काशी

सुलतानपुर, 5 नवंबर (एजेंसियां)। कोतवाली देहात के सुलतानपुर दोमुहा मार्ग पर अयोध्या से काशी जा रही यात्रियों की बस ट्रक से टकरा गयी, जिसमें दो दर्जन यात्री घायल हो गये है। सभी को भदैंया सीएचसी पर भर्ती कराया गया है। भदैया के सुलतानपुर दोमुहा मार्ग पर बुधवार की आठ बजे सुबह अयोध्या से बनारस जा रही तीर्थ यात्रियों की बस ट्रक से टकरा गयी है जिसमें करीब दो दर्जन यात्री चोटिल हो गये हैं। सभी घायलों को सीएचसी भदैंया मे इलाज किया जा रहा है। पुलिस मामले की जांच पड़ताल में जुटी हुई है। गुजरात के वापी और बलसाड क्षेत्र के यात्रियों की दो बसे अयोध्या बनारस दर्शन को आई थीं।

दोनों बसें लोहरामऊ ओवरब्रिज बंद होने से डायवर्जन रूट से जैसे ही आगे बढी सोनबरसा के पास पीछे से बस ने ट्रक मे टक्कर मार दी जिसमें वापी व बलसाड क्षेत्र के एक बस के दो दर्जन यात्री घायल हो गए। सभी घायल वापी के हिसारिया और बलसाड के पटेल नगर और सुभानकटि के निवासी बताए जा रहे हैं। सूचना पर पहुंची पुलिस ने सभी घायलों को सीएचसी भदैया मे भर्ती कराया है।

अबकी बार 160 पार

क्या अपने पीक को भी पार कर जाएगा एनडीए?

पटना, 5 नवंबर (एजेंसियां)। बिहार विधानसभा में एनडीए 160 से ज्यादा सीटें जीतने का दावा कर रहाहै। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने एक इंटरव्यू में कहा कि 14 नवंबर को जब चुनाव नतीजे आएंगे तो एनडीए 160 से ज्यादा सीटों पर जीत हासिल करेगा। उन्होंने कहा कि हमारे गठबंधन की सभी पार्टियां का स्ट्राइक रेट अच्छा रहेगा। इस दावे के बाद सवाल उठ रहा है कि क्या एनडीए बिहार में अपने पीक को भी पार कर लेगा।

नीतीश कुमार 20 साल से बिहार की सत्ता पर काबिज हैं। ज्यादातर वह एनडीए के साथ ही रहे हैं। 2015 का चुनाव छोड़ दें तो बाकी सभी चुनाव वह बीजेपी के साथ मिलकर लड़े हैं। यही वो चुनाव था जिसमें नीतीश के साथ न रहने का एनडीए को नुकसान हुआ था। इस चुनाव में बीजेपी के नेतृत्व वाले इस गठबंधन को महज 58 सीटों पर जीत मिली थी।

2015 में आरजेडी बनी थी सबसे बड़ी पार्टी

2015 के विधानसभा चुनाव में जेडीयू, आरजेडी साथ लड़ी थीं। इनके साथ कांग्रेस भी थी। नीतीश के नेतृत्व में ये चुनाव लड़ा गया था। आरजेडी और जेडीयू 101 सीट और कांग्रेस 42 सीटों पर लड़ी थी। एनडीए में बीजेपी, एलजेपी, राष्ट्रीय लोक समता पार्टी, हम थी। बीजेपी 157 सीटों पर चुनाव लड़ी थी। चुनाव नतीजों में आरजेडी सबसे बड़ी पार्टी बनी थी। उसने 80 सीटों पर जीत हासिल की थी। जेडीयू को 71 सीटों पर जीत मिली थी। जबकि कांग्रेस ने 27 सीटों पर जीत दर्ज की थी। एनडीए में बीजेपी 53, एलजेपी 2, आरएलएसपी 2 और हम सिर्फ 1 सीट जीत पाई थी। ये वो चुनाव था जिसे एनडीए नहीं याद रखना चाहेगा।

2010 में आया था एनडीए का पीक

बिहार में एनडीए का पीक 2010 में आया था। गठबंधन के लिए ये चुनाव यादगार रहा था। 206 सीटों पर उसने जीत दर्ज की थी। जेडीयू 141 और बीजेपी 102 सीटों पर लड़ी थी। वहीं विपक्षी गठबंधन में आरजेडी 168 और एलजेपी 75 सीटों पर लड़ी थी। कांग्रेस सभी 243 सीटों पर अपने उम्मीदवार उतारी थी। इस चुनाव में एनडीए के खाते में 206 सीटें आई थीं। अकेले जेडीयू 115 सीट जीती थी। बीजेपी को 91 सीटों पर जीत मिली थी। विपक्ष में आरजेडी को 22, एलजेपी को 3 और कांग्रेस को 4 सीट पर जीत मिली थी।

2005 में क्या थे नतीजे

ये वो साल था जब बिहार में सत्ता बदली थी। लालू राज का अंत हुआ था। नीतीश कुमार सत्ता में आए थे। एनडीए की सरकार बनी थी। इस इलेक्शन में जेडीयू 139 और बीजेपी 102 सीटों पर अपने उम्मीदवार उतारी थी। नीतीश की पार्टी 88 और बीजेपी 55 सीटों पर जीत दर्ज की थी। आरजेडी को 54 सीटों पर जीत मिली थी। कांग्रेस के सिर्फ उम्मीदवार ही जीत पाए थे।

2020 में बीजेपी बनी सबसे बड़ी पार्टी

वहीं, 2020 के चुनाव में नीतीश कुमार की जेडीयू 115 और बीजेपी 110 सीटों पर अपने उम्मीदवार उतारी थी। इसमें बीजेपी 74 और जेडीयू 43 सीटों पर जीती थी। गठबंधन की अन्य पार्टियां हम 4 और वीआईपी 4 सीटें जीत पाई थीं।

पहले चरण के मतदान से पहले प्रशांत किशोर को जोर का झटका

जन सुराज प्रत्याशी भाजपा के साथ आए

मुंगेर, 5 नवंबर (एजेंसियां)। बिहार विधानसभा चुनाव से ठीक एक दिन पहले मुंगेर विधानसभा क्षेत्र में बड़ा राजनीतिक उलटफेर देखने को मिला है। जन सुराज पार्टी के प्रत्याशी संजय कुमार सिंह ने बुधवार को भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) का दामन थाम लिया। संजय कुमार सिंह ने एनडीए प्रत्याशी कुमार प्रणय की मौजूदगी में भाजपा की सदस्यता ग्रहण की। उनके इस कदम से मुंगेर के चुनावी समीकरणों में बड़ा बदलाव होने की संभावना जताई जा रही है। सूत्रों के अनुसार, संजय सिंह ने भाजपा प्रत्याशी कुमार प्रणय के समर्थन में सक्रिय रूप से काम करने का भी ऐलान किया है। भाजपा प्रत्याशी कुमार प्रणय ने संजय कुमार सिंह का पार्टी में स्वागत करते हुए कहा कि "उनके शामिल होने से भाजपा का संगठन और मजबूत होगा, और मुंगेर में एनडीए की जीत तय है।" वहीं, राजनीतिक गलियारों में इस घटनाक्रम को लेकर चर्चाओं का बाजार गर्म है। मतदान से ठीक पहले हुए इस फेरबदल को भाजपा के लिए "बड़ा चुनावी फायदा" माना जा रहा है।

चेतना झांब पर आचार संहिता उल्लंघन का मामला

समस्तीपुर, 5 नवंबर (एजेंसियां)। समस्तीपुर विधानसभा क्षेत्र से निर्दलीय चुनाव लड़ रहीं चेतना झांब पर चार संहिता उल्लंघन का मामला दर्ज किया गया है। यह मामला सीओ सलोनी करण के बयान पर दर्ज कराई गई है। जांच रिपोर्ट के आधार पर कार्रवाई की गई है। सीओ की ओर से दर्ज कराई गई प्राथमिकी के अनुसार निर्दलीय प्रत्याशी चेतना झांब अपने समर्थकों के साथ दो नवंबर की दोपहर नगर निगम क्षेत्र में बिना अनुमति के जुलूस-रैली का आयोजन किया। शिकायत मिलने के बाद जांच की गई। जिसमें पाया गया कि इसके लिए कोई अनुमति नहीं ली गई थी।

अपने समर्थकों के साथ शहरी इलाकों में जुलूस निकाला जो आदर्श आचार संहिता का उलंघन है। जांच रिपोर्ट में कई गवाहों के नाम भी शामिल किए गए हैं। जन सुराज से नहीं मिला था टिकट पटना में तामझाम के साथ जन सुराज का दामन थामने वाली फिल्म प्रोड्यूसर चेतना झांब को समस्तीपुर से जन सुराज का टिकट नहीं मिला था। जिससे नाराज होकर निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में नामांकन दाखिल किया। समर्थकों के बैठक के बाद चुनाव लड़ने का फैसला लिया था। चेतना झांब ने कहा था कि मैं यहां की बेटी हूं।

समस्तीपुर में विकास करने के लिए आई थी। प्रशांत किशोर ने भरोसा दिलाया था, इसके बाद से लगातार क्षेत्र में काम कर रही थी। अचानक ही दूसरे दल से आए उम्मीदवार को टिकट दे दिया गया। जिससे उनके दिल पर बड़ा ठेस लगा है। समर्थकों ने उन्हें चुनाव लड़ने के लिए प्रोत्साहित किया है। दूसरी और रोसड़ा विधानसभा क्षेत्र में निर्धारित समय से काफी विलंब से प्रशांत किशोर की रोड शुरू करने और निश्चित रूट के बदले दूसरे रूट में प्रवेश करने को लेकर प्राथमिकी दर्ज की गई है। पूरे मामले की पहले जांच की गई, फिर जांच रिपोर्ट के आधार पर रोसरा थाने में प्राथमिकी दर्ज कराई गई है।

वायरल वीडियो पर एफआईआर के बाद ललन सिंह ने दी सफाई

आरजेडी पर लगाए गंभीर आरोप

पटना, 5 नवंबर (एजेंसियां)। केंद्रीय मंत्री और जेडीयू अध्यक्ष राजीव रंजन उर्फ ललन सिंह ने बुधवार को अपने ऊपर एफआईआर पर पहली प्रतिक्रिया दी है। ललन सिंह ने कहा कि चुनाव आयोग निष्पक्ष है। वीडियो को आधा दिखाया गया है। पूरा वीडियो देखा जाए। एफआईआर हुआ है तो पूरा वीडियो देखा जाएगा।

ललन सिंह ने कहा कि आरजेडी ने भ्रामक वीडियो पोस्ट किया है। जिस गांव में वीडियो बनाया गया, वहां एक राजद नेता गरीबों को धमकाते हैं। 15 से 27 वार्ड तक जो गरीब रहते हैं उनको डराया धमकाया जा रहा है। कहा जा रहा है कि वोट देंगे तो 6 इंच छोटा कर देंगे। उन्हीं मतदाताओं को मैं उत्साहित कर रहा था।

उसका कुछ पार्ट निकालकर आप वायरल करिए और प्रिंट करके भ्रम फैलाइये। यही धंधा आपका (आरजेडी) रहा है। आरजेडी के लोग इसी तरह का काम करते रहे हैं। आज भी हम कह रहे हैं कि उस पूरे वीडियो को सुनाया जाए आरजेडी पर हमला ललन सिंह ने आरजेडी पर हमला करते हुए कहा कि पंडारक की घटना पर ट्वीट करें और क्षमा मांगे। लोगों को बूथ पर न जाने के लिए डराया जाता है, इसलिए मैंने कहा था कि अगर नेता गरीबों को धमकाते और डराते हैं, तो गांव के लोगों को उन्हें घर में बंद कर देना चाहिए। पूरा मामला आरजेडी ने एक्स में वीडियो पोस्ट करते हुए लिखा था कि केंद्रीय मंत्री ललन सिंह चुनाव आयोग की छाती पर बुलडोज़र चढ़ाते हुए कह रहे कि गरीबों को वोटिंग के दिन घर से निकलने नहीं देना है।

वायरल वीडियो पर चुनाव आयोग ने संज्ञान लेते हुए ललन सिंह से 24 घंटे के अंदर जवाब मांगा था और फिर उनपर एफआईआर दर्ज किया गया था। ललन सिंह का विवादित बयान वायरल वीडियो में ललन सिंह चुनाव प्रचार के दौरान कहते दिख रहे हैं कि एक आध नेता हैं, चुनाव के दिन उनको घर से निकलने मत देना। उनको घर में ही बंद कर दो और अगर बहुत ज्यादा हाथ-पैर जोड़े तो कहिएगा कि हमारे साथ चलो और अपना मत दो। आज से आपलोग कमान संभाल लीजिए।

जदयू नेता के बड़े भाई और पत्नी-बेटी की घर में मिली लाश

पप्पू यादव ने की जांच की मांग

पटना, 5 नवंबर (एजेंसियां)। बिहार के पूर्णिया जिले में एक जदयू नेता के बड़े भाई, उनकी पत्नी और बेटी अपने घर में मृत पाए गए। पुलिस ने बुधवार को यह जानकारी दी। एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि शव रात केहाट थाना क्षेत्र के यूरोपियन कॉलोनी स्थित उनके घर से बरामद किए गए। पूर्णिया सदर अनुमंडल पुलिस अधिकारी (एसडीपीओ) ज्योति शंकर ने बताया कि मृतकों की पहचान नवीन कुशवाहा, उनकी पत्नी माला देवी और बेटी तनु प्रिया के रूप में हुई है। उन्होंने बताया कि स्थानीय लोगों के अनुसार, मृतकों में से एक स्थानीय जदयू नेता निरंजन कुशवाहा के बड़े भाई थे। एसडीपीओ ने कहा, घर में शव मिलने की सूचना मिलते ही पुलिस की एक टीम मौके पर पहुंच गई। मौत के सही कारणों का पता लगाने के लिए शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। उन्होंने बताया कि फोरेंसिक विशेषज्ञ घटनास्थल से साक्ष्य एकत्र कर रहे हैं और मामले की जांच जारी है।

एक अन्य अधिकारी ने कहा, स्थानीय लोगों का दावा है कि नवीन कुशवाहा इलाके में बहुत लोकप्रिय थे और उन्होंने पहले लोकसभा और विधानसभा चुनाव भी लड़े थे। मामले पर पूर्णिया सांसद पप्पू यादव का कहना है कि मुझे लगता है कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट से पता चलेगा कि असल में क्या हुआ था। मैं चाहता हूं कि ज़िला प्रशासन पूरी जाँच करे और पता लगाए कि क्या हुआ था। प्रथम दृष्टया, मैं इसे स्वाभाविक मौत नहीं कहूंगा। यह एक संदिग्ध मामला है

'तेजस्वी यादव राघोपुर से हार रहे हैं'

नित्यानंद राय का दावा, बोले- ये नायक नहीं... खलनायक

पटना, 5 नवंबर (एजेंसियां)। बिहार विधानसभा चुनाव (2025) के पहले चरण का मतदान 6 नवंबर को होना है। इससे पहले रैलियों और सभाओं के साथ-साथ जमकर बयानबाजी भी हो रही है। इस बीच केंद्रीय गृह राज्य मंत्री नित्यानंद राय ने तेजस्वी यादव को लेकर दावा किया है कि वे राघोपुर सीट से चुनाव हार रहे हैं।

तेजस्वी यादव को नायक नहीं खलनायक करार दिया। नित्यानंद राय ने कहा, छह नवंबर को प्रथम चरण और 11 नवंबर को होने वाले दूसरे चरण के मतदान में उनका सूपड़ा साफ हो जाएगा। 2020 में भी तेजस्वी यादव ने सपना देखा था, वह दिन था 7 नवंबर 2020 से 10 नवंबर 2020 का, सपना उनका पूरा नहीं हुआ। उस दो दिन में ही आरजेडी के लठैतों के द्वारा... उनके गुंडों के द्वारा जो तांडव हुआ था, बिहार कांप उठा था। तो वह दो दिन का तांडव भी तेजस्वी यादव को बड़ा महंगा पड़ने वाला है, मुख्यमंत्री कहां से बनेंगे? राघोपुर से हार रहे हैं।

बीजेपी नेता ने कहा कि तेजस्वी यादव ने अपना जनाधार खो दिया है तो मुख्यमंत्री बनने का सवाल ही नहीं है। जहां तक नायक बनने की बात है तो तेजस्वी यादव बिहार के नायक नहीं खलनायक हैं। घोटाला, भ्रष्टाचार, भय पैदा करना, अपराधियों को संरक्षण देना, नरसंहार करवाना, बलात्कारियों को संरक्षण देना, फिरौती के लिए अपने गुंडों के द्वारा अपहरण करवाना, तो ऐसे लोग को नायक अपने मुंह से लालू यादव कह लें तो देखिए उन पर बिहार के लोग कितना हंस रहे हैं।

नित्यानंद राय ने कहा, तेजस्वी यादव ने राघोपुर को धोखा दिया है। जब राघोपुर की जनता उनसे मिलने जाती थी तो लाठियों की बौछार करवाते थे। अपमानित करवाते थे। अपने पिता जी की उम्र के लोगों को भी धक्का मरवाते थे नौजवानों पर पुलिस की लाठी तो चलवाते ही थी। तो इस बार राघोपुर की जनता विकास चाहती है। सम्मान चाहती है। अपने क्षेत्र की सेवा चाहती है।

ट्रेलर ने बाइक को मारी टक्कर, एक साल के बच्चे संग चार की मौत

बहराइच, 5 नवंबर (एजेंसियां)। बहराइच जिले के बहराइच-लखनऊ राजमार्ग पर बुधवार सुबह दर्दनाक हादसा हुआ है। राष्ट्रीय राजमार्ग स्थित मदन कोठी चौराहे पर फखरपुर की तरफ से आ रही गिट्टी भरा ट्रेलर अनियंत्रित हो गया। अनियंत्रित होने के बाद वह सामने से आ रही बाइक की तरफ घूम गया। इस चपेट में चार लोगों की मौत हो गई।

इसमें से एक वर्ष का बच्चा भी है। सभी की मौके पर मौत हो गई। ऐसा माना जा रहा है कि सभी की मौत पहिए के नीचे आ जाने के वजह से हुई है। ट्रेलर का ड्राइवर गाड़ी खड़ा करके भाग गया। शवों को पोस्टमॉर्टम हाउस भेजवा दिया गया है। अभी तक मृतकों की शिनाख्त नहीं हो पाई है।

युवती ने 3 करोड़ का सोना चुराया

जमीन खरीदी, कार का लोन चुकाया, 3 साल से शोरूम में जॉब कर रही थी

लखनऊ, 5 नवंबर (एजेंसियां)। लखनऊ में हरसहाय मल श्यामलाल ज्वेलरी शोरूम (एचजेएस) से ढाई किलो सोना चोरी हो गया। 3 दिन पहले शोरूम मालिक ने एक 28 साल की युवती के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया, तब जाकर मामला सामने आया। चोरी किए गए सोने की मौजूदा कीमत 3 करोड़ रुपए बताई गई है। चौंकाने वाली बात यह है कि आरोपी शोरूम में ही बैक ऑफिस एग्जीक्यूटिव थी। उसका नाम कोमल श्रीवास्तव है। शोरूम मालिक का कहना है कि कोमल ने विश्वास जीतकर इस घटना को अंजाम दिया। वह 3 साल से शोरूम में काम कर रही थी। वारदात में उसके पति रितेश श्रीवास्तव ने भी साथ दिया। दोनों ने मिलकर सोने को बेच दिया। जब हमने पूछताछ की तो उसने खुद ही अपना जुर्म कबूल कर लिया। दरअसल, धनतेरस से ठीक एक दिन पहले जब कर्मचारी ज्वेलरी स्टोर की स्टॉक चेकिंग कर रहे थे, तब 'बाय बैंक' सेक्शन में कुछ बड़ी ज्वैलरी कम मिली। सभी हैरान रह गए। स्टोर में अफरा-तफरी मच गई। शोरूम मालिक ने सीसीटीवी चेक किए तो इसमें कोमल चोरी करते हुए दिखाई दी। पता चला कि चोरी का ये खेल कई महीनों से चल रहा था।

शोरूम के मालिकों के मुताबिक, 19 अक्टूबर को जब स्टोर मैनेजर धीरज ढल और अन्य कर्मचारियों ने कोमल से पूछताछ की, तो उसने चोरी की बात को स्वीकार कर ली। उसने बताया कि पिछले कई महीनों में उसने करीब 2.5 किलो सोना चोरी किया। मौजूदा वक्त में सोने की अनुमानित कीमत 3 करोड़ रुपए आंकी जा रही है।

मिर्जापुर के चुनार रेलवे स्टेशन पर बड़ा हादसा

ट्रेन से कटकर छह लोगों की दर्दनाक मौत

मिर्जापुर, 5 नवंबर (एजेंसियां)। उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर जिले में बुधवार (5 नवंबर) को बड़ा ट्रेन हादसा हुआ। यहां चुनार रेलवे स्टेशन पर एक ट्रेन के नीचे आने से लगभग 6 लोगों की कटकर मौत हो गई है। इस दर्दनाक हादसे का संज्ञान मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने लिया और मृतकों के शोक संतप्त परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त की। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अधिकारियों को तत्काल मौके पर पहुंच कर राहत कार्य में तेजी लाने के निर्देश दिए हैं। इसके अलावा, एसडीआरएफ और एनडीआरएफ की टीमों को मौके पर पहुंचकर तुरंत राहत कार्य शुरू करने को कहा है और घायलों के समुचित उपचार के भी निर्देश दिए हैं। सीएम योगी ने घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की।

ट्रेन से गलत दिशा में उतरने पर हुआ हादसा

बताया जा रहा है कि लोग रेलवे ट्रैक पैदल पार कर रहे थे जब अचानक कालका-हावड़ा एक्सप्रेस पटरी पर तेजी से आ गई। ट्रेन के नीचे करीब 6 लोग आ गए और बुरी तरह कट गए। वहां मौजूद लोगों का कहना है कि हादसा इतना भीषण था कि हादसे का शिकार हुए लोगों के शरीर के चिथड़े उड़ गए।

ये सभी यात्री कार्तिक पूर्णिमा स्नान के लिए आए थे और ट्रेन से गलत दिशा में उतरने के कारण हादसे का शिकार हो गए। मौके पर भारी पुलिस बल तैनात है और राहत-बचाव कार्य जारी है। रेलवे प्रशासन ने जांच के आदेश दिए हैं। चुनार स्टेशन परिसर पर अफरा-तफरी का माहौल बन गया है।

रेलवे के मुताबिक, आज (बुधवार, 5 नवंबर) की सुबह चोपन चुनार पैसेंजर ट्रेन से कुछ लोग मिर्जापुर के चुनार रेलवे स्टेशन पहुंचे, लेकिन मुख्य दरवाजे के बजाय ट्रेन के दूसरे दरवाजे से दूसरी लाइन पर उतर गए। तभी कालका-हावड़ा ट्रेन लाइन पर आ गई और लोग उसकी चपेट में आ गए।

रेलवे ने अब तक 5 लोगों की मौत की पुष्टि की है। हालांकि, यह भी कहा गया है कि मौत का आंकड़ा बढ़ सकता है। रेलवे के मुताबिक, ये एमआरओ आदमी को कुचला का मामला है। आपको बता दें कि कार्तिक पूर्णिमा के स्नान को लेकर प्लेटफार्म पर पहले से काफी भीड़ भी चल रही थी।

चुनार स्टेशन के प्लेटफॉर्म नंबर-4 पर हादसा

चोपन-चुनार पैसेंजर ट्रेन से ये यात्री चुनार रेलवे स्टेशन पर उतरे थे। यह ट्रेनचुनार रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म नंबर चार पर रुकी थी। यात्री रेलवे ट्रैक क्रॉस करके एक नंबर प्लेटफार्म होते हुए गंगा स्नान के लिए जाना चाहते थे। तभी कालका-हावड़ा ट्रेन ट्रैक से गुजर रही थी और कई यात्री इस ट्रेन की चपेट में आ गए।

चुनार रेलवे स्टेशन पर हुए इस भयंकर हादसे में मरने वालों के नाम सामने आ गए हैं। हादसे का शिकार ज्यादातर महिलाएं हुई हैं।

पूरब के बाद अब पश्चिम में जमने के लिए मैदान में उतरा अपना दल

बरेली, 5 नवंबर (एजेंसियां)। पूर्वांचल की सियासत में अपनी मजबूत पैठ बना चुकी अपना दल-एस की निगाह अब पश्चिमी उत्तर प्रदेश की सियासी जमीन पर है। अपना दल-एस ने तीन दशक की अपनी सियासी यात्रा के समारोह के लिए बरेली को चुना। कुर्मी मतदाताओं वाले रुहेलखंड में पार्टी की आलाकमान अनुप्रिया पटेल और आशीष पटेल ने स्थापना दिवस समारोह के जरिये पार्टी के विस्तार का भी शंखनाद किया। समारोह में आए कार्यकर्ताओं के उत्साह को देख आशीष पटेल ने मंच से ही कहा भी कि बरेली में उमड़ी भीड़ पार्टी के लिए ऑक्सीजन का काम करेगी। उत्तर प्रदेश की सियासत का रुख काफी हद तक अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) के मतदाताओं के मिजाज पर निर्भर करता है। वर्ष 2012 के विधानसभा चुनाव में अपना दल ने दो विधायकों के सहारे प्रदेश में सियासी सफर शुरू किया था। 2017 के विधानसभा चुनाव में अपना दल के विधायकों की संख्या नौ हुई। मौजूदा समय में उत्तर प्रदेश में अपना दल-एस के 13 विधायक, एक एमएलसी और एक सांसद हैं। इसके साथ ही लगातार तीन बार से सांसद अनुप्रिया पटेल प्रदेश में ओबीसी की दूसरी सबसे बड़ी आबादी वाले कुर्मी समाज की सबसे बड़ी नेता बन चुकी हैं। कमेरा समाज की पार्टी कहलाने वाली अद-एस के बरेली में स्थापना दिवस को लेकर राजनीति के जानकारों का कहना है कि इसके पीछे की अहम वजह कुर्मी मतदाता हैं। बीते 36 वर्षों में पांच वर्ष को छोड़ दिया जाए तो कुर्मी मतदाताओं के बूते ही भाजपा ने बरेली लोकसभा क्षेत्र को अपना अजेय गढ़ बना रखा है।

2023 में विधानसभा के उपचुनाव में बरेली के पड़ोसी जिले रामपुर के स्वार विधानसभा क्षेत्र से शफीक अहमद अंसारी को अद-एस के सिंबल पर जीत नसीब हुई थी। ऐसे में आगामी विधानसभा चुनाव में पश्चिम के कुर्मी मतदाता बहुल इलाकों में सियासी समीकरण को देख-समझ कर अद-एस अपने प्रत्याशी उतारने की मांग भाजपा से कर सकती है।

कबड्डी खिलाड़ी की गोली मारकर हत्या, लॉरेंस बिश्नोई गैंग ने ली जिम्मेदारी

लुधियाना, 5 नवंबर (एजेंसियां)। पंजाब में कबड्डी खिलाड़ियों पर हो रहे हमले लगातार बढ़ते जा रहे हैं। लुधियाना जिले के समराला ब्लॉक के मांकी गांव में देर रात एक और बड़ी वारदात हुई, जहां 23 वर्षीय कबड्डी खिलाड़ी गुरविंदर सिंह की गोली मारकर हत्या कर दी गई। पुलिस के अनुसार, चार नकाबपोश हमलावर मोटरसाइकिल पर सवार होकर आए और गुरविंदर और उसके दोस्तों पर अंधाधुंध फायरिंग कर दी। घटना के समय गुरविंदर अपने साथी धर्मवीर और लवप्रीत सिंह के साथ गांव के मेडिकल स्टोर के पास एक सामुदायिक कार्यक्रम की तैयारी कर रहे थे।

अचानक आए हमलावरों ने बिना किसी चेतावनी के गोलियां चलानी शुरू कर दीं। मौके से कई खाली कारतूस बरामद किए गए हैं। पंजाब में कबड्डी खिलाड़ी की गोली मारकर हत्या, लॉरेंस बिश्नोई गैंग ने ली जिम्मेदारी, इलाके में दहशत इस हत्या की जिम्मेदारी कुख्यात लारेंस बिश्नोई गैंग ने ली है। गैंग के हरि बॉक्सर और आरजू बिश्नोई ने सोशल मीडिया पोस्ट के जरिए इस वारदात की जिम्मेदारी स्वीकार की।

10 एमएल शराब पर 7 दिन की जेल

अदालत ने जताया आक्रोश, जानिए क्या कहा?

मलाप्पुरम (केरल), 5 नवंबर (एजेंसियां)। केरल की एक अदालत ने 10 मिलीलीटर शराब रखने के आरोप में गिरफ्तार किए गए और सात दिन की न्यायिक हिरासत में भेजे गए एक व्यक्ति को जमानत देते हुए कहा कि ऐसी घटनाएं केवल एक "बनाना रिपब्लिक" में ही हो सकती हैं, न कि दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र में। 'बनाना रिपब्लिक' का संदर्भ आम तौर पर एक ऐसे देश के तौर पर दिया जाता है जिसका विदेशी हितों द्वारा लाभ के लिए शोषण किया जाता है और जिसकी अर्थव्यवस्था आम तौर पर एक ही प्रमुख निर्यात पर निर्भर करती है। मंजेरी सत्र न्यायालय के न्यायाधीश के. सुनील कुमार ने मामले के जांच अधिकारी (आईओ) को उनके "अत्यधिक और संदिग्ध" उत्साह के लिए फटकार भी लगाई।

अदालत ने कहा कि उसे आरोपी को, जो संभवतः समाज के सामाजिक और आर्थिक रूप से वंचित वर्ग से है, एक गंभीर अपराध में "उलझाने" के पीछे जांच अधिकारी के वास्तविक उद्देश्यों पर संदेह है। यह भी माना गया कि पेशे से नाई, आरोपी के पास से बरामद

भारत में निर्मित विदेशी शराब (आईएमएफएल) की थोड़ी मात्रा संभवतः उसके ग्राहकों के लिए आफ्टरशेव के रूप में इस्तेमाल करने के लिए रखी गई थी।

जांच अधिकारी ने सीमाएं पार की

अदालत ने यह भी सवाल उठाया कि जांच अधिकारी ने कैसे माना कि 10 मिलीलीटर आईएमएफएल से नमूने लिए जा सकते हैं और उनका प्रसंस्करण किया जा सकता है। न्यायाधीश ने अपने एक नवंबर के आदेश में कहा, "मामले के तथ्यों से यह स्पष्ट है कि जांच अधिकारी ने अपनी सीमाएं पार कीं और आपराधिक कानून को लागू करने तथा इस प्रक्रिया में आरोपी को हिरासत में लेने के लिए अत्यधिक और संदिग्ध उत्साह दिखाया, और आरोपी सात दिनों से न्यायिक हिरासत में है।" उन्होंने कहा, "ऐसी घटना का विश्व के सबसे महान लोकतंत्र में कोई स्थान नहीं है, और यह केवल एक 'बनाना रिपब्लिक' में ही हो सकती है।"

ऐसे मामलों में संवेदनशील बनें जांच अधिकारी

न्यायाधीश ने अपने आदेश में आगे कहा कि यह "अत्यंत आवश्यक" है कि जांच अधिकारी को ऐसे मामलों में संवेदनशील बनाया जाए, विशेष रूप से समाज के वंचित वर्गों के मामलों में। अदालत ने कहा, "उम्मीद है कि पुलिस बल के उच्च अधिकारी इस मामले पर गौर करेंगे।" अदालत ने उन्हें इस शर्त पर जमानत पर रिहा कर दिया कि वे संबंधित मजिस्ट्रेट की संतुष्टि के लिए 10,000 रुपये का मुचलका और उतनी ही राशि की दो जमानत जमा करें।

अदालत ने आरोपी को निर्देश दिया कि वह मामले में साक्ष्यों या गवाहों से छेड़छाड़ न करे तथा जमानत पर रहते हुए किसी अन्य अपराध में शामिल न हो। यह आदेश आरोपी की जमानत याचिका पर आया, जिसमें उसने दलील दी थी कि आबकारी अधिनियम के तहत किसी व्यक्ति को उपभोग के लिए तीन लीटर तक आईएमएफएल रखने की सामान्य अनुमति है।

'वहां जंगलराज है, बिना सुरक्षा नहीं जा सकता'

बिहार में चुनावी अभियान में शामिल होने से आजम खान का इनकार

मुरादाबाद, 5 नवंबर (एजेंसियां)। समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता और पूर्व मंत्री आजम खान ने बिहार विधानसभा चुनाव 2025 में प्रचार से दूरी बना ली है। हाल ही में मुरादाबाद में मीडिया से बातचीत के दौरान उन्होंने कहा कि वे सुरक्षा कारणों से बिहार नहीं जाएंगे, क्योंकि वहां 'जंगलराज का राज' है। आजम खान ने कहा, मुझे स्वास्थ्य और सुरक्षा कारणों से वहां न जा पाने का अफसोस है, क्योंकि लोग कहते हैं कि वहां 'जंगल राज' है।

इसलिए, 'जंगल राज' का अंत होना चाहिए, और हम जैसे लोगों को देश में आजादी और कानून का राज बहाल करने का हिस्सा बनने का अवसर मिलना चाहिए। हम चाहते हैं कि मतदाता लोकतंत्र के लिए मतदान करके देश को बचाने के लिए एकजुट हों। उन्होंने सुरक्षा की मांग की थी, मगर वाई श्रेणी की अधूरी सुरक्षा दी गई। एएनआई को दिए बयान में बोले, "अगर देनी है तो पूरी सुरक्षा दो, आधी-अधूरी सुरक्षा का कोई मतलब नहीं।" साथ ही उन्होंने बिहार के लोगों से अपील की कि लोकतंत्र और इंसानियत को बचाने के लिए वोट करें और एकजुट रहें।

जज्बाती नारे पर न बंटें- आजम खान

उन्होंने कहा, फिर यही कहूंगा कि किसी जज्बाती नारे पर या किसी बहलावे पर लोग अपनी ताकत को न बांटे। जिनका मकसद ही आपको छोटे छोटे टुकड़ों में बांटना है उन्हें आपको पहचानना चाहिए, इस लिए आप अपने पर रहम करें, इस मुल्क पर रहम करें वरना शायद फिर से मौका न मिले। बता दें कि समाजवादी पार्टी द्वारा जारी स्टार प्रचारकों की सूची में आजम खान का नाम शामिल था, लेकिन अब उन्होंने प्रचार में जाने से साफ इनकार कर दिया है।

उन्होंने कहा कि मतदाताओं को किसी के धोखे में नहीं आना चाहिए और यह सोचना चाहिए कि बंटने में फायदा है या एकता में। आजम ने कहा, "हमारा मकसद लोकतंत्र को बचाना है, न कि सियासत में ओहदा हासिल करना।" उन्होंने आगे कहा कि हमें ऐसी सियासत चाहिए जो इंसान को जोड़ने का काम करे, बांटने का नहीं।

एक बार फिर मोनो रेल हादसा, तकनीकी खराबी के चलते

आगे का हिस्सा और ट्रैक टूटा, कर्मचारी घायल

मुंबई, 5 नवंबर (एजेंसियां)। मुंबई के वडाला में मोनो रेल के नए डिब्बों की टेस्टिंग के दौरान बुधवार, 5 नवंबर को एक बार फिर तकनीकी खराबी आ गई। ट्रायल रन के दौरान आई इस खराबी की वजह से मोनो रेल को बीच रास्ते में ही रोकना पड़ा। इस घटना में मोनो रेल का आगे का हिस्सा क्षतिग्रस्त हो गया, जबकि मरम्मत कार्य में लगी टीम के एक सदस्य को हल्की चोट आई है। मोनो रेल अधिकारियों के अनुसार, यह एक नियमित परीक्षण प्रक्रिया का हिस्सा था, लेकिन सवाल उठ रहे हैं कि ट्रेन का हिस्सा क्षतिग्रस्त कैसे हुआ और कर्मचारी घायल कैसे हुआ ? फिलहाल मोनो रेल प्रबंधन की ओर से आधिकारिक बयान का इंतज़ार है। घटना के वक्त मोनो रेल में कोई यात्री मौजूद नहीं था। केवल मेंटेनेंस टीम के सदस्य ट्रायल में शामिल थे।

गौरतलब है कि सितंबर में भी इसी तरह की घटना हुई थी जब चलती मोनो रेल अचानक बंद हो गई थी। इसके बाद सुरक्षा कारणों से 20 सितंबर से मोनो रेल सेवाएं अस्थायी रूप से निलंबित कर दी गई थीं। उस समय से मरम्मत और सिस्टम अपग्रेड का काम जारी है। वडाला में हुई यह ताज़ा घटना एक बार फिर मुंबई मोनो रेल की सुरक्षा और तकनीकी विश्वसनीयता पर सवाल खड़े कर रही है। मुंबई में एक बार फिर मोनो रेल हादसा, तकनीकी खराबी के चलते आगे का हिस्सा और ट्रैक टूटा, कर्मचारी घायल मुंबई मोनो रेल, जिसे देश की पहली मोनो रेल सेवा कहा जाता है, फरवरी 2014 में शुरू हुई थी। इसका संचालन मुंबई महानगर क्षेत्र विकास प्राधिकरण (एमएमआरडीए) द्वारा किया जाता है। मोनो रेल का मार्ग चेंबूर से लेकर संत गाडगे महाराज चौक (जेकोब सर्कल) तक फैला है। करीब 19.5 किलोमीटर लंबा यह रूट 17 स्टेशनों को जोड़ता है, जिनमें वडाला, दादर (नायगांव) और महालक्ष्मी जैसे प्रमुख स्टेशन शामिल हैं।

मोनो रेल में सिस्टम अपग्रेड के लिए परीक्षण चल रहा

इस परियोजना की लागत लगभग 3,000 करोड़ बताई जाती है। इसका निर्माण एलएंडटी और मलेशिया की स्कोमी इंजीनियरिंग के सहयोग से किया गया था। मोनो रेल को मुंबई के ट्रैफिक का बोझ कम करने और पूर्वी उपनगरों को दक्षिण मुंबई से जोड़ने के उद्देश्य से शुरू किया गया था। लेकिन शुरुआत से ही तकनीकी खराबियों और रखरखाव की दिक्कतों के कारण यह परियोजना कई बार विवादों में रही है। हाल के दिनों में ट्रायल रन के दौरान फिर से तकनीकी गड़बड़ी सामने आने से मोनो रेल की सुरक्षा और विश्वसनीयता पर सवाल उठने लगे हैं। फिलहाल मोनो रेल प्रबंधन मेंटेनेंस और सिस्टम अपग्रेड के लिए परीक्षण चला रहा है।

पाक से मैच खेल रहे- गुजरात से व्यापार भी जारी

पंजाब सीएम भगवंत ने कहा- खोला जाए करतारपुर साहिब कॉरिडोर

चंडीगढ़, 5 नवंबर (एजेंसियां)। पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान ने करतारपुर साहिब कॉरिडोर को तुरंत खोलने की मांग की है। उन्होंने केंद्र सरकार पर दोहरे मापदंड अपनाने का आरोप लगाया और पंजाब के रास्ते पाकिस्तान से व्यापार फिर से शुरू करने की बात भी कही है। भगवंत मान का कहना है कि इससे लाखों लोगों को रोजगार मिलेगा। इसके साथ ही राज्य की अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलेगा। करतारपुर साहिब कॉरिडोर को फिर से खोलने की मांग के बारे में पूछे जाने पर पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान ने कहा, "केंद्र को इसे खोलना चाहिए था। अगर वे इसे तभी खोलते हैं जब कोई उन्हें लिखेगा तो इसका क्या फायदा? उन्हें ख़ुद ही इसे खोलना चाहिए था। सीएम ने कहा कि अब तो पाकिस्तान के साथ क्रिकेट मैच भी खेलना शुरू कर दिया है। करतारपुर साहिब में मत्था टेकने का कार्यक्रम सिर्फ़ 4-5 घंटे का होता है। उसके बाद संगत वापस लौट जाती है। इसलिए, गृह मंत्रालय और विदेश मंत्रालय को इसे फिर से खोलना चाहिए था।

'मुसलमानों के खिलाफ बोलने के लिए ही बने मंत्री'

नितेश राणे पर जमकर भड़के अबू आजमी

मुंबई, 5 नवंबर (एजेंसियां)। समाजवादी पार्टी के महाराष्ट्र प्रदेश अध्यक्ष अबू आसिम आजमी ने मंत्री नितेश राणे पर तीखा हमला बोला है। उन्होंने कहा कि नितेश राणे को ऐसा पोर्टफोलियो दिया गया है जहां उनका काम सिर्फ मुसलमानों के खिलाफ बोलना रह गया है। अबू आजमी ने कहा कि नितेश राणे मस्जिदों, बुर्के, अजान और मुस्लिम महिलाओं पर भड़काऊ टिप्पणियां करते हैं, जो समाज को बांटने का काम करती हैं। अबू आजमी ने कहा कि नितेश राणे हर बार मुसलमानों के धर्म और रीति-रिवाजों पर विवादित बयान देते हैं। उन्होंने कहा, "वो बुर्का, मस्जिद, लाउडस्पीकर और अजान पर टिप्पणी करते हैं। यहां तक कि महिलाओं को लिपस्टिक छोड़कर तलवार उठाने की सलाह देते हैं। ऐसे बयान समाज में जहर घोलने का काम करते हैं। उन्हें ऐसा पोर्टफोलियो दिया गया है जो सिर्फ मुसलमानों पर बात करने का है। ये इंसान बहुत घटिया इंसान है और हमेशा उल्टी बातें करता है।" आजमी ने कहा कि ऐसी सोच रखने वाले व्यक्ति को मंत्री बने रहने का कोई हक नहीं है। आजमी ने सरकार और पुलिस को याद दिलाते हुए आईएएनएस को दिए बयान में कहा, "सुप्रीम कोर्ट ने साफ कहा है कि अगर कोई हेट स्पीच करेगा तो सरकारें स्वतः संज्ञान लेकर कार्रवाई करें। अदालत ने पूछा था कि क्या सरकारें नपुंसक हो गई हैं जो ऐसे मामलों पर केस नहीं करतीं।" उन्होंने कहा कि महाराष्ट्र में हर दिन इस तरह की नफरत फैलाने वाली बातें हो रही हैं लेकिन कोई कार्रवाई नहीं होती। उन्होंने मांग की कि सरकार और पुलिस सुप्रीम कोर्ट के निर्देशों के तहत सख्त कदम उठाए ताकि ऐसी घटनाएं दोहराई न जाएं।

आज़मी का बड़ा बयान और चेतावनी

आज़मी ने कहा, "एक ऐसा व्यक्ति जो विधायक रहा है और अब मंत्री है, अगर वो कहता है कि यह हिंदू राष्ट्र है तो उसे शर्म आनी चाहिए। देश को देखना चाहिए कि कैसे घटिया सोच वाले लोग मंत्री बन जाते हैं।" उन्होंने कहा कि जो लोग मुसलमानों के खिलाफ नफरत फैलाते हैं और देश को तोड़ने वाली बातें करते हैं, "ऐसे लोगों को मंत्री पद से उठा कर फेंक देना चाहिए।"

पश्चिम बंगाल में पुलिस और बीएसएफ क्यों आए आमने-सामने? मचा हड़कंप, तीन घायल

कोलकाता, 5 नवंबर (एजेंसियां)। पश्चिम बंगाल से पुलिस और बीएसएफ जवानों के बीच झड़प की घटना सामने आई। नदिया जिले के चापड़ा थाना क्षेत्र अंतर्गत शिमनगर इलाके में पुलिस और बॉर्डर सिक्योरिटी फोर्स (बीएसएफ) के जवानों के बीच झड़प हो गई। कफ सिरप की तस्करी को लेकर हुई इस झड़प ने पूरे क्षेत्र में हड़कंप मचा दिया। इस घटना में एक पुलिस अधिकारी सहित तीन लोग घायल हो गए।

घायलों को तुरंत ग्रामीण अस्पताल ले जाया गया, जहां प्राथमिक उपचार के बाद उन्हें छुट्टी दे दी गई। पुलिस ने घटना के तुरंत बाद एक बीएसएफ जवान को हिरासत में लिया, हालांकि पूछताछ के बाद उसे रिहा कर दिया गया। पुलिस सूत्रों के अनुसार, यह पूरी घटना तस्करी की एक बड़ी खेप से जुड़ी हुई है। करीमपुर क्षेत्र से एक वाहन में लगभग 11 पेटी कफ सिरप की तस्करी करके चापड़ा की ओर ले जाया जा रहा था।

गुप्त सूचना मिलने पर पुलिस ने शिमनगर में नाकाबंदी की। पुलिस की मौजूदगी का अंदाजा लगते ही तस्कर वाहन छोड़कर फरार हो गए और कफ सिरप की पेटियां मौके पर ही छोड़ दीं। पुलिस ने जब्ती की कार्रवाई शुरू की, तभी सीमानगर बीएसएफ कैंप से कुछ जवान मौके पर पहुंचे और पुलिस को रोककर सिरप की खेप को अपने कब्जे में लेने की कोशिश की। पुलिस के अनुसार बीएसएफ जवानों ने दावा किया कि यह क्षेत्र उनके अधिकार क्षेत्र में आता है और तस्करी सीमा से संबंधित है, इसलिए जब्ती का अधिकार उन्हें है। पुलिस ने तर्क दिया कि सूचना उनके पास थी और कार्रवाई स्थानीय थाने की जिम्मेदारी है। इसी गलतफहमी के चलते दोनों पक्षों में तीखी बहस शुरू हो गई, जो देखते-देखते हाथापाई में बदल गई। इस झड़प में कुछ लोगों के घायल होने की भी सूचना है। घटना की जानकारी मिलते ही नदिया जिले के वरिष्ठ पुलिस अधिकारी मौके पर पहुंचे और स्थिति को नियंत्रित किया।

उन्होंने घटना को दुर्भाग्यपूर्ण बताया और कहा कि गलतफहमी के कारण ऐसे हालात बने। दोनों बल देश की सेवा में हैं, लेकिन क्षेत्रीय अधिकारों को लेकर मतभेद हो गया। पूरे मामले की जांच की जा रही है।

कांग्रेस प्रधान राजा वड़िंग पर एफआईआर

पूर्व गृहमंत्री बूटा सिंह के बेटे ने कपूरथला पुलिस को दी शिकायत

चंडीगढ़, 5 नवंबर (एजेंसियां)। पंजाब पुलिस ने पूर्व गृह मंत्री बूटा सिंह के बेटे की शिकायत पर पंजाब कांग्रेस अध्यक्ष अमरिंदर सिंह राजा वड़िंग के खिलाफ एफआईआर दर्ज कर ली है। बूटा सिंह के बेटे सरबजोत सिंह सिद्धू ने एसएसपी कपूरथला को एक शिकायत दी थी जिसके आधार पर एफआईआर दर्ज की गई है। पंजाब कांग्रेस प्रधान अमरिंदर सिंह राजा वड़िंग की ओर से दिवंगत केंद्रीय गृह मंत्री और दलित नेता बूटा सिंह पर की अभद्र टिप्पणी की गई थी। इससे पहले राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग ने डीसी तरनतारन से वड़िंग पर की गई कार्रवाई की सात दिन में रिपोर्ट मांगी है। आयोग ने कहा कि अगर तय समय में रिपोर्ट नहीं दी गई तो डीसी को तलब किया जाएगा।

भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव तरुण चुग के आरोपों पर आयोग ने संज्ञान लिया है। रिपोर्ट में विभिन्न धाराओं के तहत दर्ज एफआईआर और गिरफ्तारी के संबंध में विवरण मांगा गया है। इसी तरह पंजाब राज्य अनुसूचित जाति आयोग ने रिटर्निंग अधिकारी तरनतारन की रिपोर्ट को असंतोषजनक पाए जाने पर जिला चुनाव अधिकारी व डीसी तरनतारन को 6 नवंबर को पेश होने के आदेश दिए हैं।

आयोग ने यह जानकारी भी जिला चुनाव अधिकारी से मांगी है कि आचार संहिता के अनुपालन के लिए वड़िंग को जिले की सीमा से बाहर क्यों नहीं किया गया। आयोग के चेयरमैन जसवीर सिंह गढ़ी ने बताया कि सहायक रिटर्निंग अधिकारी व नायब तहसीलदार जसविंदर सिंह ने मंगलवार को आयोग को पेश रिपोर्ट संतोषजनक नहीं पाई गई जिसके चलते जिला चुनाव अधिकारी को तलब किया गया है। इससे पहले वड़िंग को भी 6 नवंबर को आयोग के समक्ष पेश होने के लिए तलब किया जा चुका है। गढ़ी ने बताया कि सोशल मीडिया पर वायरल वीडियो में वड़िंग ने दिवंगत बूटा सिंह के प्रति रंग और नस्ल के आधार पर आपत्तिजनक टिप्पणी की है।

'महायुति एकजुट है, गठबंधन चुनाव बाद भी जारी रहेगा'

महाराष्ट्र निकाय चुनाव से पहले बोले फडणवीस

मुंबई, 5 नवंबर (एजेंसियां)। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने बुधवार को कहा कि राज्य में आगामी निकाय चुनावों से पहले महायुति गठबंधन पूरी तरह एकजुट है। उन्होंने कहा कि अगर पूर्व-चुनाव गठबंधन नहीं भी बन पाया, तो चुनाव के बाद महायुति जरूर साथ आएगी। कोल्हापुर में पत्रकारों से बातचीत में फडणवीस ने कहा चुनावों की घोषणा हो चुकी है और हम पूरी तरह तैयार हैं। महायुति के सभी नेता स्थानीय स्तर पर गठबंधन को लेकर फैसला करेंगे, लेकिन किसी भी परिस्थिति में तीनों दल भाजपा, एकनाथ शिंदे की शिवसेना और अजित पवार की राकांपा साथ रहेंगे।

2 दिसंबर को होंगे निकाय चुनाव

राज्य चुनाव आयुक्त दिनेश वाघमारे ने घोषणा की थी कि महाराष्ट्र की 246 नगर परिषदों और 42 नगर पंचायतों के चुनाव 2 दिसंबर को होंगे और वोटों की गिनती 3 दिसंबर को

की जाएगी। हालांकि, 29 नगर निगमों, 32 जिला परिषदों और 336 पंचायत समितियों के चुनाव कार्यक्रम की घोषणा अभी नहीं हुई है। फडणवीस ने दावा किया कि राज्य की जनता महायुति सरकार पर पूरा भरोसा रखती है और आने वाले चुनावों में गठबंधन को बड़ी जीत दिलाएगी। इस बीच, शिवसेना (उद्धव गुट) प्रमुख और पूर्व मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे ने बुधवार को मराठवाड़ा क्षेत्र का दौरा शुरू किया, जहां हाल ही में भारी बारिश के कारण किसानों की फसलें बर्बाद हुई थीं। उद्धव ठाकरे के दौरे पर प्रतिक्रिया देते हुए फडणवीस ने कहा यह अच्छी बात है कि वे राज्य का दौरा कर रहे हैं। पहली बार उद्धवजी बाहर निकले हैं, मैं खुश हूं। उन्होंने व्यंग्यात्मक लहजे में जोड़ा, लेकिन वे केवल तंज कसने तक ही सीमित रहते हैं। मैंने कहा है अगर उनके विकास पर दिए गए किसी भाषण का उदाहरण दिखा दें, तो मैं 1000 रुपये दूंगा।

राज ठाकरे सिर्फ कर रहे चुनाव टालने की मांग

वहीं, महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना (मनसे) प्रमुख राज ठाकरे द्वारा मतदाता सूची में गड़बड़ी को लेकर चुनाव आयोग की आलोचना पर फडणवीस ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट के आदेश के अनुसार चुनावों को स्थगित नहीं किया जा सकता। उन्होंने कहा राज ठाकरे सिर्फ चुनाव टालने की मांग कर रहे हैं, लेकिन चुनाव आयोग सुप्रीम कोर्ट के आदेशों के खिलाफ नहीं जा सकता।

कमरे में अकेले बुलाया और धमकाया

एम्स भोपाल के एचओडी पर महिला डॉक्टर का बड़ा आरोप

भोपाल, 5 नवंबर (एजेंसियां)। एम्स भोपाल के एचओडी पर बड़ा आरोप लगा है। महिला डॉक्टर ने अपने विभागाध्यक्ष पर उत्पीड़न का आरोप लगाया है। महिला डॉ श्रुति दुबे का आरोप है कि विभागाध्यक्ष डॉ मोहम्मद यूनुस हमें प्रताड़ित कर रहे हैं। साथ ही अकेले बुलाकर हमें धमकाते हैं। लेडी डॉक्टर के इन आरोपों से हड़कंप मच गया है। डॉ श्रुति दुबे का आरोप है कि डॉ यूनुस ने मुझे अकेले कमरे में बैठाकर धमकाया है। साथ ही प्रताड़ित किया है। यही नहीं, मीटिंग में सबके सामने मुझे अपमानित करने का काम किया है।

ऐसे में मैं खुद को असुरक्षित महसूस कर रही हूं। साथ ही इसकी वजह से मानसिक दबाव भी है। महिला डॉक्टर ने एम्स की आंतरिक शिकायत समिति में यह शिकायत की है। इसके बाद जांच शुरू हो गई। वहीं, एचओडी मोहम्मद यूनुस ने मीडिया से बात करते हुए कहा है कि सभी आरोप झूठे हैं। मामला आंतरिक समिति के पास है। हमने उन्हें अपनी तरफ से जवाब दे दिया है।

एनओसी मिलने पर आरोपी को कितने साल के लिए पासपोर्ट जारी किया जा सकता है? हाईकोर्ट ने सुनाया अहम फैसला

प्रयागराज, 5 नवंबर (एजेंसियां)। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने एक अहम फैसले में कहा है कि यदि किसी आपराधिक मामले में आरोपी व्यक्ति को विदेश यात्रा के लिए सक्षम अदालत से अनापत्ति प्रमाण पत्र (एनओसी) या अनुमति मिलती है, और आदेश में पासपोर्ट की अवधि का उल्लेख नहीं किया गया है तो पासपोर्ट अधिकारी केवल एक वर्ष के लिए वैध पासपोर्ट जारी कर सकते हैं।

जस्टिस अजित कुमार और जस्टिस स्वरूपमा चतुर्वेदी की खंडपीठ ने यह निर्णय पीलीभीत के मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट द्वारा जारी एनओसी के आधार पर 10 वर्ष की अवधि के लिए पुनः पासपोर्ट जारी करने के अनुरोध वाली याचिका को खारिज करते हुए दिया। पीठ ने अपने आदेश में कहा, ''जहां सक्षम अदालत के आदेश में पासपोर्ट की अवधि का कोई उल्लेख न हो, वहां एक बार में केवल एक वर्ष के लिए पासपोर्ट जारी किया जा सकता है। बाद

में, आवेदक अदालत के आदेश के अनुरूप पासपोर्ट की अवधि को नवीनीकरण के जरिए बढ़वा सकता है, बशर्ते कि अदालत द्वारा मंजूर की गई अवधि में उसने विदेश यात्रा न की हो और अदालत का आदेश रद्द या संशोधित न किया गया हो।''इस मामले में, याचिकाकर्ता ने पासपोर्ट जारी कराने के लिए पीलीभीत के मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट के समक्ष अर्जी दी थी, जिस पर 10 अक्टूबर 2024 को अदालत ने उसे एनओसी प्रदान की। इसके बाद उसने बरेली स्थित क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय में आवेदन किया, जिसने 20 जनवरी 2025 से 19 जनवरी 2026 तक केवल एक वर्ष के लिए पासपोर्ट जारी किया।

बाद में, याचिकाकर्ता ने पूरे 10 वर्ष की अवधि के लिए पासपोर्ट नवीनीकरण का अनुरोध किया और दलील दी कि एक बार सक्षम अदालत द्वारा अनुमति दिए जाने के बाद, पासपोर्ट अधिनियम, 1967 के तहत निर्धारित सामान्य अवधि (10 वर्ष) लागू होनी चाहिए। हालांकि, पासपोर्ट अधिकारियों ने यह तर्क दिया कि अदालत के आदेश में अवधि स्पष्ट नहीं होने के कारण, विदेश मंत्रालय की 25 अगस्त 1993 की अधिसूचना के अनुसार पासपोर्ट की वैधता केवल एक वर्ष तक सीमित की जाती है।

स्वतंत्र वार्ता

गुरुवार, 6 नवंबर- 2025

बाड़े में घुटती हाथियों की जिंदगी

दिल्ली के चिड़ियाघर में शंकर नाम के एक हाथी की मात्र 29 साल की उम्र में मौत हो गई। शंकर नाम का यह हाथी जिम्बाब्वे से भारत लाया गया था। लेकिन यहां के कंक्रीट के बाडे में अकेलेपन के एहसास में हुई घुटन से भरी जवानी में ही उसने दम तोड दिया। देखा जाए तो विशालकाय हाथी बेहद संवेदनशील होते हैं। इसलिए अकेलापन उन्हें तोड़ कर रख देता है। बता दें कि सिर्फ 26 महीने का था शंकर, जब 1998 में जिम्बाब्वे से उड़ान भरकर भारत लाया गया था। पूर्व राष्ट्रपति डॉ. शंकर दयाल शर्मा को डिप्लोमैटिक गिफ्ट के तौर पर मिले इस छोटे हाथी को नाम भी उन्हीं के नाम पर दिया गया था। दिल्ली चिडियाघर के बाड़े में कदम रखते समय उसके साथ उसकी साथी मादा हाथी बोंबाई भी थी। लेकिन 2001 में बोंबाई के अचानक गुजर जाने के बाद शंकर की दुनिया जैसे वीरान हो गई। जानकारों के अनुसार अफ्रीकी हाथी खुले मैदानों में 20 से 50 किलोमीटर रोज चलने के आदी होते हैं, इतना चलने से उनकी सेहत भी अच्छी रहती है। लेकिन शंकर दिल्ली में 4,930 वर्ग मीटर की कंक्रीट की दुनिया के घेरे में बंधा था। उसके पांव जंजीरों में जकड़े रहते थे और अकेलापन उसके भीतर घुसकर उसे काटने दौडता था। उसके हालात से एनिमल राइट्स एक्टिविस्टों ने बार-बार चेताया था। लेकिन शंकर के लिए कोई साथी नहीं मिल सका। साथी के अभाव में वह अकेले ही बाड़े में घुटता रहता था। इसी गम में उसने खाना छोड़ दिया था। आखिर 17 सितंबर को उसने खाना पूरी तरह से छोड़ दिया। डॉक्टरों ने उसे बचाने की पूरी कोशिश की, लेकिन 29 साल की उम्र में शंकर की सांसें थम गईं। हालांकि अफ्रीकी हाथियों की औसत उम्र 70 साल की होती है। उस समय उसका वजन करीब 4,000 किलो था। 1998 में जब उसने पहली बार भारत की मिट्टी छुआ था, तो वजन केवल 450 किलो था। ऐसी ही कहानी देश के इकलौते अफ्रीकी हाथी रैंबो की भी है, जो अब 33 साल का हो चुका है और मैसूर, कर्नाटक के जू में बिल्कुल अकेला ही रहता है। उसके माता-पिता टिंबू और जॉम्बी जर्मनी से मैसूर लाए गए थे। आज उसके पास कोई साथी नहीं है। अफ्रीकी हथिनी उसके लिए नहीं लाई जा सकी है। जानी-मानी एलिफैंट रिसर्चर सुपर्णा द्विवेदी के अनुसार हाथी बेहद संवेदनशील प्राणी है। उनके कुनबे में दादी, मां, चाची, कजन और भाई-बहन होते हैं, कभी-कभी इनके कुनबे में सदस्यों की संख्या 60 तक भी पहुंच जाती है। कभी छोटे-छोटे ग्रुप में बंटते हैं, फिर मिलते हैं। मिलते समय सूंडें लिपटती हैं। छूकर, सहलाकर और पास रहकर ही वे अपना प्यार जताते हैं। अकेलापन उन्हें भीतर तक झकझोर देता है। पेटा इंडिया की डायरेक्टर खुशबू गुप्ता कहती हैं कि देश भर के जू का दौरा करते समय हमने हाथियों की हकीकत देखी। वे कंक्रीट के फर्श पर बंधे रहते हैं। बार-बार एक ही जगह चलना, सिर हिलाना, सूंड झूलाना- यह सब उनके भीतर की बेचैनी और दर्द को दर्शाता है। साल 2009 में सेंट्रल जू अथॉरिटी ने साफ निर्देश दिया था कि अब चिड़ियाघरों में हाथियों को नहीं रखा जाएगा। लेकिन दुर्भाग्य से यह नीति सिर्फ कागजों तक ही रह कर सिमट गई। अब समय आ गया है कि हाथियों को जू से छुटकारा दिलाने के लिए सिविल सोसाइटी के साथ ही लोगों को भी आगे आना होगा।

वृद्धावस्था पेंशन योजना की राशि में बढ़ोतरी की जाए

अरविंद रावल

भारतीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा अपने अब तक के कार्यकाल में देश के सभी वर्ग के गरीब मध्यम वर्ग के लोगों के बेहतर जीवन यापन के लिए निशुल्क आवास, खाद्यान्न व्यवस्था के साथ साथ पाच लाख रुपये तक के मुफ्त इलाज की व्यवस्था के आलावा और भी कई एक से बढ़कर एक लोक कल्याणकारी योजनाएं लागू की गई हे जिससे न केवल पुरे देश की जनता बल्कि विपक्ष के धुर मोदी विरोधी राजनीतिक लोग भी प्रधानमंत्री मोदी की तारीफ गाहे बगाहे कर ही जाते हे ! बेशक केंद्र सरकार की हर योजना का लाभ आज देश के सुदूर ग्रामीण अंचलों तक में रहने वाले लोग विभिन्न माध्यमों से ले रहे हे ! पहले भारत गावो में बस्ता था झोपडिया और कच्चे घर गावो की बड़ी पहचान हुआ करते थे लेकिन मोदी सरकार के कार्यकाल में गावो की तस्वीर बड़ी तेजी से बदलने लगी हे ! अब गावो से शेने शेने झोपड़ियो और कच्चे मकानों का युग अतीत होते जा रहा हे ! प्रधानमंत्री मोदी जी की निशुल्क आवास योजना से देश के हर गांव में पक्के मकान अब गांवों की पहचान बनते जा रहे हे ! गावो में ही अब शहरों की तरह नलजल योजना , पक्की सड़के, सोलर उर्जा से बिजली , चिकित्सा सुविधा , शिक्षा व्यवस्था के साथ ही कई तरह की सुविधाए उपलब्ध होना यह दर्शाता हे कि हमारा देश भी विकसित भारत के पथ पर अग्रसर हे ! बेकोल मोदी सरकार के कार्यकाल में जनहित और राष्ट्रहित के बेहतर कार्य किये जा रहे हे लेकिन इसे इस देश के बुजुर्ग पीढी का दुर्भाग्य कहा जाये या विडंबना कही कही जाये कि आधुनिक भारत में अपर धन सम्पदा सुख सुविधाओ के साधन होने के बावजूद भी देश की अधिकांश युवा जवा पीढी अपने ही घर के बुजुर्गो की अनदेखी करती जा रही हे और दिनोंदिन हालत कुछ ऐसे देश में बनते जा रहे हे कि अपने घर में वृद्ध बुजुर्ग अकेले किसी कोने में लावारिस सा पड़ा हुआ हे या फिर अपने ही घर से अपने ही लोगो के द्वारा रुखसत किया जा रहा हे ! बेशक बुजुर्गों के बारे में यह सब सुनने में अच्छा नहीं लगता हे लेकिन यही वर्तमान के विकसित भारत की अधिकांश उच्च शिक्षित घरानों की कड़वी सच्चाई भी हे जिसे कोई झुठला नही सकते हे ! आज न केवल देशभर के महानगरो ,नगरो, कस्बो में बल्कि अब तो गावो में भी बड़ी संख्या में भी यह आसानी से देख सकते हे कि बुजुर्ग अपनों के ही सताये हुए अपनी किस्मत पर बिलखते दिखाई देते हे ! आज के आधुनिक युग में सबसे ज्यादा यदि कोई परेशान हे तो वह हे देश में बुजुर्ग लोग ! भारत में एक आकलन करवाया जाये तो महज तीस प्रतिशत ही देश के बुजुर्ग भाग्यवान होंगे जिनको अपने ही घर में अपने ही लोगों से अच्छी परवरिश मिलती होगी ! इन तीस प्रतिशत खुशकिस्मत बुजुर्गो में अधिकतर वही बुजुर्ग होंगे जिनके पास अपना खुद का गाड़ी बंगला बेंक बेलेंस होगा जिसकी वजह से उन्हें अच्छी परवरिश मिलती हे !

देश में पचास प्रतिशत बुजुर्ग लोगों की हालत यह हे कि सब कुछ उनका अपना होते हुए भी अपने ही घर में दो रोटी तक प्रेम की नसीब नही होती हे ! अपनों से बेदखल किये बुजुर्गो की हालत देश में और भी बहुत दयनीय होती जा रही हे उनका शारीरिक लाचार अवस्था में बुढ़ापा कितना पीड़ा दायक बीतता हे यह हम महसूस भी नही कर सकते हे ! आज देश में अधिकांश बुजुर्गों के नाम की सरकारी योजनाओं का लुफ्त उनके अपने या भ्रष्ट मानसिकता वाले लोग उठाते हे ! केंद्र व राज्य सरकारों के सहयोग से बुजुर्गों को दी जाने वाली वृद्धावस्था पेंशन योजना की राशि वर्तमान महंगाई के इस दौर में ऊँट के मुह में जीरे के समान हे जिससे बुजुर्गों के एक कप एक माह के दूध की पूर्ति भी सम्भव नही होती हे ! जिस उम्र में बुजुर्गों को अपनी आवश्यकता की वस्तुओं की सख्त जरूरत होती हे उस उम्र में हमारे देश के बुजुर्गों के हाथ खाली हो जाते हे और उनकी इस आवश्यकता को उनके अपने तक समझ नही पाते हे ! आज देश में जिन बुजुर्गों के हाथ वृद्धावस्था में खाली हो जाते हे या उनके अपनों द्वारा कर दिए जाते हे उन बुजुर्गों को घर के ही लोगों द्वारा एकाकी जीवन जीने पर मजबूर कर दिया जाता हे !

दुनिया में कैंसर का बढता दायरा

निरंकार सिंह

आधुनिक चिकित्सा विज्ञान और दवाओं ने कई असाध्य रोगों पर विजय प्राप्त कर ली है और कुछ को रोक दिया है। लेकिन खतरनाक कैंसर सभी चिकित्सा विधियों को चकमा देकर आगे बढ़ने वाला रोग साबित हुआ है। पिछले 20 सालों में दुनिया भर में कैंसर के मरीजों की संख्या दोगुंनी हो गयी है। विश्व स्वास्थ्य संगठन का अनुमान है कि साल 2050 में कैंसर के नए रोगियों की संख्या 3.5 करोड़ से अधिक हो जाएगी, जो 2022 के मुकाबले 77 फीसदी अधिक होगी विश्व स्वास्थ्य संगठन की कैंसर एजेंसी, इंटरनेशनल एजेंसी फॉर रिसर्च ऑन कैंसर (आईएआरसी) ने कैंसर के वैश्विक बोझ का नवीनतम अनुमान जारी किया है। डब्ल्यूएचओ ने 115 देशों के सर्वेक्षण के परिणाम प्रकाशित किए हैं, जिसमें दिखाया गया है कि अधिकांश देश सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज (यूएचसी) में कैंसर रोगियों पर पर्याप्त खर्च नहीं किया जा रहा है। आईएआरसी के आंकड़े बताते हैं कि 2022 में लगभग दो करोड़ कैंसर के नए मामले

सामने आए और कैंसर की वजह से 97 लाख लोगों की मौत हुई। अकेले भारत में 1,413,316 नए मामले दर्ज किए गए, जिनमें महिला रोगियों का अनुपात अधिक है। कैंसर के नये इलाजां में जहां इम्यूनोथेरेपी एक बड़ी उम्मीद के रूप में देखी जा रही है वहीं कुछ परम्परागत तौर तरीकों में बड़े बदलाव से भी इस जानलेवा बीमारी को काबू में करने की कोशिशें लगातार जारी हैं। आम तौर पर, कैंसर की दर उन देशों में सबसे ज़्यादा होती है, जिनकी आबादी की जीवन प्रत्याशा, शिक्षा का स्तर और जीवन स्तर सबसे ज़्यादा होता है। लेकिन कुछ कैंसर के प्रकारों,

जैसे कि गर्भाशय ग्रीवा के कैंसर के लिए, इसके विपरीत होता है, और उन देशों में घटना दर सबसे ज़्यादा होती है, जिनकी आबादी इन मापदंडों पर कम रैंक करती है।एक अनुमान के अनुसार साल 2025 तक दुनियाभर में किसी न किसी प्रकार के कैंसर से पीड़ित लोगों की संख्या दो करोड़ तक पहुंच सकती है.भारत में कैंसर के मामले चिंताजनक रूप से बढ़ रहे हैं, तथा आनुवंशिक, जीवनशैली, आहार, पर्यावरण और स्वास्थ्य देखभाल कारकों के जटिल अंतर्संबंध के कारण कुछ प्रकार के कैंसर अधिक प्रचलित हो रहे हैं। विशेषज्ञ चेतावनी देते हैं कि युवा भारतीय भी उन कैंसरों से तेजी से प्रभावित हो रहे हैं जो पारंपरिक रूप से वृद्ध आबादी को प्रभावित करते रहे हैं। जागरूकता की कमी, देर से निदान और सामाजिक कलंक के कारण परिणाम और भी बदतर होते जा रहे हैं।

लेकिन जैसे-जैसे औषधि विज्ञान ने वैक्सीन के ज़रिए कई बीमारियों को रोकने में सफलता पाई है, वैसे ही यह आशा भी जगी है कि इनके ज़रिए कैंसर का इलाज भी संभव हो पाएगा.इस दिशा में तरक्की की ख़बरें भी आ रही हैं, अप्रैल 2024 में ब्रिटेन में पहली बार ट्रायल के तौर पर मेलानोमा कैंसर वैक्सीन मरीज़ों को दी गई.फेफड़ों के कैंसर से लड़ने के लिए बनाई गई एक वैक्सीन का सात देशों में प्रयोग या ट्रायल के तौर पर इस्तेमाल किया जा रहा है.वहीं फ़्लोरिडा यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिकों ने एक ऐसी वैक्सीन बनाई है जिससे सबसे सामान्य किस्म के ब्रेन

कैंसर की रोकथाम हो सकती है दरअसल इलाज के इन नए तरीकों की शुरुआत कोविड महामारी के दौरान बनाई गई वैक्सीन से हुई है. ख़ास तौर पर वो वैक्सीन जो एमआरएनए (mRNA) तकनीक पर आधारित है.

भारत न्रे कैंसर के इलाज का एक स्वदेशी तरीका ईजाद किया गया है, जिसे दुनिया में सबसे सस्ता बताया गया है। अब तक सीएआर टी-सेल थैरेपी से कैंसर के इलाज को सुगम और किफायती बनाया गया है। लेकिन भारत में तैयार की गई थैरेपी का नाम है- 'नेक्ससीएआर19 सीएआर टी-सेल थैरेपी'। आईआईटी बॉम्बे और टाटा मेमोरियल सेंटर ने मिलकर जीन आधारित इस इलाज को तैयार किया है। आईआईटी बॉम्बे के निदेशक प्रोफेसर शुभाशीष चौधरी ने कहा कि विदेश में इस इलाज की कीमत तकरीबन चार करोड़ रुपये है, जबकि भारत में यह खर्च लगभग 30 लाख रुपये होगा।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने पिछले साल इसे लॉन्च किया था। कार्यक्रम आईआईटी बॉम्बे में हुआ था। राष्ट्रपति मुर्मू ने कहा, भारत की पहली जीन थैरेपी की शुरुआत कैंसर के खिलाफ हमारी लड़ाई में एक बड़ी उपलब्धि है। मेक इन इंडिया की पहल पर बनी इस थैरेपी के बारे में एक्सपर्ट का कहना है कि ये दुनिया की सबसे सस्ती थैरेपी है, जिससे आने वाले समय में कैंसर से लड़ने में देश को मजबूती मिलेगी। सीएआर टी-सेल इम्यूनोथैरेपी और जीन थैरेपी का एक रूप है। इसमें वाइट ब्लड सेल्स और टी सेल्स को निकालकर फिर से बॉडी में अलग-अलग तरीके से

डाला जाता है। टी-सेल्स को कैंसर से लड़ने के लिए प्रोग्राम किया जाता है। इसको इस तरह समझें, जैसे युद्ध पर जाने से पहले सेना को ट्रेनिंग दी जाती है। वैसे ही इस थैरेपी में हमारे शरीर की ही सेल्स को पावरफुल बनाकर कैंसर से लड़ने के लिए तैयार किया जाता है। वैकल्पिक चिकित्सा के क्षेत्र में कई दशकों से काम करने वाली संस्था डीएस रिसर्च सेंटर ने पोषक ऊर्जा से कैंसर की औषधि तैयार करके यही काम किया है। वैज्ञानिक परीक्षणों में भी इस औषधि के नतीजे बेहतर पाये गये हैं। कोलकाता के जाधवपुर विश्वविद्यालय के नैदानिक अनुसंधान केन्द्र (सीआरसी) के निदेशक डा. टी.के. चटर्जी के अनुसार- 'डीएस रिसर्च सेंटर की पोषक ऊर्जा से तैयार की गई औषधि सर्वपिष्टी के पशुओं पर किये गये परीक्षण के परिणाम उत्साहजनक पाये गये हैं। यदि पशुओं के शरीर पर सर्वपिष्टी का प्रयोग किये जाने के बाद सीआरसी ने उत्साहजनक परिणाम प्राप्त किये हैं तो ऐसे ही परिणाम इसे मानव शरीर पर प्रयोग करने से भी प्राप्त किये जा सकते हैं, जो कैंसर उपचार के इतिहास में युगान्तकारी घटना होगी। सीआरसी विभिन्न रोगों के लिए दवाईयों का नैदानिक परीक्षण करता है। इसी सिलसिले में उन्होंने सर्वपिष्टी का भी नैदानिक परीक्षण किया था। किसी दवाई की प्रभावकारिता का स्तर सुनिश्चित करने के लिए सामान्यतः दो प्रकार का परीक्षण किया जाताहै-पहला, औषधीय (फार्माकोलॉजिकल) परीक्षण और दूसरा, विष विद्या सम्बन्धी (टोक्सीकोलॉजिकल) परीक्षण। ये परीक्षण आयातित सफेद चूहों पर किये गये। पशु शरीर में कैंसर कोशिकाओं का प्रविष्ट कराया गया औरजब ट्यूमर निर्मित हो गया तब हमने दवा देना शुरू किया। 'पोषकऊर्जा' के परीक्षण की स्थिति में 14 दिनों बाद जो प्रतिक्रियायें देखी गयीं उनमें कोशिकाओं की संख्या स्पष्ट रूप से कम होना शुरू हो गई थीं। पशु शरीर में कोई अल्सर पैदा नहीं हुआ। ट्यूमर विकास दर 46 प्रतिशत तक कम हो गई थी और दवाई की विषाक्तता लगभग शून्य थी। ऐसे सकारात्मक परिणाम हाल के समय में नहीं देखे गये थे। इस औषधि में कैंसर को रोकने और उससे लड़ने की अपरिमित संभावनाएं हैं।'कैंसर के नये इलाज़ों में जहां इम्यूनोथेरेपी एक बड़ी उम्मीद के रूप में देखी जा रही है वहीं कुछ परम्परागत तौर तरीकों में बड़े बदलाव से भी इस जानलेवा बीमारी को काबू में करने की कोशिशें लगातार जारी हैं। इम्यूनोथेरेपी एक प्रकार का कैंसर उपचार है। यह प्रतिरक्षा प्रणाली को बढ़ावा देने और शरीर को कैंसर कोशिकाओं को खोजने और नष्ट करने में मदद करने के लिए शरीर द्वारा या प्रयोगशाला में बनाये गये पदार्थो का उपयोग करती है। इम्यूनोथेरेपी कई अलग-अलग प्रकार के कैंसर का इलाज अब होने लगा है। उधर कैंसर के इलाज में भारतीय मसाले बेहद कारगर हैं। आईआईटी मद्रास के अनुसंधानकर्ताओं ने कैंसर के इलाज के लिए इनका पेटेंट करवाया है। 2028 तक बाजार में उपलब्ध होने की उम्मीद है।

रोहन बोपन्ना: टेनिस का ऋषि, जिसने उम्र नहीं, ऊँचाई साधी

प्रो. आरके जैन

जब रैकेट की गूंज थमती है और कोर्ट की रेखाएं धुंध में खोने लगती हैं, तब एक युग अपनी अंतिम सलामी देता है। रोहन बोपन्ना – भारतीय टेनिस का वह ध्रुवतारा, जिसने असंभव को संभव बनाया, अब अपने रैकेट को विश्राम दे रहा है। 1 नवंबर 2025 को, 45 वर्ष की आयु में, उन्होंने सोशल मीडिया पर लिखा, "टेनिस मेरा जीवन रहा – इसने मुझे उद्देश्य दिया, ताकत दी, और विश्वास सिखाया। यह अलविदा नहीं, बस एक नया सफर है।" यह केवल एक खिलाड़ी का संन्यास नहीं, बल्कि भारतीय खेल के स्वर्णिम युग का अवसान है। कूर्ग के कॉफी बागानों से विश्व के सबसे बड़े कोर्ट तक, बोपन्ना ने हर सर्व के साथ सपनों को साकार किया। 43 की उम्र में ग्रैंड स्लैम जीतना, विश्व रैंकिंग में शिखर छूना – यह कोई सपना नहीं, बल्कि उनकी मेहनत और जुनून की जीवंत गाथा है।

रोहन बोपन्ना की कहानी मेहनत, जुनून और अडिग संकल्प की जीवंत मिसाल है। 4 मार्च 1980 को कर्नाटक के कोडागू में जन्मे इस नक्षत्र ने 11 वर्ष की आयु में टेनिस को अपना धर्म बना लिया। उनके पिता एम.जी. बोपन्ना ने कॉफी बागानों की हरियाली के बीच एक टेनिस कोर्ट गढ़ा, जहां रोहन ने रैकेट के साथ अपने सपनों को पहली सांस दी। सिंगल्स की प्रारंभिक बाधाओं ने उन्हें डबल्स की राह दिखाई, और यहीं से उनकी उड़ान ने विश्व को छू लिया। 2003 में प्रोफेशनल टेनिस की दुनिया में कदम रखते ही 22 साल का एक ऐसा सफर शुरू हुआ, जिसने 26 एटीपी डबल्स खिताब, जिनमें 6 मास्टर्स 1000 शामिल हैं, भारत की झोली में डाले। 2017 में गैब्रिएला डाब्रोवस्की के साथ फ्रेंच ओपन मिक्स्ड डबल्स जीतकर वे भारत के चौथे ग्रैंड स्लैम विजेता बने। लेकिन 2024 में, 43 की उम्र में, मैथ्यू एब्डेन के साथ ऑस्ट्रेलियन ओपन पुरुष डबल्स खिताब जीतकर उन्होंने इतिहास रच दिया – ओपन एरा के सबसे उम्रदराज ग्रैंड स्लैम चैंपियन। उसी साल डबल्स में विश्व नंबर एक की रैंकिंग हासिल कर उन्होंने एक और कीर्तिमान स्थापित किया – टेनिस इतिहास का सबसे उम्रदराज नंबर एक। रोहन बोपन्ना का करियर महज ट्रॉफियों का खजाना नहीं, बल्कि प्रेरणा का एक अथाह सागर है, जो हर सपने को हकीकत में बदलने की ताकत देता है। 38 एटीपी फाइनल्स, 15 अलग-अलग जोड़ीदारों के साथ कोर्ट पर उतरे, और हर बार एक नया ज्वार लाए। ऐसम-उल-हक कुरेशी के साथ 'इंडो-पाक एक्सप्रेस' बनाकर 2010 यूएस ओपन फाइनल तक का सफर तय किया, जो सिर्फ खेल नहीं, बल्कि शांति और भाईचारे का अमर संदेश था। 2011 में कुरेशी के साथ पेरिस मास्टर्स जीतकर पहला मास्टर्स खिताब अपने नाम किया। 2012 और 2015 में एटीपी फाइनल्स के फाइनल में पहुंचकर दुनिया को अपनी धमक दिखाई। 2023 में, 43 की उम्र में, इंडियन वेल्स मास्टर्स जीतकर सबसे उम्रदराज मास्टर्स चैंपियन बनकर इतिहास रचा। चार ओलंपिक में भारत का परचम लहराया, 2016 रियो में सानिया मिर्जा के साथ मिक्स्ड डबल्स में चौथा स्थान हासिल किया। डेविस कप में 2002 से 2023 तक भारत के लिए लड़े, आखिरी टाई मोरक्को के खिलाफ खेली। 2018 और 2023 के एशियन गेम्स में स्वर्ण पदक जीतकर देश का गौरव बढ़ाया।

रोहन बोपन्ना की ताकत उनकी अडिग शारीरिक और मानसिक दृढ़ता में निहित थी। 40 की उम्र, जब अधिकांश खिलाड़ी कोर्ट को अलविदा कह चुके होते हैं, रोहन ने योग और माइंडफुलनेस के जरिए खुद को पुनर्जनन किया। 2020 में घुटने की गंभीर चोट ने उनके करियर को लगभग लील लिया था, मगर बेटी त्रिधा के जन्म ने उनकी आत्मा में नया जोश फूंका। मैं चाहता था कि मेरी बेटी मुझे कोर्ट पर विजयी देखे, उन्होंने दृढ़ता से कहा। पत्नी सुप्रिया, जिन्हें उन्होंने जीवन की सबसे बड़ी शक्तिर बताया, हर कदम पर उनकी ढाल बनीं। कोच स्कॉट डेविडॉफ के 12 साल के मार्गदर्शन ने उनके खेल को बुलंदियों तक पहुंचाया। 'स्टॉप वॉर स्टार्ट टेनिस' कैंपेन के जरिए ऐसम-उल-हक कुरेशी के साथ मिलकर उन्होंने टेनिस को सामाजिक बदलाव का हथियार बनाया, जिसके लिए 2010 में प्रतिष्ठित आर्थर एश ह्यूमैनिटेरियन अवॉर्ड से नवाजा गया। यह रोहन का वह चेहरा है, जो कोर्ट की सीमाओं से परे, मानवता के लिए चमकता है। रोहन बोपन्ना का भारतीय टेनिस में योगदान एक ऐसी अमर गाथा है, जिसकी चमक कभी फीकी नहीं पड़ेगी। जब लिएंडर पेस और महेश भूपति का दौर धीमा हुआ, और सानिया मिर्जा चोटों से जूझ रही थीं, तब रोहन ने भारतीय टेनिस को विश्व मंच पर न केवल जीवित रखा, बल्कि उसे नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया। बैंगलोर में स्थापित रोहन बोपन्ना टेनिस अकादमी और यूटीआर प्रो टेनिस के जरिए उन्होंने ग्रामीण और छोटे शहरों के बच्चों के लिए सपनों के द्वार खोले। रोहन ने डबल्स को भारत में एक नई पहचान दी, आनंद अमृतराज के शब्द उनके प्रभाव की गहराई बयां करते हैं। अर्जुन अवॉर्ड (2012) और पद्म श्री (2024) जैसे सम्मान उनके गौरवशाली सफर के साक्षी बने। मगर उनके संन्यास ने डबल्स में एक ऐसी खाई छोड़ी है, जिसे भरना युवा सितारों जैसे शिवा कृष्णन या अन्य के लिए चुनौती होगा।

पेरिस मास्टर्स 2025 में अलेक्जेंडर बुलिक के साथ आखिरी मैच में हार के बाद, जब रोहन कोर्ट से लौटे, उनकी आंखों में हार नहीं, बल्कि संतुष्टि की चमक थी। यह अंत नहीं, एक नई शुरुआत है, उनके शब्दों में दृढ़ विश्वास गूंजा। संन्यास के बाद वे कोचिंग और मेंटरिंग के जरिए नई प्रतिभाओं को तराशने का संकल्प लिए हैं। अपनी अकादमी के माध्यम से वे भविष्य के सितारे गढ़ेंगे, मगर निजी जीवन में बेटी त्रिधा और पत्नी सुप्रिया के साथ अनमोल पल बिताना चाहते हैं। भारत के लिए खेलना मेरा सर्वोच्च गर्व था, उनकी अंतिम बातें दिलों में गहरे उतर गईं। रोहन बोपन्ना का संन्यास भारतीय टेनिस के एक स्वर्णिम अध्याय का स्मरणीय समापन है, किंतु उनकी विरासत एक ऐसी प्रेरणा की लौ है, जो युगों तक देदीप्यमान रहेगी। कूर्ग के एक साधारण गांव से निकलकर वैश्विक मंच पर अपनी छाप छोड़ने वाला उनका असाधारण सफर यह सिखाता है कि दृढ़ संकल्प और जुनून के आगे उम्र की सीमाएं बौनी हैं। उनका रैकेट भले ही अब खामोश हो, पर उसकी गूंज हर उस युवा दिल में गूंजेगी, जो टेनिस कोर्ट पर अपने सपनों को साकार करने की हिम्मत रखता है। रोहन ने न केवल भारत का नाम विश्व पटल पर ऊंचा किया, बल्कि हर उस व्यक्ति को प्रेरित किया, जो असंभव को संभव बनाने का साहस रखता है।

थैंक गॉड, मैं कुंवारा हूं

डॉ. सुरेश कुमार

वाह! क्या खबर है! इसे पढ़कर तो अपनी बची-खुची हिम्मत ने भी जवाब दे दिया है। थैंक गॉड, मैं कुँवारा हूँ। अगर शादीशुदा होता, तो इस समय ये पंक्तियाँ लिखने की बजाय भगवान चित्रगुप्त के दरबार में हाज़िरी लगा रहा होता और उनसे अपनी 'असामयिक मृत्यु' का कारण पूछ रहा होता। वही तो हैं जो इस 'पहचान के संकट' की घड़ी में मदद कर सकते थे। अपनी खाताबही देखकर बता सकते थे कि मेरी 'एक्सपायरी डेट' तो अगले चालीस साल बाद की थी, फिर ये 'अर्ली डिलीवरी' का ऑर्डर किसने प्लेस कर दिया? समस्या सिर्फ मेरी नहीं होती, शर्मा जी, वर्मा जी, खान साहब और मिस्टर डिसूजा, सबको यही फेस करनी पड़ रही होती। बल्कि मिस्टर डिसूजा को तो और भी ज़्यादा, क्योंकि उनके यहाँ तो आत्मा की आवाजाही का कोई सेंट्रलाइज्ड डेटाबेस ही नहीं है। यमलोक का आईटी डिपार्टमेंट तो वैसे भी सिर्फ सनातनियों का रिकॉर्ड मेंटेन करता है। बहरहाल, अपन के लिए बड़ा सवाल ये है कि अगर यमराज के दूत वक्त से पहले दरवाज़े पर आ खड़े होते तो अपन क्या करते? शायद उनसे कहते, ₹भाई साहब, अपॉइंटमेंट तो अगले जन्म का था, आप ज़रा जल्दी नहीं आ गए? गिव-अप ही कर देता। भाड़ में जाए ये सात जन्मों का साथ। जब एक जन्म का साथ ही इतना रिस्की हो गया हो, तो अगले छह जन्मों का कॉन्ट्रैक्ट साइन करने की हिम्मत कौन करे? पहले के ज़माने में पति परमेश्वर होते थे, अब 'परमानेंट सोर्स ऑफ़ इंश्योरेंस क्लेम' हो गए हैं। पत्नियाँ अब करवा चौथ का व्रत नहीं रखतीं, बल्कि यमराज को सुपारी देती हैं। पहले वे पति की लंबी उम्र की कामना करती थीं, अब यमदूतों के साथ मिलकर उनकी 'लॉन्ग जर्नी' की प्लानिंग करती हैं। बदला क्या है? कुछ नहीं, बस प्रेम का स्वरूप बदल गया है। पहले प्रेम त्याग और समर्पण था, अब यह प्लानिंग और एक्ज़ीक्यूशन है। करप्शन, महँगाई, बेरोज़गारी तो अपनी जगह हैं ही, अब तो घर की चारदीवारी भी सुरक्षित नहीं रही। बाहर निकलो तो सिस्टम का डर, घर में रहो तो जीवनसाथी का। अमीर और अमीर हो रहे हैं, गरीब और गरीब, और हम जैसे शादीशुदा मर्द 'स्वर्गीय' होने की कतार में लगे हैं। जितनी बार पत्नी 'बाबू, शोना' बोले, समझ लो यमलोक का टिकट कन्फर्म होने की संभावना उतने गुना बढ़ जाती है। दोनों में एक ख़ास क़िस्म का को-रिलेशन है। एक दिन सारी जायदाद उनकी होगी, पति तो बस एक एंट्री बनकर रह जाएगा चित्रगुप्त की डायरी में।

भ्रम और घबराहट कल्लू बाबू में भी हैं, मगर वे शादीशुदा होने के नाते पलायन में भरोसा नहीं रख सकते। पिछले हफ़्ते मिले तो चेहरे पर बारह बजे हुए थे। बोले – 'एतना जल्दी घबराइएगा नहीं मिसिरबाबू। शादी तो मेहरारू के हाथ में है। निभाना न निभाना उसी के हाथ में है। अब तो बस 'ऑल इज़ वेल' बोलकर जीते रहिए।' मैंने कहा, 'कल्लू बाबू, ऑल इज़ वेल कैसे बोलें? आजकल अख़बार में ख़बर कम, श्रद्धांजलि ज़्यादा छपती है। हर दूसरी ख़बर में एक पति, एक पत्नी और एक 'वो' होता है। ये 'वो' ही तो असली विलेन है, जो हमारे-आपके जैसे शरीफ़ आदमियों की सीधी-सादी गृहस्थी में 'बिग बॉस' का ट्विस्ट ले आता है।' कल्लू बाबू ने गहरी साँस ली, 'का करें मिसिरबाबू, प्रेम अंधा होता है, पर आजकल का प्रेम तो अंधा होने के साथ-साथ ख़तरनाक भी हो गया है। उसे जायदाद भी दिखती है और रास्ते का काँटा भी। अपन तो अब घर में चाय भी फूंक-फूंककर पीते हैं, का पता उसमें चीनी की जगह चूहे मारने की दवा मिला दी हो।' उनकी आँखों में जो ख़ौफ़ था, वो किसी आतंकवादी के ख़ौफ़ से कम नहीं था। इस बीच यमलोक में इमरजेंसी मीटिंग चल रही थी। चित्रगुप्त अपने आईपैड पर ज़ूम कॉल में सभी यमदूतों की क्लास ले रहे थे। उनकी आवाज़ में ग़ुस्सा और बेचारगी का कॉकटेल था। व्हाट द हेल इज़ गोइंग ऑन डाउन देयर? हमारे मंथली टारगेट्स का पूरा चार्ट बिगड़ गया है। जितने 'शेड्यूल्ड पिक-अप्स' नहीं हैं, उससे ज़्यादा 'अनशेड्यूल्ड अराइवल्स' हो रहे हैं।

वैज्ञानिक शिक्षा,ज्ञान कसौटी पर

संजीव ठाकुर

अंधविश्वास, यह शब्द अपने आप में ही उस अंधकार की स्मृति जगाता है जहाँ बुद्धि, तर्क और विज्ञान का प्रकाश पहुंचते-पहुंचते थक जाता है। दुर्भाग्य से हमारा समाज आज भी उसी अंधकार के कुछ कोनों में सिमटा दिखाई देता है। प्रश्न यह है कि क्या हम सचमुच इक्कीसवीं सदी के वैज्ञानिक युग में हैं, या फिर मानसिक रूप से अब भी किसी प्राचीन युग के भ्रमलोक में भटक रहे हैं?

अशिक्षा और अज्ञानता ने भारतीय समाज में अंधविश्वास और धार्मिक कट्टरता के बीज इतने गहरे बो दिए हैं कि वे आज वटवृक्ष बन चुके हैं। यदि कोई अशिक्षित व्यक्ति किसी मिथकीय धारणा या अलौकिक शक्ति पर विश्वास करता है, तो यह कुछ समय के लिए क्षम्य प्रतीत हो सकता है, पर जब शिक्षित और तथाकथित बुद्धिजीवी वर्ग भी बिना विचार किए इन्हीं अंधविश्वासों के पीछे भागने लगता है, तब यह हमारे समाज की बौद्धिक पतनशीलता का संकेत बन जाता है। शिक्षा केवल अक्षर ज्ञान नहीं, बल्कि विवेक का स्रोत है जो मनुष्य को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाती है। यही शिक्षा तर्कसंगत सोच, वैज्ञानिक दृष्टि और स्वतंत्र विचार की क्षमता प्रदान करती है। जब विज्ञान ने यह सिद्ध किया कि पृथ्वी चपटी नहीं, गोल है, तब मानव ने अपने विश्वास को अनुभव और प्रमाण के आधार पर बदला। यही परिवर्तनशीलता सभ्यता की पहचान है।

शहीद भगत सिंह ने अपने संगठन "नौजवान भारत सभा" के घोषणा पत्र में लिखा था — "धार्मिक अंधविश्वास और कट्टरता हमारी प्रगति के सबसे बड़े शत्रु हैं।" यह वाक्य आज भी उतना ही प्रासंगिक है। भगत सिंह का विश्वास था कि केवल नई सोच वाले युवा ही इस रूढ़ समाज में क्रांति ला सकते हैं। उनकी यह आस्था आज भी प्रेरक है क्योंकि युवा ही वे दीपक हैं, जिनके विचारों की लौ से अंधविश्वास के अंधकार को मिटाया जा सकता है।

अंधविश्वास और आडंबर से लड़ाई का सबसे सशक्त अस्त्र शिक्षा है। शिक्षा के साथ विज्ञान और तकनीक वह दो ध्रुव हैं जिनसे होकर मनुष्य अपनी सोच को आधुनिकता की दिशा में विकसित कर सकता है। विज्ञान ने अनेकों मिथकों का भंडाफोड़ किया है, और यह सिद्ध किया है कि तर्कसंगत विचार ही सत्य की कसौटी हैं। आज जब हम चंद्रमा तक पहुँच चुके हैं, जब संचार माध्यमों ने पूरी दुनिया को एक परिवार में बदल दिया है, तब यह सोचने की आवश्यकता है कि क्या बिल्ली के रास्ता काटने से सचमुच हमारा काम रुक जाता है? क्या छींकने से कोई अशुभ घटना घटती है? या फिर कौवे की बोली मेहमान का आगमन संकेतित करती है? इन तमाम अवधारणाओं का कोई वैज्ञानिक आधार नहीं, परंतु इन पर विश्वास करना हमें तर्क से दूर और भ्रम के निकट ले जाता है। यह मनुष्य की जिज्ञासा का नहीं, बल्कि जड़ता का प्रमाण है। अंधविश्वास को सामाजिक स्वीकृति तब मिलती है जब शिक्षित व्यक्ति भी अपने विवेक का प्रयोग करना छोड़ देता है।

सबसे चिंताजनक पक्ष यह है कि आज तंत्र-मंत्र, ज्योतिष और भविष्यवाणी का कारोबार गाँवों से निकलकर महानगरों तक फैल चुका है। लोग अपने जीवन की हर समस्या का समाधान किसी तांत्रिक या "गुरु" से पूछते हैं, जो भय और विश्वास का व्यापार करते हैं। वे भूत-प्रेत, राहु-केतु या कालसर्प दोष के नाम पर भोले लोगों से धन लूटते हैं। विडंबना यह है कि इनका प्रचार अब प्रतिष्ठित टीवी चैनलों और अखबारों में भी खुलेआम होता है, मानो यह कोई वैध उद्योग हो।वास्तव में यह हमारे सामाजिक विवेक पर सबसे बड़ा प्रश्नचिह्न है। यूरोपीय देशों में भी अंधविश्वास के कुछ अंश हैं, पर वहाँ शिक्षा और वैज्ञानिक चेतना ने उसकी जड़ों को कमजोर किया है। भारत में यह जड़ें इसलिए मजबूत हैं क्योंकि शिक्षा अभी भी समान रूप से प्रत्येक व्यक्ति तक नहीं पहुँची है।

यदि हमें सच में एक प्रगतिशील, विवेकशील और जागरूक समाज बनाना है तो प्राथमिक स्तर से ही विज्ञानसम्मत शिक्षा और आलोचनात्मक सोच को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाना होगा। मीडिया और सोशल मीडिया को भी यह जिम्मेदारी निभानी होगी कि वह तर्कहीन विश्वासों के बजाय वैज्ञानिक सोच को प्रोत्साहित करे। अंधविश्वास के खिलाफ सबसे बड़ी लड़ाई विचारों की है तर्क, शिक्षा और साहस की लड़ाई। यह युद्ध तलवार से नहीं, कलम से; आस्था से नहीं, विवेक से; अंधकार से नहीं, प्रकाश से जीता जा सकता है। हमें याद रखना होगा कि किसी भी समाज का भविष्य उसके विचारों पर निर्भर करता है, और विचार तभी विकसित होते हैं जब मनुष्य भय से मुक्त होकर प्रश्न पूछने की क्षमता रखता है।आज आवश्यकता इस बात की है कि हम स्वयं से प्रश्न करें — क्या हम सचमुच स्वतंत्र हैं, यदि हमारे विचार अब भी जंजीरों में जकड़े हैं?

क्या यह आधुनिकता केवल तकनीकी है, या मानसिक भी? यदि उत्तर "नहीं" है, तो हमें स्वयं को पुनः शिक्षित करना होगा।

अंधविश्वास से मुक्त समाज वही होगा जहाँ तर्क, ज्ञान और सत्य का सम्मान होगा। वह दिन ही सच्चे अर्थों में "नवजागरण" का दिन होगा — जब मनुष्य अपने मस्तिष्क की स्वतंत्रता को धर्म, परंपरा या भय के किसी बंधन से मुक्त कर पाएगा।

मार्गशीर्ष माह शुरू

भगवान श्रीकृष्ण को क्यों है प्रिय

मार्गशीर्ष माह का शुभारंभ 6 नवंबर दिन गुरुवार से हो रहा है। मार्गशीर्ष माह को अगहन माह भी कहा जाता है। मार्गशीर्ष माह भगवान श्रीकृष्ण को बेहद प्रिय है। इस माह में भगवान श्रीकृष्ण की पूजा और उनके मंत्रों का जाप करने से मनोकामनाओं की पूर्ति होती है। मार्गशीर्ष माह का संबंध भगवान श्रीकृष्ण के जीवन के सबसे बड़े उपदेशों से भी जुड़ा है, जो आज कलियुग में भी लोगों को राह दिखाता है। आइए जानते हैं कि मार्गशीर्ष माह का शुभारंभ कब से है? मार्गशीर्ष माह भगवान श्रीकृष्ण को प्रिय क्यों है? मार्गशीर्ष माह में व्रत और पूजा के नियम क्या हैं?

मार्गशीर्ष माह का शुभारंभ

पंचांग के अनुसार, मार्गशीर्ष माह के कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा तिथि 5 नवंबर दिन बुधवार को शाम 06 बजकर 48 मिनट से शुरू हो गई है। यह तिथि 6 नवंबर दिन गुरुवार को दोपहर 2 बजकर 54 मिनट तक मान्य रहेगी। ऐसे में उदयातिथि के आधार पर मार्गशीर्ष माह का शुभारंभ 6 नवंबर गुरुवार से है। हिंदी कैलेंडर के सभी माह का समापन पूर्णिमा को होता है। मार्गशीर्ष पूर्णिमा को मार्गशीर्ष माह का समापन होगा। पंचांग के अनुसार, मार्गशीर्ष माह के शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा तिथि 4 दिसंबर को 08:37 ए एम से शुरू होगी और 5 नवंबर को 04:43 ए एम तक रहेगी। ऐसे में मार्गशीर्ष पूर्णिमा 4 दिसंबर को है। 4 दिसंबर को मार्गशीर्ष माह का समापन होगा।

भगवान श्रीकृष्ण को प्रिय है मार्गशीर्ष माह

मार्गशीर्ष माह को भगवान श्रीकृष्ण का स्वरूप माना गया है। भगवान श्रीकृष्ण ने श्रीमद्भगवद्गीता में स्वयं कहा है कि सभी मासों में वह मार्गशीर्ष हैं। इस माह में भगवान श्रीकृष्ण की पूजा और उनके मंत्रों का जाप करने से मनोकामनाएं पूरी होती हैं और मोक्ष की प्राप्ति होती है। इस माह में पूजा पाठ करने से भगवान की कृपा आसानी से प्राप्त हो जाती है।

मार्गशीर्ष माह में गीता जयंती

भगवान श्रीकृष्ण ने महाभारत युद्ध के समय पूरे संसार को गीता का ज्ञान दिया था। उस समय मार्गशीर्ष माह था। मार्गशीर्ष माह में ही गीता जयंती मनाई जाती है। पंचांग के अनुसार मार्गशीर्ष माह के शुक्ल पक्ष की एकादशी तिथि को गीता जयंती मनाते हैं।

मार्गशीर्ष माह में पूजा के नियम

यदि आप यमुना नदी के किनारे रहते हैं तो मार्गशीर्ष माह आपके लिए अत्यंत ही शुभ फलदायी है। मार्गशीर्ष माह के समय यमुना में स्नान करने से सभी कष्ट और दुख मिटते हैं। भगवान श्रीकृष्ण की कृपा प्राप्त होती है।

मार्गशीर्ष माह के समय में जब भी मौका लगे तो आप गीता का पाठ करें। भगवत गीता का पाठ करने से सुख और शांति की प्राप्ति होती है।

मार्गशीर्ष के दिनों में आप शंख में पानी भरकर भगवान श्रीकृष्ण को स्नान कराएं और उस जल को पूरे घर में छिड़क दे। इससे नकारात्मक शक्तियां पास नहीं आती हैं।

मार्गशीर्ष माह में पूजा के समय आप भगवान श्रीकृष्ण और भगवान विष्णु को तुलसी के पत्ते अर्पित करें। ओम नमो भगवते वासुदेवाय मंत्र का जाप करें। हरि कृपा से आपके कार्य सफल सिद्ध होंगे।

नाम जप का भी बड़ा महत्व है। यदि आपको कोई मंत्र याद नहीं है तो आप पूरे मार्गशीर्ष माह में केवल भगवान श्रीकृष्ण के नाम का जाप करें। उनकी कृपा से आपका कल्याण होगा।

मार्गशीर्ष माह की दोनों एकादशी का व्रत रखें। रात्रि जागरण, भजन और कीर्तन करें। इस महीने में फल, भोजन, अन्न, मोरपंख, शंख, चंदन, पीतांबर, तुलसी आदि का दान करें।

कान्हा और कुम्हार की पौराणिक कथा

प्रभु श्री कृष्ण ने गोपियों के साथ बहुत-सी लीला की हैं। श्री कृष्ण गोपियों की मटकी फोड़ते और माखन चुराते और गोपियां श्री कृष्ण का उलाहना लेकर यशोदा मैया के पास जातीं। ऐसा बहुत बार हुआ।

एक बार की बात है कि यशोदा मैया प्रभु श्री कृष्ण के उलाहनों से तंग आ गई और छड़ी लेकर श्री कृष्ण की ओर दौड़ी। जब प्रभु ने अपनी मैया को क्रोध में देखा तो वह अपना बचाव करने के लिए भागने लगे।

भागते-भागते श्री कृष्ण एक कुम्हार के पास पहुंचे। कुम्हार तो अपने मिट्टी के घड़े बनाने में व्यस्त था। लेकिन जैसे ही कुम्हार ने श्री कृष्ण को देखा तो वह बहुत प्रसन्न हुआ। कुम्हार जानता था कि श्री कृष्ण साक्षात परमेश्वर हैं। तब प्रभु ने कुम्हार से कहा कि 'कुम्हार जी, आज मेरी मैया मुझ पर बहुत क्रोधित है। मैया छड़ी लेकर मेरे पीछे आ रही है। भैया, मुझे कहीं छुपा लो।'

तब कुम्हार ने श्री कृष्ण को एक बडे से मटके के नीचे छिपा दिया। कुछ ही क्षणों में मैया यशोदा भी वहां आ गईं और कुम्हार से पूछने लगी - 'क्यूं रे,कुम्हार! तूने मेरे कन्हैया को कहीं देखा है, क्या?' कुम्हार ने कह दिया - 'नहीं, मैया ! मैंने कन्हैया को नहीं देखा।' श्री कृष्ण यह सब बातें बड़े से घड़े के नीचे छुपकर सुन रहे थे। मैया तो वहां से चली गयीं।

अब प्रभु श्री कृष्ण कुम्हार से कहते हैं - 'कुम्हार जी, यदि मैया चली गई हो तो मुझे इस घड़े से बाहर निकालो।'

कुम्हार बोला - 'ऐसे नहीं, प्रभु जी ! पहले मुझे चौरासी लाख यानियों के बन्धन से मुक्त करने का वचन दो।'

भगवान मुस्कुराये और कहा - 'ठीक है, मैं तुम्हें चौरासी लाख योनियों से मुक्त करने का वचन देता हूं। अब तो मुझे बाहर निकाल दो।'

कुम्हार कहने लगा - 'मुझे अकेले नहीं, प्रभु जी ! मेरे परिवार के सभी लोगों को भी चौरासी लाख योनियों के बन्धन से मुक्त करने का वचन दोगे तो मैं आपको इस घड़े से बाहर निकालूंगा।'

प्रभु जी कहते हैं - 'चलो ठीक है, उनको भी चौरासी लाख योनियों के बन्धन से मुक्त होने का मैं वचन देता हूं। अब तो मुझे घड़े से बाहर निकाल दो।'

अब कुम्हार कहता है - 'बस, प्रभु जी ! एक विनती और है। उसे भी पूरा करने का वचन दे दो तो मैं आपको घड़े से बाहर निकाल दूंगा।'

भगवान बोले - 'वो भी बता दे, क्या कहना चाहते हो ?'

कुम्हार कहने लगा - 'प्रभु जी ! जिस घड़े के नीचे आप छुपे हो, उसकी मिट्टी मेरे बैलों के ऊपर लाद के लाई गई है । मेरे इन बैलों को भी चौरासी के बन्धन से मुक्त करने का वचन दो ।'

भगवान ने कुम्हार के प्रेम पर प्रसन्न होकर उन बैलों को भी चौरासी के बन्धन से मुक्त होने का वचन दिया ।'

प्रभु बोले - 'अब तो तुम्हारी सब इच्छा पूरी हो गई, अब तो मुझे घड़े से बाहर निकाल दो।'

तब कुम्हार कहता है - 'अभी नहीं, भगवन ! बस, एक अन्तिम इच्छा और है । उसे भी पूरा कर दीजिए और वह यह है - जो भी प्राणी हम दोनों के बीच के इस संवाद को सुनेगा, उसे भी आप चौरासी लाख योनियों के बन्धन से मुक्त करोगे । बस, यह वचन दे दो तो मैं आपको इस घड़े से बाहर निकाल दूंगा।'

कुम्हार की प्रेम भरी बातों को सुन कर प्रभु श्री कृष्ण बहुत खुश हुए और कुम्हार की इस इच्छा को भी पूरा करने का वचन दिया ।

फिर कुम्हार ने बाल श्री कृष्ण को घड़े से बाहर निकाल दिया। उनके चरणों में साष्टांग प्रणाम किया। प्रभु जी के चरण धोए और चरणामृत लिया। अपनी पूरी झोपड़ी में चरणामृत का छिड़काव किया और प्रभु जी के गले लगकर इतना रोये कि प्रभु में ही विलीन हो गए।

जरा सोचें, जो बाल श्री कृष्ण सात कोस लम्बे-चौड़े गोवर्धन पर्वत को अपनी इक्क्नी अंगुली पर उठा सकते हैं, तो क्या वो एक घड़ा नहीं उठा सकते थे।

लेकिन बिना प्रेम रीझे नहीं नटवर नन्द किशोर। कोई कितने भी यज्ञ करे, अनुष्ठान करे, कितना भी दान करे, चाहे कितनी भी भक्ति करे, लेकिन जब तक मन में प्राणी मात्र के लिए प्रेम नहीं होगा, प्रभु श्री कृष्ण मिल नहीं सकते।

रिश्तों में फिर से घोलें प्यार की मिठास, बस अपनाएं ये 3 वास्तु टिप्स

: शादीशुदा जीवन में प्यार और समझदारी बनाए रखना हर किसी की ख्वाहिश होती है। अगर आप महसूस कर रहे हैं कि रिश्तों में दूरी बढ़ रही है या प्यार की मिठास कम हो गई है, तो वास्तु के कुछ सरल उपाय आपकी मदद कर सकते हैं। आइए जानें तीन असरदार टिप्स जो आपके जीवनसाथी के साथ संबंधों को मजबूत बनाएंगे।

सही दिशा में बेडरूम की व्यवस्था

वास्तु के अनुसार, पति-पत्नी के लिए बेडरूम की सही दिशा बहुत महत्वपूर्ण है। बेड को हमेशा दक्षिण या पश्चिम दिशा की ओर रखें। इससे घर में स्थिरता और आपसी समझ बढ़ती है। बिस्तर पर सोते समय पैर हमेशा दक्षिण की ओर न रहें।

जोड़ी और प्रेम का प्रतीक रखें

घर में प्यार बढ़ाने के लिए जोड़े के प्रतीक जैसे दो मोमबत्तियाँ, दो गुड़ियाएं या दिल के आकार की सजावट का इस्तेमाल करें। ये संकेत प्रेम और साथ की ऊर्जा को मजबूत करते हैं। कोशिश करें कि बेडरूम में सिर्फ सकारात्मक और सुखद वस्तुएं ही हों।

रंग और रोशनी का महत्व

वास्तु में बेडरूम के रंग और रोशनी का भी विशेष महत्व है। हल्के गुलाबी, पीले या शाही नीले रंग को कमरे में अपनाना रिश्तों में प्यार और समझदारी बढ़ाता है। साथ ही, कमरे में पर्याप्त प्राकृतिक रोशनी और साफ-सुथरा माहौल बनाए रखें।

हम ठहर जाते हैं, तो हमारा भाग्य भी ठहर जाता है

चरैवेति चरैवेति, ये जीवन का मंत्र है- चलते रहो, रुकना नहीं है। निरंतर गति ही जीवन का सार है। जब हम ठहर जाते हैं, तो हमारा भाग्य भी ठहर जाता है। कठिनाइयां, असंभव लगने वाले कार्य, थकान- ये सब केवल मन की बाधाएं हैं। जो व्यक्ति निरंतर प्रयास करता है, वही सफल होता है। रुकना, हार मानना या असंभव कहना, सही नहीं है। इसलिए जीवन में चाहे कितनी भी बाधाएं आएं, हमें आगे बढ़ते रहना चाहिए।

जीवन को सार्थक बनाने का सबसे आसान तरीका

एक बालक को पुस्तकें पढ़ना बहुत पसंद था। दुर्भाग्यवश उसकी एक आंख खराब थी इसलिए ज्यादा पढ़ने के कारण एक आंख पर अतिरिक्त भार पड़ता था।

इसके कारण उसकी दूसरी आंख में भी लगातार दर्द की शिकायत रहने लगी। डाक्टर ने बालक की दूसरी आंख खराब होती देख उसे पढ़ने-लिखने से मना कर दिया और कहा, "यदि तुमने पढ़ना-लिखना नहीं छोड़ा तो वह दिन दूर नहीं जब तुम्हारी दूसरी आंख भी बिल्कुल खराब हो जाएगी।"

डॉक्टर की बात सुनकर भी बालक ने लिखना-पढ़ना बंद नहीं किया।

परिवार वालों के बहुत जोर देने पर वह बोला, "मैं पढ़ना-लिखना तब छोड़ूंगा जब मुझे कोई प्रतिदिन पुस्तकों को पढ़कर सुनाता रहेगा।" परिवार वाले बालक की इस बात पर सहमत हो गए। अब बालक इसी तरह पढ़ने लगा। परिवार वाले उसे पुस्तकें पढ़कर सुनाते और वह उन्हें याद करता जाता। उसने अपनी दृढ़ इच्छा शक्ति व संकल्प से एम.ए. की परीक्षा पास कर ली। बालक सिर्फ एम.ए. करने तक ही नहीं रुका, अपितु उसने अनेक पुस्तकें भी लिखीं। वह अपने विचार दूसरों से लिखवाता था और जब उसका लिखा विषय पुस्तक में छपवाने के लायक हो जाता था तो उसकी पुस्तक छप जाती थी। इस प्रकार ऐसे ही उसने अनेक पुस्तकें लिखीं जिनमें जीवन को हर हाल में सकारात्मक नजरिए व आनंदमय तरीके से जीने के तरीके सहज रूप में बताए गए थे।

वह बालक आगे चलकर फ्रांस का मशहूर दार्शनिक ज्यां पाल सार्त्र बना।

सार्त्र ने अपने कठिनाई भरे जीवन में उच्चतम मंजिल हासिल कर लोगों को यह सीख दी कि जीवन का दूसरा नाम समस्या है। इसलिए हर समस्या को जीवन का अंग मानकर और उसके हल खोजकर आगे बढ़ना जीवन की सार्थकता है।

भक्त अपने बाल क्यों चढ़ाते हैं तिरुपति बालाजी को?

हमारे देश में अनेकों ऐसे प्राचिन और शक्तिशाली मंदिर है जो अपने चमत्कारों और अनोखी प्रथाओं के लिए दुनिया भर में प्रसिद्ध है। इन मंदिरों से जुड़ी परंपराओं और चमत्कारों पर भक्तों का अटूट विश्वास है। आज हम बात करने वाले हैं ऐसे ही एक बेहद प्रसिद्ध मंदिर की अनोखी परंपरा के बारे में। हम बात करने वाले हैं तिरुपति बालाजी मंदिर की जो आंध्र प्रदेश के चित्तूर जिले में स्थित है। ये मंदिर भगवान विष्णु के रूप भगवान श्री वेंकटेश्वर को समर्पित है और हर साल यहां करोड़ों की संख्या में लोग दुनिया भर से दर्शन करने आते हैं। तिरुपति बालाजी मंदिर को देश के सबसे अमीर मंदिरों में जाना जाता है। इस मंदिर से कई रहस्यमय बातें जुड़ी हुई हैं। इस मंदिर की सबसे अनोखी बातों में से एक ये हैं कि यहां श्रद्धालु अपने सिर के बाल अर्पित करते हैं। इस मंदिर में हर साल लाखों की संख्या में भक्त अपने बाल दान करते हैं। लेकिन क्या आप जानते हैं कि ऐसा क्यों और इसके पीछे का कारण क्या है।

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार तिरुपति बालाजी मंदिर में जो भक्त अपने बाल अर्पित करते हैं, भगवान उन्हें 10 गुना आशीर्वाद और समृद्धि प्रदान करते हैं। ऐसा भी माना जाता है कि बाल दान करने वालों पर मां लक्ष्मी की विशेष कृपा बनी रहती है। इसके अलावा इसके पीछे एक पौराणिक कथा भी प्रचलित है। पौराणिक कथा के अनुसार, एक बार समस्त लोकों के कल्याण के लिए एक भव्य यज्ञ का आयोजन किया गया। जब यह प्रश्न उठा कि इस यज्ञ का फल किसे समर्पित किया जाए, तो इसका निर्णय ऋषि भृगु को करने के लिए कहा गया। ऋषि भृगु सबसे पहले सृष्टिकर्ता ब्रह्मा जी के पास पहुंचे, फिर भगवान शिव से मिले, लेकिन उन्हें दोनों में

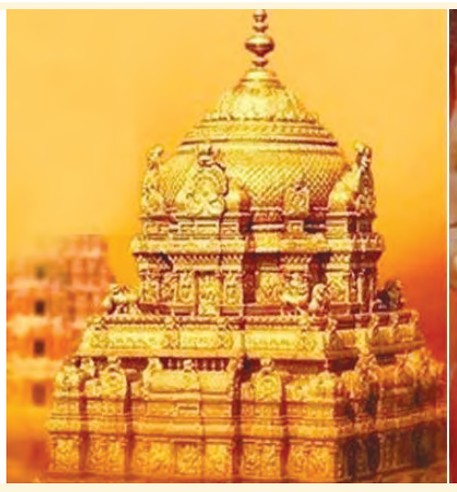

से कोई भी इस यज्ञ का फल प्राप्त करने योग्य नहीं लगा। अंततः वे वैकुंठ धाम पहुंचे, जहां भगवान विष्णु विश्राम कर रहे थे।

जब ऋषि भृगु वैकुंठ पहुंचे, तब भगवान विष्णु योगनिद्रा में थे और उन्हें ऋषि के आगमन का आभास नहीं हुआ। इसे भृगु ऋषि ने अपना अपमान समझ लिया और क्रोधित होकर भगवान विष्णु के वक्षस्थल पर पैर से प्रहार कर दिया। तब भी भगवान विष्णु शांत रहे और विनम्र भाव से ऋषि का पैर पकड़ते हुए बोले- "हे मुनिवर, आपके चरण को कहीं चोट तो नहीं आई?" भगवान की इस विनम्रता और सहनशीलता को देखकर ऋषि भृगु को अपनी भूल का एहसास हुआ, और उन्होंने यज्ञ का फल भगवान विष्णु को समर्पित करने का निर्णय लिया।

भगवान विष्णु के प्रति ऋषि भृगु द्वारा किए गए अपमान को देखकर माता लक्ष्मी अत्यंत दुखी हुईं। उन्हें यह उचित नहीं लगा कि भगवान ने इस अपमान का प्रतिकार नहीं किया। क्रोधवश लक्ष्मी जी बैकुंठ धाम छोड़कर पृथ्वी पर आ गईं और यहां निवास करने लगीं। भगवान विष्णु ने उन्हें ढूंढने के लिए अनेक प्रयास किए, पर सफल न हो सके। अंततः उन्होंने पृथ्वी पर श्रीनिवास के रूप में अवतार लिया। इस समय भगवान शिव और ब्रह्मा जी ने भी उनकी सहायता के लिए क्रमशः गाय और बछड़े का रूप धारण किया। बाद में माता लक्ष्मी ने पृथ्वी पर पद्मावती के रूप में जन्म लिया, और समय आने पर श्रीनिवास एवं पद्मावती का विवाह संपन्न हुआ।

विवाह की कुछ आवश्यक रस्में पूरी करने के लिए भगवान विष्णु ने कुबेर देव से धन उधार लिया था। उन्होंने वचन दिया कि कलियुग के अंत तक वह यह ऋण ब्याज सहित चुका देंगे। कहते हैं कि इसी कारण आज भी भक्त भगवान विष्णु का ऋण उतारने के प्रतीक के रूप में दान करते हैं। इसी परंपरा के अंतर्गत बालों का दान करने की प्रथा भी चली आ रही है। ऐसा विश्वास है कि जो व्यक्ति तिरुपति बालाजी मंदिर में अपने बाल अर्पित करता है, उसे भगवान कई गुना धन-समृद्धि का आशीर्वाद देते हैं और उस पर माता लक्ष्मी की विशेष कृपा बनी रहती है।

वहीं एक और कथा के अनुसार बहुत समय पहले भगवान बालाजी की मूर्ति पर असंख्य चीटियां इकट्ठी होकर एक टीले के रूप में जमा हो गई थीं। हर दिन एक गाय वहां आकर उस टीले पर अपना दूध अर्पित करती थी और फिर लौट जाती थी। जब गाय के स्वामी को इस बात का पता चला, तो वह क्रोधित हो गया और गुस्से में आकर उसने गाय पर वार कर दिया। उस वार से न केवल गाय घायल हुई, बल्कि भगवान बालाजी की मूर्ति के सिर पर भी चोट लगी और उनके बाल झड़ गए। तब माता नीला देवी ने भगवान की पीड़ा देखकर अपने बाल काटकर उनके सिर पर रख दिए। उनके इस त्याग से भगवान बालाजी का घाव भर गया। प्रसन्न होकर भगवान ने उन्हें आशीर्वाद दिया और कहा कि बाल व्यक्ति की शोभा का प्रतीक हैं, और तुमने मेरे लिए उनका त्याग किया है। अब से जो भी भक्त सच्चे मन से अपने बालों का दान करेगा, उसकी सभी मनोकामनाएं पूरी होंगी। तभी से तिरुपति बालाजी मंदिर में बाल दान करने की परंपरा आरंभ हुई। मंदिर के समीप स्थित नीलाद्रि पर्वत पर माता नीला देवी का मंदिर भी स्थित है।

55 की होकर भी 25 की लगती हैं नीलम कोठारी

क्या है एक्ट्रेस का फिटनेस सीक्रेट

एक्ट्रेस नीलम कोठारी आज भी अपनी खूबसूरती और फिटनेस से यंग स्टार्स को मात दे देती हैं. आइए जानते हैं आखिर क्या है एक्ट्रेस का फिटनेस सीक्रेट.

एक्ट्रेस नीलम कोठारी को देखकर कोई भी नहीं कह सकता कि वो 55 साल की हैं. उनका ग्लोइंग चेहरा और टोंड फिगर आज भी यंग स्टार्स को टक्कर देता है. नीलम ने अपने करियर की शुरुआत 80 के दशक में की थी, जाती हैं. बता दें कि नीलम आज भी काफी फिट हैं और उनकी सुंदरता पहले की तरह ही बरकार है. उन्हें देखकर उनकी उम्र का अंदाजा लगा पाना बहुत मुश्किल है. एक्ट्रेस अपने आपको फिट और सुंदर बनाए रखने के लिए खानपान और ध्यान देती है.

एक्ट्रेस अपने दिन की शुरुआत हेल्दी फूड के साथ करती है. नाश्ते में वो मूंग दाल के साथ चने खाती है.जो प्रोटीन से भरपूर होता है. इसके साथ एक्ट्रेस अक्सर ही पालक का जूस

लेकिन आज भी उनकी खूबसूरती और फिटनेस वैसी ही बरकरार है. चलिए जानते हैं, आखिर क्या है नीलम कोठारी का फिटनेस और ब्यूटी सीक्रेट, जिससे वो आज भी 25 की लगती हैं.

एक्ट्रेस नीलम कोठारी अपनी एक्टिंग के साथ खूबसूरती और फिटनेस के लिए भी जानी पीती हैं. हेल्दी डाइट के अलावा एक्ट्रेस योग पर भी फोकस करती हैं. जो उन्हें फिजिकली और मेंटली फिट रखने में मदद करता है.इसके अलावा वो पिलाटे जैसी एक्सरसाइस भी करती हैं. पिलाटे मसल्स और बॉडी टोन करने का काम करता है.

स्टार क्रिकेटर की फ्लॉप पत्नी, 3 फिल्मों में सिमटा करियर, फिर भी हैं करोड़ों की मालकिन ?

बड़े पर्दे पर अपना नाम बनाने के लिए इस हसीना ने कोशिश तो बहुत की, लेकिन सफल नहीं हो सकी. ये एक्ट्रेस और कोई नहीं बल्कि स्टार क्रिकेटर केएल राहुल की पत्नी अथिया शेट्टी है. सुनील शेट्टी की बेटी होने के बाद भी उनकी फिल्में बड़े पर्दे पर फ्लॉप रही.

बॉलीवुड की नेपो किड्स में से एक ये हसीना, जिसका करियर तो सिल्वर स्क्रीन पर ज्यादा चमका नहीं, लेकिन लाइफस्टाइल और दौलत ने सुर्खियां बटोरीं. स्टार क्रिकेटर से शादी के बाद वो पावर कपल का चेहरा बन गईं, लेकिन फिल्मी सफर... सिर्फ 3 लीड रोल्स और वो भी निकली सुपरफ्लॉप. सोशल मीडिया पर उनकी फैन फॉलोइंग किसी टॉप हीरोइन से कम नहीं. सालों से एक्ट्रेस फिल्मों से दूर हैं, लेकिन करोड़ों की मालकिन है. क्या आप जानते हैं ये कौन हैं?

अथिया ने 2015 में 'हीरो' से अपना डेब्यू किया, जिसमें उनके साथ आदित्य पंचोली के बेटे सूरज पंचोली नजर आए थे. लेकिन, ये फिल्म बॉक्स ऑफिस पर बुरी तरह पिट गई और इसी के साथ उनकी बॉलीवुड में शुरुआत भी काफी खराब रही. हालांकि, उन्होंने हार नहीं मानी और फिर 'मुबारकां' और 'मोतीचूर चकनाचूर' जैसी फिल्में कीं, लेकिन बॉक्स ऑफिस पर ये फिल्में भी फ्लॉप ही रहीं.

सुनील शेट्टी ने एक इंटरव्यू में उस वजह का खुलासा किया था, जिसके चलते अथिया ने एक्टिंग और फिल्मों से दूरी बना ली. उन्होंने बताया था कि 'मोतीचूर चकनाचूर' के बाद अथिया को कई फिल्मों के ऑफर आए, लेकिन वह और फिल्में नहीं करना चाहती थी. उन्होंने साफ-साफ पापा सुनील शेट्टी से कह दिया कि 'बाबा मैं ये सब और नहीं करना चाहती.'

भले ही अथिया का एक्टिंग करियर कुछ खास नहीं रहा, लेकिन फैशन के मामले में

वह अव्वल हैं और अक्सर अपने लुक्स को लेकर चर्चा में बनी रहती हैं. उनका इंस्टाग्राम अकाउंट भी एस्थेटिक्स से भरा हुआ है. अथिया अब फिल्मों से दूर हैं, लेकिन अक्सर डिजाइनर्स के लिए रैंप वॉक करती नजर आ जाती हैं .

इसके अलावा वह कई बड़े ब्रांड भी एंडोर्स करती हैं और सिर्फ देशी ही नहीं, कई इंटरनेशनल ब्रांड्स का भी चेहरा बन चुकी हैं. अथिया शेट्टी भले ही फिल्मों में काम नजर आती है लेकिन उनकी संपत्ति करोड़ों में हैं.

उनकी कमाई में ब्रांड एंडोर्समेंट का भी बड़ा योगदान है, जिनमें लेबल रितु कुमार, मेब्लीन, नायका जैसे बड़े-बड़े ब्रांड शामिल हैं. न केवल ब्यूटी बल्कि फैशन से जुड़े ब्राउन ब्रांड के साथ भी उनके बड़े कॉन्ट्रैक्ट हैय इसके लिए वे 30 लाख रुपये से लेकर 50 लाख रुपये तक की फीस लेती है.

ब्रांड एंडोर्समेंट के अलावा अथिया शेट्टी सोशल मीडिया पर अपने फॉलोवर्स के जरिए भी अच्छी खासी कमाई करती है. सोशल मीडिया अकाउंट के जरिए हुए स्पॉन्सर्ड पोस्ट के जरिए लाखों रुपये कमाती हैं. रिपोर्ट्स के मानें तो अथिया शेट्टी की नेटवर्थ करीब 35-45 करोड़ रुपये है.

अथिया शेट्टी रियल एस्टेट में भी निवेश करके अच्छी कमाई कर रही हैं. मुंबई में आलिशान अपार्टमेंट के अलावा उन्होंने कई शहरों में रियल एस्टेट में पैसा लगा रखा है. उन्होंने कई अन्य जगह भी निवेश कर रखा है.

अथिया शेट्टी इसी साल मार्च में मम्मी बनी हैं. अथिया और केएल राहुल ने अपनी बेटी का नाम इवारा रखा है, जिसका अर्थ होता है 'भगवान का तोहफा' होता है.

खुशी कपूर ने दोस्तों संग धूमधाम से मनाया अपना जन्मदिन, तस्वीरें साझा कर बोलीं- बहुत खूश हूं

बॉलीवुड की दिवंगत अभिनेत्री श्रीदेवी की छोटी बेटी खुशी कपूर ने अपनी गैंग के साथ मिलकर अपना 25वां जन्मदिन मनाया। खुशी ने इंस्टाग्राम पर कुछ तस्वीरें साझा की हैं जिनमें वो कजिन शनाया कपूर और अपने बाकी दोस्तों के साथ पार्टी करते हुए दिखाई दे रही हैं। खुशी ने इस खास दिन के सेलिब्रेशन की तस्वीरें शेयर करते हुए एक प्यारा-सा कैप्शन भी साझा किया। खुशी ने पोस्ट में लिखा- 25। बहुत शुक्रगुजाह हूं, खुश हूं और उम्मीदों के साथ हूं।

पृथ्वी थिएटर में नसीरुद्दीन शाह नीना गुप्ता ने साथ में लगाए ठुमके

कपूर फैमिली के आयोजित पृथ्वी फेस्टिवल 2025 की शुरुआत इस वीकेंड मुंबई में हुई, जिसमें बॉलीवुड के कई सितारे शामिल हुए. इसी दौरान नीना गुप्ता और नसीरुद्दीन शाह भी साथ दिखें. हर साल की तरह इस साल भी कपूर फैमिली की साइड से पृथ्वी फेस्टिवल ऑर्गेनाइज किया गया. वहीं हाल ही में इसकी ओपनिंग नाइट हुई जहां बॉलीवुड के कई सितारे नजर आए. इसी दौरान नीना गुप्ता और नसीरुद्दीन शाह भी पार्टी में साथ ठुमके लगाते दिखे.

पृथ्वी फेस्टिवल हर साल सर्दियों की शुरुआत में आयोजित होने वाला एक परफॉर्मिंग आर्ट्स फेस्टिवल है, जो पृथ्वी थिएटर में होता है. इसे कपूर परिवार ने शुरू किया था. इस साल यह फेस्टिवल 17 नवंबर तक पृथ्वी थिएटर और पृथ्वी हाउस में चलेगा. वहीं हाल ही में रविवार को मुंबई के मशहूर पृथ्वी थिएटर में हुए इसकी ओपनिंग नाइट हुई. जहां, सैफ अली खान, नसीरुद्दीन शाह, रत्ना पाठक शाह, बोमन ईरानी, नीना गुप्ता, दिव्या दत्ता, जहान कपूर और कई और सितारे नजर आए.

पृथ्वी थिएटर के ऑफिशियल इंस्टाग्राम अकाउंट पर शेयर की गई तस्वीरों में फेस्टिवल की शुरुआत के मौके पर एक शानदार पार्टी दिखाई गई. पोस्ट के कैप्शन में लिखा गया, "ये शाम थी जश्न, अपनापन और थिएटर के सदाबहार जादू की. पृथ्वी फेस्टिवल 2025 की शुरुआत गर्मजोशी, सम्मान और जादू से हुई." इस पार्टी में नसीरुद्दीन शाह, बोमन ईरानी और नीना गुप्ता ने डांस किया, जबकि पृथ्वी थिएटर के ट्रस्टी जहान कपूर मेहमानों से मिलते-जुलते नजर आए. अब ये तस्वीरें सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रही हैं. इन तस्वीरों ने फिल्म इंडस्ट्री के कई लोगों में FOMO यानि 'कुछ मिस कर देने' का एहसास जगा दिया. कई एक्टर्स ने कमेंट कर बताया कि उन्हें सेलिब्रेशन का हिस्सा न बन पाने का अफसोस है. दिया मिर्जा ने लिखा, "आप सबके साथ न रहकर बहुत मिस किया." लिलेट दुबे ने कमेंट किया, "बहुत अफसोस हुआ कि हम नहीं आ सके, क्योंकि उसी दिन हमारा शो Zen Katha ओपन हुआ था! बहुत प्यारी तस्वीरें हैं."

यामी गौतम के खाते में एक और बेहतरीन फिल्म

कुछ फिल्मों को प्रमोशन की जरूरत नहीं होती. उनका कंटेंट ही उनका हथियार होता है, और उसी कंटेंट के दम पर फिल्म दर्शकों के बीच हिट हो जाती है. यामी गौतम धर और इमरान हाशमी स्टारर फिल्म 'हक' के साथ भी ऐसा ही है. यह निस्संदेह एक बेहतरीन फिल्म है, जिसमें यामी ने एक बार फिर अपने अभिनय से गंभीर फिल्मों में जान डालने की अपनी क्षमता साबित की है. इमरान ने भी अपना सर्वश्रेष्ठ अभिनय दिया है, जो आपके दिल को छू जाएगा.

'हक' 7 नवंबर को सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली है. अगर आप इस फिल्म को देखने की योजना बना रहे हैं, तो आप इसे अपने पूरे परिवार के साथ जरूर देख सकते हैं. एक गंभीर मुद्दे पर बनी इस फिल्म से कॉमेडी या एक्शन की उम्मीद न करें, लेकिन यह आपको ऐसी अंतर्दृष्टि जरूर देगी जिनसे आप शायद अनजान होंगे. फिल्म का सबसे दमदार हिस्सा इसका क्लाइमैक्स है, जो आपको 15 मिनट तक अवाक छोड़ देगा और आपकी आंखों में आंसू ला देगा.

'हक' सुपर्ण वर्मा द्वारा निर्देशित एक कोर्टरूम ड्रामा फिल्म है. यह मोहम्मद अहमद खान बनाम शाह बानो बेगम मामले में सुप्रीम कोर्ट के ऐतिहासिक फैसले से प्रेरित है. यामी गौतम धर और इमरान हाशमी मुख्य भूमिकाओं में हैं. यह फिल्म 60 से लेकर 80 के दशक की पृष्ठभूमि पर आधारित है और शाह बानो के अपने अधिकारों के संघर्ष को खूबसूरती से दर्शाती है.

फिल्म में यामी गौतम शाह बानो का किरदार निभा रही हैं, जबकि इमरान हाशमी मोहम्मद अहमद खान का. फिल्म शुरू से ही आपको बांधे रखेगी. शाजिया बानो (यामी) और अहमद खान (इमरान हाशमी) फिल्म की शुरुआत में ही प्यार में पड़ जाते हैं और शादी कर लेते हैं. शादी के बाद, शाजिया और अहमद खुशहाल जिंदगी जीते हुए दिखाई देते हैं. उनके तीन बच्चे भी हैं.

लेकिन जैसे-जैसे समय बीतता है, अहमद की जिम्मेदारियां बढ़ती जाती हैं और उनके और बानो के बीच दूरियां बढ़ती जाती हैं. एक बार अहमद अपनी मां से मिलने पाकिस्तान जाता है और तीन महीने बाद भारत लौटता है, लेकिन इस बार वह एक नई पत्नी के साथ आता है. वह पाकिस्तान में दोबारा शादी कर लेता है. बानो यह बर्दाश्त नहीं कर पाती और अहमद का घर छोड़कर अपने माता-पिता के पास रहने चली जाती है. यहीं से बानो की अपने हक की लड़ाई शुरू होती है. अधिकारों की उस लड़ाई का असली रूप समझने के लिए आपको सिनेमाघर जाकर पूरी फिल्म देखनी होगी.

अभिनय की बात करें तो यामी गौतम एक बार फिर अपने दमदार अभिनय से दिल जीतने के लिए तैयार हैं. उन्होंने शाह बानो का किरदार बखूबी निभाया है और उनके दर्द और साहस को बखूबी पर्दे पर उकेरा है. इसलिए, यह कहना गलत नहीं होगा कि यामी के खाते में एक और अच्छी फिल्म है. इमरान हाशमी की बात करें तो इस बार आपको उनका एक बिल्कुल अलग रूप देखने को मिलेगा और आपको यह बेहद पसंद आएगा.

इमरान ने अहमद खान का किरदार भी बखूबी निभाया है. इसके अलावा, आपको सेशंस कोर्ट के जज राहुल मित्रा का किरदार भी पसंद आएगा.

उन्होंने बानो के पक्ष में पहला फैसला सुनाया, जिसके बाद मामला हाईकोर्ट और फिर सुप्रीम कोर्ट पहुंचा. एसएम जहीर, वर्तिका सिंह, दानिश हुसैन और शीबा चड्ढा ने भी अपनी-अपनी भूमिकाओं के साथ न्याय किया है. निर्देशन की बात करें तो सुपर्ण वर्मा ने छोटी से छोटी बारीकियों पर भी ध्यान दिया है.

उन्होंने यामी को वाकई शानदार तरीके से पेश किया है. फिल्म का कोई भी सीन जरूरत से ज्यादा नहीं लगता.

कोई भी फिल्म कितनी भी अच्छी क्यों न हो, कुछ गलतियां तो हो ही जाती हैं. 'हक' के साथ भी यही हुआ.

फिल्म का पहला भाग काफी धीमा है, जिससे आपको थोड़ी बोरियत महसूस हो सकती है, लेकिन इंटरवल के बाद यह अपनी मूल गति पर लौट आती है. फिल्म का संगीत अच्छा है, लेकिन इसमें और सुधार की जरूरत थी. कुल मिलाकर, इस फिल्म को देखने के बाद आपको अपने पैसे की पूरी कीमत जरूर मिलेगी.

अमिताभ बच्चन ने बेचे 2 लग्जरी अपार्टमेंट, कमाया 47 परसेंट रिटर्न

अमिताभ बच्चन के 2 लग्जरी अपार्टमेंट्स बेचने की खबरें हैं. इस डील से अमिताभ बच्चन को तगड़ा फायदा हुआ है. आइए जानते हैं इसके बारे में.

अमिताभ बच्चन पर्सनल और प्रोफेशनल लाइफ को लेकर खबरों में रहते हैं. हाल ही में खबरें आई कि अमिताभ ने अपने दो लग्जरी अपार्टमेंट बेच दिए हैं. ये अपार्टमेंट मुंबई के गोरेगांव ईस्ट में थे. अमिताभ ने ये डील 12 करोड़ में की है. उन्हें इस डील से 47 परसेंट का फायदा हुआ है. अमिताभ ने ये अपार्टमेंट 13 साल पहले खरीदे थे.

अमिताभ बच्चन ने बेचे 2 अपार्टमेंट

एक रिपोर्ट के मुताबिक, ये दोनों अपार्टमेंट ओबराय टावर के 47वें फ्लोर पर थे. उन्होंने ये अपार्टमेंट आशा ईश्वर शुक्ला और ममता

सुरजदेव शुक्ला को बेचे हैं. ट्रांजेक्शन 31 अक्टूबर और 1 नवंबर को रजिस्टर हुई. इसके लिए 30 लाख की स्टैम्प ड्यूटी और 30 हजार रजिस्ट्रेशन फीस लगी है.

बता दें कि अमिताभ ने ये अपार्टमेंट 2012 में 8.12 करोड़ में खरीदे थे. इस में कार पार्किंग स्पेस भी शामिल है.

जनवरी में भी बेचा था डुप्लेक्स

इससे पहले अमिताभ ने जनवरी 2025 में अंधेरी की अटलांटिस बिल्डिंग में 83 करोड़ का विशाल डुप्लेक्स बेचा था. पिछले महीने ही, उन्होंने अलीबाग में हाउस ऑफ अभिनंदन लोढ़ा के प्रोजेक्ट 'ए अलीबाग' फेज-2 प्रोजेक्ट में 6.59 करोड़ के तीन प्लॉट खरीदे थे.

वहीं 2024 में अमिताभ और उनके बेटे अभिषेक ने ओबेरॉय रियलिटी के Eternia प्रोजेक्ट में 24.94 करोड़ के 10 अपार्टमेंट खरीदे थे. वहीं अभिषेक ने बोरीवली के ओबेरॉय स्काई सिटी में 15.42 करोड़ के 6 फ्लैट खरीदे थे.

अमिताभ बच्चन का वर्कफ्रंट

अमिताभ के काम की बात करें तो उन्हें इन दिनों कौन बनेगा करोड़पति में होस्टिंग करते हुए देखा जा रहा है. अमिताभ की होस्टिंग फैंस को बहुत पसंद आती है.

शो में वो अपनी पर्सनल लाइफ से जुड़े अपडेट्स देते रहते हैं. इसके अलावा अमिताभ को अब रामायण में देखा जाएगा. इस फिल्म में वो जटायु के रोल में हैं. फिल्म में अमिताभ को लेकर फैंस एक्साइटेड हैं.

रणबीर कपूर, सई पल्लवी और रवि दुबे फिल्म में नजर आने वाले हैं. इसके अलावा अमिताभ को फिल्म कल्कि एडी 2898 के दूसरे पार्ट में भी देखा जाएगा.

कान के पर्दे खराब करेगा ईयरफोन : दिमाग पर भी होगा असर, कितना यूज करना है सेफ

ईयर फोन या ईयर बड्स। पिछले कुछ सालों में इसका इस्तेमाल बढ़ा है। छोटे-छोटे बच्चे के लेकर बुजुर्ग सब इसे यूज कर रहे हैं।

किसी को कॉल करनी हो, मीटिंग, ऑनलाइन क्लासेज लेनी हो, म्यूजिक सुनना हो, ओटीटी सीरीज को बिंज वॉच करना हो, तो घंटों तक कान में ईयरफोन लगा रहता है। सड़क पर देखें तो ट्रैफिक रूल को तोड़ते हुए लोग बेखौफ ईयरफोन लगाकर ड्राइव और वॉक कर रहे हैं। प्राइवेसी के लिहाज से जिसे लोग अच्छा मान रहे हैं, उसका जरूरत से ज्यादा इस्तेमाल सेहत पर बुरा असर डाल रहा है। हेडफोन या ईयरफोन से आने वाली आवाज आपके ईयरड्रम को भारी नुकसान पहुंचा रही है। किस हद तक इससे कानों को नुकसान होगा, हमें क्या सावधानी बरतनी चाहिए।

'ईयर फोन और ईयर बड्स के इस्तेमाल से होने वाले नुकसान पर पिछले कई सालों से रिसर्च हो रही है। हर हफ्ते, हमारे सामने कान के इन्फेक्शन के चार मामले सामने आते हैं, जिसमें ईयरफोन का लंबे समय तक यूज करना आम बात है। वातावरण में नमी के कारण गर्म और उमस भरे मौसम में संक्रमण अधिक बढ़ जाता है।

अब एक डेटा पर नजर डालें, नीचे लगी क्रिएटिव में...

डब्ल्यूएचओ ने चेतावनी दी है कि रेगुलर ईयरफोन यूज करने से 2050 तक 70 करोड़ से ज्यादा लोगों के कान खराब हो जाएंगे। वाइब्रेशन ज्यादा होने से सुनने वाले सेल्स अपनी संवेदनशीलता खो देते हैं। जिससे बहरापन हो जाता है। इसके साथ कई दूसरी प्रॉब्लम भी हो सकती हैं। जैसे-

कान में दर्दः देर तक रेगुलर यूज करने से कानों में दर्द शुरु हो सकता है। कई बार ये दर्द तेज भी हो सकता है जिससे कानों में भारीपन होने की संभावना बढ़ जाती है।

बहरापनः ज्यादा देर तक लगाने और वाइब्रेशन से कानों की नसों पर दबाव पड़ता है, जिससे नसों में सूजन आ सकती है। सेंसिटिविटी खोने से बहरापन भी हो सकता है।

सिरदर्दः डेली तेज आवाज में सुनने से कानों को बल्कि दिमाग को भी बहुत ज्यादा नुकसान होता है। तेज वाइब्रेशन से हमें सिरदर्द और नींद न आने की परेशानी होने लगती है।

कान सुन्न होनाः लंबे समय तक सुनने पर कान सुन्न हो सकते हैं। मानसिक समस्याएं जैसे चक्कर आना, नींद न आने की प्रॉब्लम होने लगती है।

सुनने की क्षमता प्रभावितः धीरे-धीरे सुनने की क्षमता कम होने लगती है और इंफेक्शन भी हो सकता है। इससे टिनिटस मतलब कान में गुंजन या अतिरिक्त ध्वनि सुनाई देती है।

नोटः कान में अक्सर सनसनाहट की आवाज सुनाई देती है या लेटने पर चक्कर आते हों तो बिना देर किए ईएनटी स्पेशलिस्ट से सलाह लें।

जो लोग ईयर फोन, ईयरबड्स और हेडफोन का लगातार कई-कई घंटों तक यूज करते हैं, रात में लगाकर सो जाते हैं उन्हें ज्यादा प्रॉब्लम होती है। कान के अंदर एक पर्दा मौजूद होता है जिसे ईयरड्रम कहते हैं। इसमें तमाम नसें और अंग होते हैं, जो दिमाग से कनेक्ट होते हैं। जब ईयरफोन या हेडफोन लगाकर तेज आवाज में सुनते हैं, तो आवाज और उसका वाइब्रेशन दवाब के साथ ईयर ड्रम से टकराता है जिससे समस्याएं पैदा होती हैं। एक बार जब यह समस्या हो जाती है तो परमानेंट बन जाती है। अगर इसका तुरंत इलाज नहीं किया जाए, तो यह डेंजरस भी हो सकती है। ईयरफोन के मुकाबले हेडफोन थोड़ा सुरक्षित है। ईयरफोन कान के अंदर लगता है इसलिए वाईब्रेशन की कान के पर्दे से दूरी कम होती है जबकि हेडफोन कान के बाहर लगता है जिससे पर्दे से दूरी थोड़ी ज्यादा होती है। तो यह कम नुकसान करता है। लेकिन दोनों का यूज ज्यादा किया जाए और तेज आवाज में सुना जाए, तो नुकसान ही पहुंचाएंगे।

डॉक्टर का मानना है कि दिन में सिर्फ 30 मिनट ही ईयरफोन का यूज करना चाहिए। इसके अलावा जब जरूरत हो तब करें। सबसे पहली बात तो ईयरफोन का यूज जरूरत पड़ने पर ही करें। बाकी बातें नीचे लगे क्रिएटिव से समझते हैं।

कम समय में ऐसे करें पूरे घर की सफाई

घर में मेहमान आने वाले हैं और आपके पास काफ़ी कम समय रह गया है तो ऐसे करे अपने घर की सफ़ाई मिनटों में। आज हम आपको कुछ आसान हैक्स बताने वाले हैं।

कई बार घर में मेहमान अचानक आने वाले होते हैं और हमें कुछ समय पहले ही पता चलता है। इस समय समझ नहीं आता कि घर की सफ़ाई किस कोने से करना शुरू करें। अगर आप भी अपने घर को मिनटों में चमकाना चाहती है तो आज हम आपको कुछ आसान हैक्स के बारे में बताने वाले हैं। जिनकी मदद से आप अपने घर को मिनटों में चमका सकते हैं।

लिविंग रूम की करें सफ़ाई

ऐसे समय में आपको सबसे पहले अपनी लिविंग रूम की सफ़ाई करनी चाहिए जहाँ आपके मेहमान आ के बैठने वाले हैं।

सबसे पहले आपको बिखरे हुए सामानों को एक जगह इकट्ठा करना है और उन्हें सही स्थान पर रख देना है। इसके बाद आपको अपने घर में तुरंत झाड़ू पोंछा लगाना हैं।

सोफ़ा रखे साफ

अगर आपका सोफ़ा गंदा है तो आपको तुरंत इसकी डस्टिन शुरू कर देनी चाहिए। इसमें आपको क़रीबन पाँच मिनट का समय लगेगा। सोफ़ा साफ़ करना काफ़ी आसान है हालाँकि अगर आपके पास समय नहीं है तो आप इसके ऊपर कवर भी लगा सकते हैं। तो आप अपना काफ़ी समय बचा सकती है।

आपस में मिलकर करे काम

घर की सफ़ाई तुरंत करने के लिए आपको किसी और की सहायता लेनी होगी ऐसे में कोशिश करें कि सभी लोग मिल के सफ़ाई करें। मिनटों में सफ़ाई करने के लिए आपको अपने घर के सभी बेडशीट को चेंज कर देना चाहिए। बेडशीट सईद से लगाते और किचन का बिखरा हुआ सारा सामान एक जगह समेटकर रखते दें।

पूजा रूम का ऐसे करें मेकओवर, दिखेगा बहुत सुंदर

कुछ ही दिनों में फेस्टिवल सीजन आने वाला है और ऐसे में आप अलग-अलग तरह से पूजा घर का मेकओवर कर सकती हैं। हम आपको कुछ ऐसे तरीके बताएंगे जिससे आपको अधिक खर्च भी नहीं करना पड़ेगा और मंदिर बहुत अधिक सुंदर भी लगेगा। आप चाहें तो मंदिर को अलग तरह से पेंट कर सकती हैं या फिर पूजा रूम के कलर को चेंज कर सकती हैं।

पूजा घर में लगाएं लाइट्स

अलग-अलग डिजाइन के दीए और लाइट्स से भी पूजा घर को शानादर तरह से न्यू लुक दे सकती हैं। ध्यान रखें कि दब भी मंदिर में बड़े दीए रखें तो उन्हें पर्दो के आसपास न रखें। इसके अलावा आपको पूजा घर में फेयरी लाइट्स भी लगानी चाहिए। इन लाइट्स से मंदिर बहुत सुंदर लगता है। इसके अलावा आप छोटी-छोटी वॉटर कैंडल्स भी रख सकती हैं।

पूजा घर में लगाएं वॉलपेपर्स

आप पूजा घर में मंदिर के साइड में खाली स्पेस पर वॉलपेपर्स भी लगा सकती हैं। इसके अलावा आप मार्केट से जाली पैनल खरीदकर मंदिर के आगे वाले भाग को कवर करने के लिए लगा सकती हैं। इससे मंदिर कवर भी हो जाएगा और यह दिखने में भी बहुत सुंदर लगेगा। आप मंदिरों के लिए लकड़ी के पैनलिंग का उपयोग कर सकती हैं। पैनल के लिए लकड़ी का उपयोग करने से आपके पैसे भी बचेंगे और मंदिर की सुंदरता भी बढ़ेगी।

रंगीन लकड़ियों से सजाएं मंदिर का बैकग्राउंड

आप कलरफुल लकड़कियों की मदद से भी पूजा घर को न्यू लुक दे सकती हैं। इसके लिए आपको कुछ लकड़ियां लेनी होंगी जो सेम साइज में हो और फिर उन्हें कलर करना होगा जो मंदिर से मैच करें। इसके बाद रंगीन लकड़ियों से आप मंदिर के बैकग्राउंड को खास डिजाइन में सजा सकती हैं।

ऑनलाइन महीने का राशन खरीदते वक्त रखें इन बातों का ध्यान, ऐसे बचा सकते हैं हजारों रुपये

महीने का राशन खरीदने के दौरान, कई बार हम अपने बजट से भी ज्यादा सामान ऑर्डर कर देते हैं। अक्सर ऐसा भी होता है कि हम बिना इस्तेमाल के भी कई सामान ऑर्डर कर देते हैं। ऑनलाइन माध्यम से खरीदारी करते वक्त हम ऑफर की लालच में भी आ कर के शॉपिंग कर लेते हैं। जिसका असर हमारे जेब पर पड़ता है। इसलिए, महीने का राशन खरीदते वक्त इन बातों का ध्यान रखना बेहतर हो सकता है कि आप ऑनलाइन शॉपिंग में ऐसे ही प्रोडक्ट खरीदें, जो इस्तेमाल का भी हो और आपको समय और पैसों की बचत मिल सके।

अगर आप किसी ऑनलाइन राशन की वेबसाइट या ऐप का उपयोग कर रहे हैं, तो जरूर तय करें कि यह आपकी जरूरतों के अनुसार प्राथमिकता देता है और आपके इलाके में इसकी सेवा उपलब्ध है।

जब आप राशन खरीदने के लिए ऑनलाइन भुगतान करते हैं, तो जान लें कि आपका लेनदेन सुरक्षित माध्यम से हो रहा है। आपका डेबिट या क्रेडिट कार्ड की जानकारी किसी भी असुरक्षित स्थान पर दर्ज न करें।

राशन उत्पादों की गुणवत्ता पर ध्यान दें। ऑनलाइन खरीदी गई चीजों का लेबल और गुणवत्ता सत्यापन करें और अगर आपको कोई असुविधा मिलती है, तो कस्टमर केयर को उसकी कंप्लेंट करें।

राशन की डिलीवरी की विशेषता को ध्यान में रखें। डिलीवरी समय और चार्ज के करने के तरीके आपके अनुसार उचित है।

अगर कोई समस्या या शिकायत होती है, तो आपको खरीदारी करने वाली वेबसाइट या ऐप के सहायता केंद्र से संपर्क करने के लिए उनकी संपर्क जानकारी होनी चाहिए।

ऑनलाइन महीने का राशन खरीदते समय इन बातों का पालन करें

जरूरी सामान का लिस्ट बना लें

सबसे पहले, अपनी जरूरतों का आकलन करें और यह तय करें कि आपको कितना राशन चाहिए। अपने परिवार के आकार, आहार की आदतों और रसोई की आदतों पर विचार कर के आप लिस्ट बना सकते हैं। यह अच्छा तरीका हो सकता है कि आप पहले से ही अपना बजट बना लें, ताकि जरूरी सामान लिया जा सके।

वेबसाइटों की तुलना करें

एक बार जब आप अपनी जरूरतों को समझ लें, तो कई अलग-अलग वेबसाइटों की तुलना करें। विभिन्न वेबसाइटों पर कीमतें और उत्पादों की उपलब्धता में काफी अंतर हो सकता है। वही सामान कार्ट में डालें जिसका दाम आपके अनुसार हो। इससे आप फिजूल खर्च से बच सकते हैं।

अधिक ऑफर के लालच से बचें

कई वेबसाइटें छूट और ऑफर प्रदान करती हैं। इन ऑफर का सही लाभ उठाकर आप पैसे बचा सकते हैं। लेकिन जरूरत से ज्यादा सामान इसलिए न खरीद लें क्योंकि आपको यह उत्पाद अधिक ऑफर में मिल रहा है। अधिक ऑफर वाले सामान जिनकी जरूरत नहीं है, इसे खरीदने पर आपके अधिक पैसे खर्च हो सकते हैं।

फैंसी आइटम के बजाए किफायती सामान खरीदने की कोशिश करें

अगर आप एक बड़ी मात्रा में राशन खरीद रहे हैं, तो मुफ्त डिलीवरी के लिए योग्य बनने की कोशिश करें। यह आपको पैसे बचाने में मदद करेगा। साथ ही कोशिश करें अपने राशन में वही समान लें जो किफायती और पूरक है। फैंसी समान आपके बजट लेवल को बढ़ा सकती है। ऑनलाइन खरीदारी करते वक्त इन बातों का ध्यान रखना चाहिए।

रिटर्न पॉलिसी के बारे में जरूर चेक कर लें

अगर आप किसी उत्पाद से संतुष्ट नहीं हैं, तो आपके लिए यह महत्वपूर्ण है कि कंपनी एक अच्छी रिटर्न पॉलिसी प्रदान करती है। इस प्रक्रिया में आपको अधिक समय न लगे। निर्धारित समय सीमा के अंदर ही आपका सामान रिटर्न हो सके।

ऑनलाइन महीने का राशन खरीदना एक आसान और सुविधाजनक तरीका है। इन तरीकों का पालन करके, आप पैसे बचा सकते हैं और अपने परिवार के लिए स्वस्थ और पौष्टिक राशन खरीद सकते हैं। इससे आपको पैसे बचाने के साथ साथ अच्छी क्वालिटी का सामान मिल सकता है।

हनीमून के लिए लक्षद्वीप का ये आईलैंड मालदीव से कम नहीं

हनीमून मनाने के विदेश में नहीं, बल्कि भारत के लक्षद्वीप में मौजूद इन हसीन आइलैंड के किनारे पहुंच सकते हैं। इन द्वीपों की खूबसूरती दुनिया भर में फेमस हैं। लक्षद्वीप भारत का एक बेहद ही खूबसूरत और मनमोहक केंद्र शासित प्रदेश है। लक्षद्वीप की खूबसूरती इस कदर प्रचलित है कि यहां सिर्फ देशी ही नहीं, बल्कि विदेशी सैलानी भी घूमने के लिए पहुंचते हैं।

लक्षद्वीप की खूबसूरती में चार चांद लगाने काम करते हैं यहां मौजूद आइलैंड यानी द्वीप। अरब सागर में स्थित लक्षद्वीप एक नहीं बल्कि, दर्जन से भी अधिक हसीन द्वीपों के लिए जाना जाता है। लक्षद्वीप में स्थित कुछ आइलैंड की खूबसूरती और मेहमान नवाजी इस कदर प्रचलित है कि यहां हर रोज दर्जन से भी अधिक कपल्स हनीमून मनाने के लिए पहुंचते हैं। इस आर्टिकल में हम आपको कुछ ऐसे हसीन आइलैंड के बारे में बताने जा रहे हैं, जहां आप भी हसीन हनीमून मनाने के लिए पहुंच सकते हैं।

मिनिकॉय द्वीप

लक्षद्वीप में स्थित सबसे खूबसूरत आइलैंड की बात होती है, तो सबसे पहले मिनिकॉय द्वीप का जिक्र जरूर होता है। यह आइलैंड जिस तरह अपनी खूबसूरती के लिए फेमस है, ठीक उसी तरह कपल्स के बीच भी फेमस है।

बेहतरीन नजारे और हसीन मेहमान नवाजी के लिए चलते हर दिन दर्जन से अधिक कपल्स यहां हनीमून मनाने के लिए पहुंचते हैं। मिनिकॉय द्वीप में मौजूद आलीशान और हसीन रिसॉर्ट भी कपल्स की स्वागत में खड़े रहते हैं। यहां स्थित रिसॉर्ट द्वारा कपल्स को एक से एक बेहतरीन चीजों की सुविधा दी जाती है।

अगत्ती द्वीप

लक्षद्वीप में मौजूद किसी हसीन और मनमोहक द्वीपों पर घूमने और हनीमून मनाने की बात होती है, तो अगत्ती द्वीप का नाम जरूर लिया जाता है। इसलिए अगत्ती द्वीप को हनीमून का स्वर्ग भी माना जाता है।

अरब सागर के नीले पानी, सफेद रेत और बड़े-बड़े पेड़ अगत्ती द्वीप की खूबसूरती में चार चांद लगाने का काम करते हैं। समुद्र किनारे मौजूद टेंट और टेंट के पास जलती रंगीन लाइट्स और साथ में हमसफर के साथ हनीमून मानना किसी हसीन जन्नत से कम नहीं। अगत्ती द्वीप में हनीमून मनाने के अलावा यहां आप वाटर स्पोर्ट्स का भी लुत्फ उठा सकते हैं।

बांगरम द्वीप

हिंद महासागर के साफ और नीले पानी में स्थित बांगरम द्वीप देशी और विदेशी सैलानियों के बीच काफी फेमस आइलैंड माना जाता है। मूंगा चट्टान और लुभावने दृश्यों के लिए फेमस बांगरम द्वीप कपल्स के बीच भी काफी लोकप्रिय है।

बांगरम द्वीप के आसपास मौजूद रिसॉर्ट कपल्स के लिए एक से एक बेहतरीन सुविधाएं प्रदान करती है। कई रिसॉर्ट रात के समय कपल्स के लिए हसीन लाइट्स और डिनर की भी सुविधा प्रदान करते हैं। आपको बता दें कि बांगरम द्वीप का सूर्योदय और सूर्यास्त अन्य आइलैंड से काफी फेमस माना जाता है। (मालदीव की तरह खूबसूरत है भारत का यह आइलैंड)

कावारत्ती द्वीप

लक्षद्वीप की राजधानी होने के लिए कावारत्ती द्वीप अन्य पर्यटकों के साथ-साथ कपल्स के बीच भी काफी फेमस माना जाता है। कावारत्ती द्वीप सबसे सुंदर रत्नों में से एक माना जाता है। कावारत्ती द्वीप नीले पानी, सफेद रेत और हसीन नजारों के लिए बहुत फेमस है। समुद्र के बीच में मौजूद यहां के रिसॉर्ट कपल्स को एक से एक हसीन चीजों की सुविधा देते हैं। कई रिसॉर्ट और होटल कपल्स के लिए दुल्हन की तरह सजा देते हैं। यहां पार्टनर के साथ वाटर स्पोर्ट्स का लुत्फ उठाते हुए यादगार हनीमून मना सकते हैं। यहां स्कूबा डाइविंग करना न भूलें।

सुप्रीम कोर्ट बोला-सिर्फ वीआई के एजीआर पर पुनर्विचार की इजाजत

अन्य टेलीकॉम कंपनियों के लिए आदेश लागू नहीं; वोडाफोन-आइडिया पर 83,400 करोड़ का एजीआर बकाया

नई दिल्ली, 5 नवंबर (एजेंसियां)। सुप्रीम कोर्ट ने यह साफ किया है कि एडजस्टेड ग्रॉस रेवेन्यू बकाए की दोबारा जांच का आदेश सिर्फ वोडाफोन-आइडिया पर ही लागू होगा। अन्य टेलीकॉम कंपनियों के लिए आदेश लागू नहीं होगा। सुप्रीम कोर्ट ने 27 अक्टूबर को केंद्र सरकार को वोडाफोन-आइडिया के एडजस्टेड ग्रॉस रेवेन्यू बकाए पर पुनर्विचार करने की इजाजत दी थी।

3 नवंबर को जारी लिखित आदेश में मुख्य न्यायाधीश बी.आर. गवई और जस्टिस के. विनोद चंद्रन की दो न्यायाधीशों वाली बेंच ने कहा "हमारे 27 अक्टूबर के आदेश में सिर्फ इतना संशोधन किया गया है कि केंद्र सरकार वोडाफोन-आइडिया के 2016-17 तक के पूरे एडजस्टेड ग्रॉस रेवेन्यू बकाए की दोबारा जांच कर सकेगी। बाकी आदेश जस का तस रहेगा।"

कंपनी ने सुप्रीम कोर्ट में दलील दी थी कि एडजस्टेड ग्रॉस रेवेन्यू की गणना में कई कम्पोनेंट्स गलत जोड़े गए हैं। वोडाफोन-आइडिया ने कहा था कि उसे ब्याज और पेनल्टी में छूट दी जाए और देनदारी को दोबारा रिफॉर्मूलेट (पुनर्गणना) किया जाए। इस याचिका में कंपनी ने 9,450 करोड़ की अतिरिक्त मांग को भी चुनौती दी थी। वोडाफोन-आइडिया पर फिलहाल लगभग 83,400 करोड़ का एडजस्टेड ग्रॉस रेवेन्यू बकाया है। एडजस्टेड ग्रॉस रेवेन्यू (एडजस्टेड ग्रॉस रेवेन्यू) टेलीकॉम कंपनियों की कमाई का वह हिस्सा है जिस पर सरकार लाइसेंस शुल्क और स्पेक्ट्रम उपयोग शुल्क (SUC) लगाती है।

विवाद की शुरुआत तब हुई जब डिपार्टमेंट ऑफ टेलीकॉम ने कहा कि एडजस्टेड ग्रॉस रेवेन्यू में नॉन-टेलीकॉम राजस्व (जैसे ब्याज, डिविडेंड, संपत्ति की बिक्री) भी शामिल की जाएगीं। लेकिन कंपनियों का तर्क था कि एडजस्टेड ग्रॉस रेवेन्यू सिर्फ कोर टेलीकॉम रेवेन्यू होना चाहिए।

इसी को लेकर 2005 में सेल्युलर ऑपरेटर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया ने टेलीकॉम डिस्प्यूट्स सेटलमेंट अपील ट्रिब्यूनल में एडजस्टेड ग्रॉस रेवेन्यू की परिभाषा को चुनौती दी। यहीं से केस की शुरुआत हुई।

इसके बाद 2015 में टेलीकॉम डिस्प्यूट्स सेटलमेंट अपील ट्रिब्यूनल ने फैसला दिया कि एडजस्टेड ग्रॉस रेवेन्यू में नॉन-टेलीकॉम राजस्व (कैपिटल रिसीट्स, रेंट, डिविडेंड आदि) शामिल नहीं होंगे। डिपार्टमेंट ऑफ टेलीकॉम इस फैसले को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी।

अक्टूबर 2019 में सुप्रीम कोर्टने डिपार्टमेंट ऑफ टेलीकॉम के एडजस्टेड ग्रॉस रेवेन्यू फॉर्मूले को सही ठहराते हुए कहा कि टेलीकॉम कंपनियों को पिछले 14 साल के बकाया ADUES (लगभग 1.47 लाख करोड़) चुकाना होंगा।

एडजस्टेड ग्रॉस रेवेन्यू ड्यूज चुकाने में सबसे बड़ी प्रभावित कंपनियां वोडाफोन आइडिया (58,254 करोड़), भारती एयरटेल (43,980 करोड़), टाटा टेलीकॉम (16,798 करोड़) रहीं। 2021 से 2024 के बीच वोडाफोन आइडिया की वित्तीय मुश्किलें बढ़ती गईं। वोडाफोन-आइडिया ने डिपार्टमेंट ऑफ टेलीकॉम को चेतावनी दी की बिना सरकारी मदद के वह FY26 के बाद काम नहीं कर पाएगी। इसके मार्च 2025 में सरकार ने वोडाफोन आइडिया के 36,950 करोड़ के स्पेक्ट्रम ड्यूज को इक्विटी में कन्वर्ट किया गया, जिससे सरकार को कंपनी में 49% हिस्सेदारी मिली। मई 2025: वोडाफोन आइडिया बकाया AGR ड्यूज को माफ करने की याचिका लगाई। लेकिन याचिका खारिज कर दी गई।

क्रेडिट कार्ड लिमिट बढ़ाने के नाम पर हो रहा फ्रॉड

खुद को बैंक अधिकारी बताकर कॉल करते हैं ठग; जानें OTP फ्रॉड से कैसे बचें

नई दिल्ली, 5 नवंबर (एजेंसियां)। बैंक अकाउंट या कार्ड की लिमिट बढ़ाने के नाम पर एक नया फ्रॉड तेजी से फैल रहा है। ठग अब खुद को बैंक अधिकारी बताकर कॉल या मैसेज करते हैं और कहते हैं "आपकी क्रेडिट लिमिट बढ़ाई जा रही है, कृपया ओटीपी बताएं।" जैसे ही आप ओटीपी बताते हैं, वो आपके कार्ड या बैंक अकाउंट को नए डिवाइस से लिंक कर लेते हैं और पैसे निकाल लेते हैं।

ठग के पास पहले से आपका नाम और कार्ड के आखिरी 4 अंक होते हैं। वो कहता है कि लिमिट बढ़ाने के लिए "सिस्टम वेरिफिकेशन" जरूरी है। उसी वक्त एक ओटीपी आता है, जो असल में नए डिवाइस या वॉलेट लिंक करने के लिए होता है। जैसे ही आप ओटीपी बताते हैं, आपका कार्ड ठग के फोन या ऐप से जुड़ जाता है। कुछ मामलों में ठग स्क्रीन शेयरिंग एप भी इंस्टॉल करवाते हैं।

अगर आपने खुद लिमिट अपग्रेड के लिए आवेदन नहीं किया, तो समझ जाइए कि ऐसा कोई कॉल फर्जी है। अनजान नंबर से कॉल और आए OTP मांगा जाए तो कट कर दें। बैंक कभी PIN, CVV या OTP नहीं मांगता।

कॉल पर ठगों की 'अभी बताइए नहीं तो ऑफर खत्म हो जाएगा' जैसी बातों से सावधान रहें। निजी नंबर या अज्ञात लिंक से आए SMS पर क्लिक न करें। अगर मैसेज में लिखा है "Do Not Share OTP" और कॉलर वही मांग रहा है तो 100% फ्रॉड है।

फ्रॉड से इन टिप्स से बचें

हर ट्रांजेक्शन का SMS/Email अलर्ट ऑन रखें।

कम ट्रांजेक्शन लिमिट सेट करें जरूरत न हो तो इंटरनेशनल और ऑनलाइन ऑप्शन बंद रखें। कार्ड का फोटो या ओटीपी का स्क्रीनशॉट कभी गैलरी या चैट में सेव न करें। फोन या सिम बदलने पर पुराने डिवाइस की बैंक एक्सेस हटाना न भूलें। लॉक कार्ड फीचर का इस्तेमाल करें जब कार्ड उपयोग में न हो।

अगर गलती से ओटीपी बता दिया तो क्या करें

तुरंत बैंक ऐप खोलकर कार्ड को ब्लॉक करें। सभी बैंकिंग एप्स और ईमेल के पासवर्ड बदलें। कस्टमर केयर पर कॉल कर अंतरराष्ट्रीय या ऑनलाइन ट्रांजेक्शन बंद करवाएं। शिकायत दर्ज कर 1930 हेल्पलाइन या cybercrime.gov.in पर रिपोर्ट करें।

'रिश्वत के पैसों से कमाया गया मुनाफा भी अपराध से हुई आय', घूसखोरों पर हाईकोर्ट की टिप्पणी

नई दिल्ली, 5 नवंबर (एजेंसियां)। दिल्ली हाईकोर्ट ने शेयर बाजार में निवेश के बाद रिश्वत के पैसे से हुई आमदनी को अपराध से हुई आय माना है। अदालत ने कहा है कि यह राशि के खिलाफ धन शोधन से जुड़े कानूनों के तहत कार्रवाई की जा सकती है। हाईकोर्ट ने कहा है कि केवल कीमत बढ़ जाने से किसी गलत स्रोत से हुई आमदनी पवित्र नहीं हो जाती। अदालत ने इस बारे में कहा कि बढ़ा हुआ मूल्य रिश्वत के मूल अवैध स्रोत का इस्तेमाल कर ही हासिल किया जाता है, इसलिए इसे सही नहीं माना जा सकता।

न्यायमूर्ति अनिल क्षेत्रपाल और न्यायमूर्ति हरीश वैद्यनाथन शंकर की पीठ ने 3 नवंबर के फैसले में कहा, धनशोधन से जुड़े अपराध केवल आपराधिक अधिग्रहण के प्रारंभिक कृत्य तक ही सीमित नहीं है, बल्कि आय से जुड़ी हर प्रक्रिया या गतिविधि तक फैला हुआ है, जिसमें कई लेनदेन के माध्यम से स्तरीकरण, वैध अर्थव्यवस्था में

एकीकरण और अर्जित धन को वैध के रूप में पेश करना शामिल है।

उदाहरण देते हुए पीठ ने कहा कि यदि कोई लोक सेवक रिश्वत लेता है तो यह भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम के तहत अपराध है। इसके बाद बाद वह उस राशि को मादक पदार्थों के व्यापार, अचल संपत्ति, तरजीजी शेयरों या किसी अन्य माध्यम का इस्तेमाल कर निवेश करता है, पर इससे ये वैध नहीं हो जाते। इसके अवैध होने का दाग फिर भी लगा रहता है। अदालत ने कहा कि इस तरह से हुई पूरी आमदनी को कुर्क किया जा सकता है, चाहे इसे बाद में किसी भी माध्यम से भेजा गया हो या इसका स्वरूप कुछ भी हो।

अदालत ने कहा, इसी तरह, यदि रिश्वत के रूप में ली गई राशि को शेयर बाजार में निवेश किया जाता है, इस पर मुनाफा मिलता है तो पूरी बढ़ी हुई राशि अपराध की आय मानी जाएगी। न्यायालय ने यह निर्णय प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की एक अपील को स्वीकार करते हुए पारित किया। अपील में मेसर्स प्रकाश इंडस्ट्रीज लिमिटेड (पीआईएल) के पक्ष में फतेहपुर कोयला ब्लॉक के आवंटन से जुड़े मामले में एकल न्यायाधीश के आदेश को चुनौती दी गई थी।

ईडी ने अपनी अपी में बताया कि एएक अनंतिम कुर्की आदेश (पीएओ) जारी किया गया था। इसके तहत 122.74 करोड़ रुपये मूल्य की संपत्ति कुर्क की गई। यह कार्रवाई इसलिए की गई क्योंकि अधिमान्य शेयरों की बिक्री से हुआ गलत वित्तीय लाभ अपराध की आय है। एकल न्यायाधीश ने कहा था कि चूंकि अधिमान्य शेयर जारी करना एफआईआर, आरोपपत्र या ईसीआईआर का हिस्सा नहीं था, इसलिए ईडी के पास पीएओ जारी करने की शक्ति और अधिकार क्षेत्र का अभाव था।

अमेरिका में टूटते रिकॉर्ड से भारत की बढ़ी टेंशन

नई दिल्ली, 5 नवंबर (एजेंसियां)। अमेरिका में सरकारी कामकाज ठप है। यह 36वें दिन में प्रवेश कर चुका है। अब तक का यह सबसे लंबा सरकारी शटडाउन बन गया है। इस वजह से लाखों अमेरिकी लोगों की जिंदगी प्रभावित हुई है। सरकारी प्रोग्रामों में कटौती होने लगी है। उड़ानों में देरी हो रही है। देशभर के सरकारी कर्मचारी बिना वेतन के काम करने को मजबूर हैं। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने डेमोक्रेट्स के साथ बातचीत करने से इनकार कर दिया है। दोनों पक्ष सरकारी खर्च को अधिकृत करने वाले फंडिंग बिल (विनियोग विधेयक) पर सहमत नहीं हैं। इसने भारत की भी टेंशन बढ़ा दी है। अमेरिकी अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभाव के कारण उस पर भी अप्रत्यक्ष असर देखने को मिल सकता है। अमेरिकी इतिहास का सबसे लंबा शटडाउन 35 दिनों तक चला था। जनवरी 2019 में उसकी शुरुआत हुई थी।

अमेरिका में 'शटडाउन' तब होता है जब कांग्रेस (अमेरिकी संसद) और राष्ट्रपति आगामी वित्तीय वर्ष के लिए सरकारी खर्च को मंजूरी देने वाले फंडिंग बिल पर सहमत नहीं हो पाते हैं। यह स्थिति आमतौर पर दो प्रमुख राजनीतिक दलों डेमोक्रेट्स और रिपब्लिकन के बीच बजटीय प्राथमिकताओं या किसी विवादास्पद नीतिगत मुद्दे पर मतभेद के कारण उत्पन्न होती है। ताजा मामले में इसकी वजह सीमा सुरक्षा दीवार का वित्तपोषण, स्वास्थ्य सेवा सब्सिडी और विशिष्ट सरकारी कार्यक्रमों का खर्च है। कानूनी रूप से धन की कमी होने पर सरकार को 'गैर-आवश्यक' सेवाओं और विभागों को बंद करने के लिए मजबूर होना पड़ता है। जबकि 'आवश्यक' सेवाएं (जैसे राष्ट्रीय सुरक्षा और सार्वजनिक सुरक्षा) सीमित कर्मचारियों के साथ जारी रहती हैं।

डेमोक्रेट्स चाहते हैं कि स्वास्थ्य बीमा सब्सिडी को बचाया जाए। लाखों लोगों के लिए स्वास्थ्य देखभाल की लागत आसमान छू रही है। इससे भी मुश्किल बात यह है कि बड़ी संख्या में सीनेटर अफोर्डेबल केयर एक्ट (ACA) सब्सिडी के लिए गतिरोध का समाधान चाहते हैं, जो साल के अंत में समाप्त होने वाली है। बीमा प्रीमियम नोटिस भेजे जा रहे हैं। लाखों अमेरिकी आसमान छूती कीमतों से हैरान हैं।

इस बीच, खाद्य सहायता, बाल देखभाल फंड और अनगिनत अन्य सरकारी सेवाएं गंभीर रूप से बाधित हो रही हैं। सैकड़ों हजारों संघीय कर्मचारी या तो फरलो (बिना वेतन छुट्टी) पर हैं या उनके बिना वेतन के काम करने की उम्मीद है। परिवहन सचिव शॉन डफी ने भविष्यवाणी की है कि अगले हफ्ते आसमान में अराजकता फैल सकती है, अगर एयर ट्रैफिक कंट्रोलर को एक और वेतन नहीं मिला। लेबर यूनियनें सांसदों पर सरकार को फिर से खोलने के लिए दबाव डाल रही हैं।

अमेरिकी सरकारी दफ्तरों के बंद होने से भारतीय नागरिकों के वीजा आवेदनों (जैसे H-1बी) और आव्रजन प्रक्रियाओं में देरी हो सकती है। इससे भारत के आईटी और अन्य पेशेवर प्रभावित होते हैं। भारत और अमेरिका के बीच चल रही किसी भी व्यापार संधि या नीतिगत वार्ता पर काम धीमा हो सकता है। इससे व्यापारिक संबंध प्रभावित हो सकते हैं। अमेरिकी फूड रेगुलेटर एफडीए जैसे नियामक निकायों के कामकाज पर असर पड़ने से भारतीय कंपनियों के लिए दवाओं या अन्य उत्पादों के अनुमोदन में देरी हो सकती है।

दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था में अनिश्चितता से वैश्विक निवेशकों का भरोसा हिलता है। इसका असर भारतीय शेयर बाजारों और रुपये पर भी पड़ सकता है। इससे विदेशी निवेश (एफआईआई) पर नकारात्मक प्रभाव पड़ने के आसार हैं। वैश्विक जोखिम बढ़ने पर निवेशक सुरक्षित विकल्प तलाशते हैं। इससे डॉलर की मांग बढ़ सकती है और रुपये पर दबाव आ सकता है।

शटडाउन के दौरान अमेरिकी एयर ट्रैफिक कंट्रोलर और टीएसए अधिकारी बिना वेतन के काम करने को मजबूर हो सकते हैं। इससे उनकी अनुपस्थिति दर बढ़ जाती है। इसके चलते अमेरिकी हवाई अड्डों पर उड़ानों में विलंब या रद्द होने की खबरें आती हैं।

दैनिक पंचांग

श्री सिद्धार्थी नामक संवत्सर-विक्रम संवत्- **2082**
शक संवत् **-1947,** सूर्य दक्षिणायने,ऋतु- हेमन्त
महावीर निर्वाण संवत् **-2551**
कलियुग अवधि-**432000** सूर्योदय **06-18**
भोग्य कलि वर्ष-**426874** सूर्यास्त. **17-41**
कलियुग संवत् **-5126** वर्ष,
कल्पारंभ संवत् **-1972949126**
सृष्टि ग्रहारंभ संवत्-**1955885126**
दिशाशूल - दक्षिण - जीरा खाकर घर से निकले
मास - मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष गुरुवार **06 Nov**
तिथि - प्रतिपदा **14-55** तक उपरान्त प्रतिपदा
नक्षत्र - भरणी **06-34** अहोरात्र तक
योग - व्यतिपात **07-04** अहोरात्र तक
करण - कौलव **14-55** तक उप तैतिल
व्रत
त्योहार

विशेष- राशिफल ग्रहों के गोचर के आधार पर लिखा गया है।सूक्ष्म फलादेश के लिए जन्म पत्रिका की सूक्ष्म स्थिति व दशान्तर्दशा को विशेष प्रभावित समझना चाहिए।

राहुकाल 13-25 से 14-51 तक

पं महेशचन्द्र शर्मा **9247132654 9167555710**

दिन का चौघडिया		रात का चौघडिया	
शुभ	06-18 - 07-43 शुभ	अमृत	17-40 - 19-16 शुभ
रोग	07-43 - 09-09 अशुभ	चंचल	19-16 - 20-51 शुभ
उत्पात	09-09 - 10-34 अशुभ	रोग	20-51 - 22-25 अशुभ
चंचल	10-34 - 11-59 शुभ	काल	22-25 - 23-59 अशुभ
लाभ	11-59 - 13-25 शुभ	लाभ	23-59 - 01-34 शुभ
अमृत	13-25 - 14-51 शुभ	उत्पात	01-34 - 03-09 अशुभ
काल	14-51 - 16-16 अशुभ	शुभ.	03-09 - 04-44 शुभ
शुभ	16-16 - 17-40 शुभ	अमृत	04-44 - 06-18 शुभ

आपका राशिफल

मेष (चू,चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ,)
आज आप जो भी कार्य करेंगे , सफलता आपके कदम चूमेगी । अगर आप एक प्रतियोगी परीक्षा में बैठे थे तो आज आपको सकारात्मक परिणाम मिलेगा। आज का दिन पदोन्नति या अधिक जिम्मेदारी लेने के बारे में अपने वरिष्ठ अधिकारियों के साथ विचार विमर्श आरंभ करने के लिए उपयुक्त है।

वृष (ई, उ, ए, जो, वा, वी, वू, वे, वो,)
आप कुछ मिलनसार नए लोगों या विदेशी प्रतिनिधियों से आज के दिन मिल सकते हैं ! स्वतंत्र रूप से उन लोगों के साथ संवाद करे और जितनी उपयोगी जानकारी इकट्ठा कर सके करे क्योंकि यह आपकी परियोजना के पूरा होने में आप के लिए बहुत मददगार साबित होगा । किसी भी विचलित करने वाले परिदृश्य से परेशान न हो जो की आपके वरिष्ठ सहकर्मी ने आपके लिए बनाया हो ।

मिथुन (का, की, कू, घ, ड, छ, के, को, ह,)
जैसे जैसे दिन आगे की और बढ़ेगा ये और बेहतर होता चला जाएगा। आपने पिछले कुछ दिनों में जो निराशाओं का अनुभव किया है , उनका अंत हो जाएगा और आप आशावादिता की ताजा हवा में सांस ले सकते हैं। आपके वरिष्ठ अधिकारी आपकी क्षमता के अनुरूप कठिन मुद्दों से निपटने के लिए आपको पुरस्कृत भी कर सकते है।

कर्क (ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो,)
आप में अति आत्मविश्वास पैदा होगा क्योकि आपके सारे कार्य बड़ी खूबसूरती के साथ क्रियान्वयन हो रहे है। आज समय है की आप अपना कदम पीछे ले और सोचे की वास्तव में आप के लिए क्या आवश्यक है , उसका मूल्यांकन करे और ध्यान दे की आप अपनी क्षमताओ से क्या हासिल कर सकते हैं ।

सिंह (मा, मी ,मू ,मे, मो, टा, टी ,टू ,टे,)
ग्रहों की ऊर्जा के प्रभाव के तहत आज आप अपने भीतर की आवाज सुनने के लिए सक्षम हो पायेंगे । इन आवाजों के गहरे अर्थ को आप समझने की कोशिश करे । अगर आप उन्हें समझ लेते हैं, तो आप आसानी से काम कर पायेंगे । इसके अलावा, स्पष्ट रूप से अपने आप को व्यक्त करने में संकोच न करे ।

कन्या (टो पा पी पू ष ण ठ पे पो)
आपको अपने काम से प्यार है और आप अच्छा कार्य कर रहे हैं। हालांकि, विपरीत ग्रह आपके कार्यस्थल में अस्थायी गड़बड़ी का कारण बन सकते है। इन क्षणिक भावनाओं के आधार पर किसी भी आवेगी निर्णय लेने से बचे । आप अपने कार्यस्थल पर अपने गुस्से को काबू रखे और विचलित करने वाली स्थितियों को दरकिनार करे अन्यथा आप एक ऐसी नौकरी को त्याग सकते है।

तुला (रा, री, रू ,रे ,रो , ता, ती, तू ,ते,)
आप किसी भी कार्य को अच्छी तरह से करने में बहुत गर्व महसूस करते है। यह अब आपके वरिष्ठ अधिकारियों के ध्यान में आएगा । कुछ अतिरिक्त जिम्मेदारी भी आपको दी जा सकती है जो की आपके करियर की प्रगति के लिए नए दरवाजे और आयाम खोलेगी । आय में भी वृद्धि की संभावना है।

वृश्चिक (तो,ना,नी, ने,नू, नो, या, यी ,यू,)
आप जो चाहते हैं , वो सब कुछ हासिल करने की आप में शक्ति है! दूसरे आप के बारे में क्या सोचते है , इस तरफ ध्यान न दे । वे लोग इस तरह का दिखावा कर सकते है , की जिससे से आप को नीचा देखना पड़े पर अंदर से वे जानते है की आप में अपार प्रतिभा है । अपने आत्म विश्वास का आनंद लें क्यों की आपका खेल खेलने से पहले ही जितना तय है ।

धनु (ये, यो,भा, भी, भू धा ,फा, ढा, भे)
आप इस समय परिस्थितियों के गहन अर्थ को समझने की कोशिश में रहेंगे ! आप हाल ही में अपने पूरे किये गए कार्यों की समीक्षा करेंगे और अपने काम को और बेहतर बनाने के तरीके पर गौर करेंगे । हालांकि वित्तीय प्रबंधन आपके लिए मुश्किल साबित हो सकता है । आपके लिए धन संचित करना मुश्किल होगा !

मकर (भो, जा, जी, खो, खू, खे, खो, गा, गी)
जब आप एक नई परियोजना में तल्लीन हो जाओगे तो शायद ही अन्य बातों के लिए आपको समय मिलेगा । आपको सावधान रहने की जरुरत है की रास्ते में आ रही किसी भी महत्वपूर्ण जानकारी आप से छूट न जाये ! यह एक उच्च स्थान प्राप्त करने में सहायता करने के लिए महत्वपूर्ण संदेश भी हो सकता है।

कुंभ (गु, गे ,गो, सा, सी, सू, से, सो, दा,)
आज आप बहुत महत्वाकांक्षी महसूस करेंगे । नए अवसर आपके कार्य क्षेत्र में खुलेंगे और आप उनका लाभ लेने के लिए उत्सुक होंगे । ध्यान रखे की आपकी उत्सुकता आपके सहयोगियों के बीच ईर्ष्या का कारण न बने इसलिए सावधान रहें। आपको ये एहसास करने की जरूरत है की अपनी परियोजनाओं के सफलतापूर्वक क्रियान्वयन के लिए।

मीन (दी, दू,थ, झ, ञ, दे, दो, चा,ची)
संतुलन बनाना आज का प्रमुख विषय रहेगा और आप अपनी आय और व्यय के बीच एक संतुलन हासिल करने की कोशिश करेंगे । आप अपनी आय के पूरक के लिए एक दूसरी नौकरी की तलाश शुरू कर सकते है और आज आपको एक बहुत अच्छा अवसर मिलने की संभावना है। साथ ही साथ आप अपने व्यय को भी नियंत्रित करने के लिए खर्चों पर लगाम लगाएंगे ।

श्री पंचागुली ज्योतिष केन्द्र

चीन से बढ़ते पाइप आयात पर भारतीय उद्योग की चेतावनी

डंपिंग और सुरक्षा खतरे को लेकर जताई चिंता

नई दिल्ली , 5 नवंबर (एजेंसियां)। चीन से सीमलेस पाइप्स और ट्यूब्स का आयात वित्त वर्ष 2024-25 में दोगुना से अधिक बढ़कर 4.97 लाख मीट्रिक टन पर पहुंच गया है। घरेलू उद्योग संगठन सीमलेस ट्यूब मैन्युफैक्चरर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया (एसटीएमएआई) के अनुसार, पिछले वित्त वर्ष में यह आंकड़ा 2.44 लाख मीट्रिक टन था। उद्योग के आंकड़ों के मुताबिक, वित्त वर्ष 2023 में यह आयात 1.47 लाख टन रहा था, जबकि वित्त वर्ष 2021-22 में केवल 82,528 मीट्रिक टन का आयात हुआ था।

चीन से पाइप्स के आयात में पांच गुना बढ़ा

STMAI के अध्यक्ष शिव कुमार सिंघल ने बताया कि वित्त वर्ष 2025 में चीन से पाइप्स के आयात में वित्त वर्ष 2022 की तुलना में लगभग पांच गुना वृद्धि दर्ज की गई है। उन्होंने बताया कि घरेलू पाइप उद्योग की सुरक्षा के लिए भारत सरकार के मजबूत समर्थन के बावजूद चीनी पाइप आयात में समय के

साथ तेजी से वृद्धि हुई है। चीन से आयात पर अंकुश लगाने में ये प्रयास काफी हद तक अप्रभावी साबित हुए हैं।

उद्योग संगठन ने चीनी कंपनियों पर लगाए गंभीर आरोप

उद्योग संगठन ने कहा कि चीनी कंपनियां भारतीय बाजार में पाइपों की डंपिंग कर रही हैं। साथ ही भारतीय सीमा शुल्क पर अधिक बिलिंग के माध्यम से करों और शुल्कों की चोरी कर रही हैं। सिंघल ने बताया कि कथित तौर पर चीनी आयातक कस्टम क्लीयरेंस के दौरान उत्पादों के चालान मूल्य को कृत्रिम रूप से बढ़ा-चढ़ाकर दिखा रहे हैं, जबकि वही उत्पाद भारतीय बाजार में घरेलू निर्माताओं की तुलना में काफी कम कीमत पर बेच रहे हैं। यह निष्पक्ष व्यापार के सिद्धांतों को कमजोर करती है और भारतीय उत्पादकों को गंभीर प्रतिस्पर्धात्मक नुकसान पहुंचाती है।

उन्होंने कहा कि चीन न केवल बाजार में सस्ते पाइपों की बाढ़ लाकर भारतीय अर्थव्यवस्था को नुकसान पहुंचा रहा है, बल्कि ताप विद्युत, परमाणु ऊर्जा, तेल व गैस जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों को घटिया सामग्री की आपूर्ति करके गंभीर सुरक्षा चिंताएं भी पैदा कर रहा है।

सिंघल ने कहा कि ये गतिविधियां भारत के भविष्य के ऊर्जा और बुनियादी ढांचे के परिदृश्य के प्रमुख घटकों में घुसपैठ करने और संभावित रूप से समझौता करने के रणनीतिक प्रयास का संकेत देती हैं। ऐसे घटनाक्रमों पर तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता है, क्योंकि ये भारत की आर्थिक संप्रभुता और राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए दीर्घकालिक जोखिम पैदा कर सकते हैं।

उन्होंने बताया कि सीमलेस पाइपों का न्यूनतम आयात मूल्य 85,000 रुपये प्रति टन है और भारतीय बाजारों में छोटी मात्रा में चीनी पाइपों का बाजार मूल्य 70,000 रुपये प्रति टन है। इसके परिणामस्वरूप बड़े पैमाने पर डंपिंग के कारण स्वदेशी क्षमता का कम उपयोग हो रहा है। साथ ही इससे रोजगार के अवसर भी खत्म हो गए हैं।

पोर्टर में 350 लोगों को नौकरी से निकाले जाने की खबर

नई दिल्ली, 5 नवंबर (एजेंसियां)। बेंगलुरु स्थित ऑन-डिमांड लॉजिस्टिक्स प्लेटफॉर्म पोर्टर ने मंगलवार को छंटनी का एलान किया। कंपनी ने बताया है कि उसे अपनी लागत को तर्कसंगत बनाने के लिए कर्मचारियों की छंटनी का फैसला लेना पड़ा है। हालांकि, कंपनी ने आधिकारिक रूप से यह नहीं बताया है कि उसने कितने कर्मचारियों को नौकरी से निकाला है। मामले की जानकारी रखने वाले सूत्रों के अनुसार खुद को पब्लिक कंपनी बनाने की कवायद शुरू से पहले कंपनी ने लगभग 300-350 पदों में कटौती की है।

मंगलवार को एक बयान में पोर्टर ने कहा, हम एक ऐसे बदलाव के दौर से गुजर रहे हैं जिसके लिए एकमुश्त पुनर्गठन की जरूरत थी। इसका उद्देश्य आगे की राह के लिए एक मजबूत, अधिक चुस्त और आर्थिक रूप से लचीला संगठन बनाना है। इस यात्रा के दौरान हमें कुछ कठिन फैसले लेने पड़े हैं जिनका असर हमारे कर्मचारियों पर पड़ा है। यह ऐसा फैसला है जो आसान नहीं था और इन्हें सावधानीपूर्वक विचार-विमर्श के बाद लिया गया।

मीडिया रिपोर्ट्स में सितंबर में बताया गया था कि पोर्टर मौजूदा और नए निवेशकों से 10 से 11 करोड़ डॉलर की फंडिंग हासिल करने के अंतिम चरण में है। इस तरह कंपनी में कुल निवेश करीब 30 से 31 करोड़ डॉलर तक पहुंच जाएगा। मई में पोर्टर ने निजी इक्विटी फर्मों केदारा कैपिटल और वेलिंगटन मैनेजमेंट से 20 करोड़ डॉलर जुटाए थे। इसके लिए कंपनी का मूल्यांकन 1.2 अरब डॉलर आंका गया था। प्रणव गोयल, उत्तम डिग्गा और विकास चौधरी की ओर से 2014 में स्थापित, पोर्टर इंट्रा-सिटी लॉजिस्टिक्स और कूरियर सेवाएं प्रदान करता है। वित्त वर्ष 2025 में पोर्टर का परिचालन राजस्व 57% बढ़कर 4,306 करोड़ रुपये हो गया और वह मुनाफे में आ गई।

चीन और कंबोडिया से जुड़ा करोड़ों का शेयर ट्रेडिंग घोटाला बेनकाब

मुंबई 5 नवंबर (एजेंसियां)। नवी मुंबई पुलिस ने चीन और कंबोडिया से जुड़े शेयर ट्रेडिंग धोखाधड़ी का भंडाफोड़ किया है। अधिकारियों ने बताया कि पुलिस ने निवेशकों से करोड़ों रुपये ठगने वाले सात लोगों को गिरफ्तार किया है। उन्होंने बताया कि इस सफलता के परिणामस्वरूप, साइबर पुलिस ने भारत के कई राज्यों में 118 बैंक खातों को फ्रीज कर दिया है। साथ ही धोखाधड़ी वाले लेनदेन से जुड़ी कुल 32.5 लाख रुपये की राशि सुरक्षित कर ली है।

कैसे हुआ इस धोखाधड़ी का पर्दाफाश?

अधिकारियों ने बताया कि साइबर अपराध शाखा ने एक पीड़ित के मामले की जांच करते हुए धोखाधड़ी का पर्दाफाश किया, जिसके साथ 1.07 करोड़ रुपये की ठगी हुई थी। जांच में सामने आया कि धोखेबाजों ने 2 सितंबर से 8 अक्तूबर के बीच कई पीड़ितों को निशाना बनाया। उन्हें विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफार्मों पर निवेश विज्ञापनों के माध्यम से शेयर बाजार व्यापार में उच्च लाभ का वादा करने के बाद कई बैंक खातों में पैसा भेजने का लालच दिया।

बड़े मुनाफे का झूठा वादा?

उन्होंने निवेश की गई राशि पर एक बड़ा, लेकिन आभासी, मुनाफा दिखाने के लिए एक फर्जी ऐप्लिकेशन का इस्तेमाल किया और पीड़ितों को झूठे मुनाफे के आधार पर बड़ी रकम निवेश करने का लालच दिया। पुलिस के अनुसार, बाद में धोखेबाजों ने पीड़ितों का मूल निवेश वापस करने से इनकार कर दिया।

नवी मुंबई पुलिस ने जानकारी दी कि चीन और कंबोडिया में साइबर धोखाधड़ी करने वालों से जुड़े एक नेटवर्क को ध्वस्त कर दिया गया है। साइबर पुलिस टीम ने शुरुआत में सुरेश तालेकर (29) और उसके साथी विकास आव्हाड (30) को पुणे से गिरफ्तार किया। तीसरे आरोपी (जिसे गिरफ्तार नहीं किया गया) से आगे की जांच से पता चला है कि उसने तीन अज्ञात हिंदी भाषी व्यक्तियों से मुलाकात की थी, जिनके दूसरे राज्य से होने का संदेह है, और उन्होंने नवी मुंबई के महापे स्थित एक होटल में कुछ बैंक खातों से जुड़े सिम कार्ड सौंपे थे।

टेलीग्राम एप के जरिए धोखेबाज थे संपर्क में

पुलिस ने बताया कि आरोपियों से पूछताछ में सीधे अंतरराष्ट्रीय संबंध का पता चला है, क्योंकि उनमें से तीन टेलीग्राम एप के जरिए चीन और कंबोडिया में साइबर धोखेबाजों के संपर्क में थे। उन्होंने बताया कि आरोपियों की मुख्य भूमिका एक एप्लीकेशन का उपयोग कर चालू बैंक खाते के लेनदेन से उत्पन्न वन-टाइम पासवर्ड (ओटीपी) को विदेश में अपने संचालकों तक पहुंचाना था। पुलिस ने लोगों से अपील की कि वे सोशल मीडिया पर शेयर बाजार में निवेश के विज्ञापनों से सावधान रहें

बीजापुर में एनकाउंटर: 3 नक्सलियों के मारे जाने की खबर

जवानों ने जंगल में नक्सलियों को घेरा, दोनों ओर से चल रही फायरिंग, सर्च ऑपरेशन जारी

बीजापुर, 5 नवंबर (एजेंसियां)। छत्तीसगढ़-तेलंगाना बॉर्डर पर बीजापुर जिले में पुलिस और नक्सलियों के बीच मुठभेड़ चल रही है। एनकाउंटर में 3 नक्सलियों के मारे जाने की खबर है। बताया जा रहा है कि जवानों ने जंगल में नक्सलियों को घेर लिया है। अन्नाराम और मरीमल्ला के जंगलों में दोनों ओर से फायरिंग हो रही है।

मिली जानकारी के मुताबिक मुठभेड़ नक्सलियों की मद्देड एरिया कमेटी से हुई है। जवानों की टीम जंगल में मौजूद है। जंगल से जवानों ने बड़ी तादाद में हथियार बरामद किए हैं। इलाके में सर्च ऑपरेशन जारी है। फिलहाल पुलिस ने नक्सलियों के मारे जाने की आधिकारिक पुष्टि नहीं की है।

नक्सलियों के खात्मे की तैयारी में फोर्स

बस्तर में फोर्स अब नक्सलियों के खात्मे की तैयारी में है। नक्सली संगठन के कई बड़े नेताओं के मारे जाने के बाद सुरक्षाबल एक्टिव मोड पर है। फोर्स का फोकस बस्तर के 50 चुनिंदा गांवों पर है, जहां से नक्सलियों की पकड़ पूरी तरह खत्म करने की तैयारी है।

बताया जा रहा है कि इस अभियान की शुरुआत बीजापुर जिले से हो रही है। इसके लिए नारायणपुर, बस्तर, दंतेवाड़ा और सुकमा से डीआरजी (डिस्ट्रिक्ट रिजर्व ग्रुप) के जवानों की 10 से ज्यादा टीमें बनाई जा रही हैं।

इन जवानों की छुट्टियां रद्द कर दी गई हैं और उन्हें अगले आदेश तक ड्यूटी पर रहने के निर्देश दिए गए हैं। बताया जा रहा है कि यह ऑपरेशन अबूझमाड़ और करेंगुट्टा जैसे पिछले बड़े अभियानों की तरह ही बड़े पैमाने पर चलाया जाएगा।

इसके पहले 28 सितंबर को डीआरजी, गरियाबंद और कांकेर पुलिस ने छत्तीसगढ़-ओडिशा सीमा पर एक मुठभेड़ में 3 इनामी नक्सलियों को मार गिराया। मारे गए नक्सलियों में दो पुरुष और एक महिला शामिल हैं। यह मुठभेड़ कांकेर-धमतरी सीमा पर तियारपानी के जंगलों में हुई थी।

जवानों ने मौके से तीनों नक्सलियों के शव एसएलआर, थ्री नॉट थ्री राइफल और 12 बोर बंदूक बरामद किया था। मारे गए नक्सलियों की पहचान सीतानदी एरिया कमेटी का कमांडर श्रवण, नगरी एरिया कमेटी का डिप्टी कमांडर राजेश और सहयोगी बसंती के रूप में हुई।

दरअसल, कांकेर कोतवाली थाना क्षेत्र के तियारपानी के जंगलों में नक्सलियों के मौजूदगी की सूचना मिली थी। इसके बाद सूचना के आधार पर कांकेर डीआरजी, बीएसएफ और गरियाबंद पुलिस सर्च ऑपरेशन पर निकली थी, तभी जंगल में घात लगाए नक्सलियों ने फायरिंग शुरू की।

इस दौरान जवाबी कार्रवाई में सुरक्षाबलों ने भी मोर्चा संभाला। दोनों ओर से फायरिंग में तीन नक्सली मारे गए थे। मारे नक्सलियों में कमांडर सरवन मडकम पर 8 लाख, डिप्टी कमांडर राजेश उर्फ राकेश हेमला पर 5 लाख और बसंती कुंजाम पर 1 लाख का इनाम था।

22 सितंबर को नारायणपुर जिले में जवानों ने मुठभेड़ में सेंट्रल कमेटी के 2 नक्सलियों को मार गिराया था। मारे गए नक्सलियों पर 1.8-1.8 करोड़ का इनाम घोषित था। जवानों ने दोनों के शव और मौके से हथियार बरामद किया है। मुठभेड़ के अबूझमाड़ के जंगलों में हुई थी।

नारायणपुर पुलिस के मुताबिक मारे गए नक्सलियों की पहचान सेंट्रल कमेटी सदस्य राजू दादा उर्फ कट्टा रामचंद्र रेड्डी और कोसा दादा उर्फ कादरी सत्यनारायण रेड्डी के रूप में हुई। नारायणपुर पुलिस अधीक्षक रॉबिन्सन ने पुष्टि की है।

वहीं गरियाबंद जिले में 11 सितंबर को जवानों ने एनकाउंटर में 5 करोड़ के 10 इनामी नक्सलियों को मार गिराया था। इसमें डेढ़ करोड़ का इनामी नक्सली मोडेम बालाकृष्ण भी मारा गया। मोडेम बालाकृष्ण ओडिशा स्टेट कमेटी का सचिव था। मामला मैनपुर थाना क्षेत्र के मटाल पहाड़ी में मुठभेड़ हुई।

मारे गए नक्सलियों में 6 पुरुष और 4 महिलाएं शामिल हैं। मारे गए नक्सलियों में केंद्रीय समिति के सदस्य मनोज उर्फ मोडेम बालाकृष्ण, ओडिशा राज्य समिति के सदस्य प्रमोद उर्फ पांडु, ओडिशा राज्य समिति के सदस्य विमल उर्फ मंगना समीर और पीपीसीएम रजीता शामिल थे।

इसके साथ ही टेक्निकल टीम पीपीसीएम अंजली, एसडीके एसीएम सीमा उर्फ भीमे, एसीएम विक्रम, डिप्टी कमांडर उमेश और बीबीएम डिवीजन पीएम बिमला शामिल थे। इनपर छत्तीसगढ़, ओडिशा, आंध्रप्रदेश, तेलंगाना, महाराष्ट्र और मध्यप्रदेश सरकार ने 5 करोड़ 22 लाख का इनाम घोषित किया था।

बिलासपुर ट्रेन हादसा में मरने वालों की संख्या बढकर 11 हुई, 20 घायल

गेवरा मेमू मालगाड़ी से टकराई, बोगी काटकर शव-घायलों को निकाला, मृतकों में बिलासपुर के लोग ज्यादा

बिलासपुर, 5 नवंबर (एजेंसियां)। छत्तीसगढ़ के बिलासपुर में हुए भीषण ट्रेन हादसे में अब तक 11 यात्रियों की मौत हो चुकी है। मंगलवार तक यह आंकड़ा 8 था। वहीं 20 से अधिक यात्री गंभीर रूप से घायल हैं, जिनमें कई की हालत नाजुक बनी हुई है। मृतकों में बिलासपुर के लोग ज्यादा हैं।

हादसा मंगलवार को उस समय हुआ, जब गेवरा मेमू लोकल ट्रेन बिलासपुर स्टेशन के आउटर पर अपनी रफ्तार से आगे बढ़ रही थी। इसी दौरान सामने मालगाड़ी खड़ी थी और दोनों ट्रेनों में टक्कर हो गई।

स्थानीय लोगों ने बताया कि उन्होंने तेज ब्रेक लगने की आवाज और फिर जोरदार धमाका सुना। कुछ यात्रियों ने खिड़कियों से कूदकर अपनी जान बचाई। राहत और बचाव दलों ने गैस कटर से बोगियां काटकर फंसे यात्रियों को बाहर निकाला। देर रात तक रेस्क्यू अभियान जारी रहा।

घायल यात्रियों का इलाज रेलवे अस्पताल, सिम्स और अपोलो अस्पताल में चल रहा है। हादसे का कारण अभी स्पष्ट नहीं है,

लेकिन शुरुआती जानकारी के अनुसार ऑटो सिग्नल फेल होने की आशंका जताई जा रही है। रेलवे ने कमिश्नर ऑफ रेलवे सेफ्टी (सीआरएस) से हादसे की जांच के आदेश दिए हैं। जांच रिपोर्ट के बाद ही स्पष्ट होगा कि हादसा किन कारणों से हुआ।

रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने मृतकों के परिजनों को 10 लाख रुपए, गंभीर घायलों को 5 लाख रुपए और सामान्य घायलों को 50 हजार रुपए मुआवजा देने की घोषणा की। वहीं छत्तीसगढ़ सरकार ने भी मृतकों के परिजनों को 5 लाख रुपए और घायलों को 50 हजार रुपए की आर्थिक सहायता देने का ऐलान किया है।

वहीं बिलासपुर रेलवे अस्पताल में कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष दीपक बैज ने घायलों और और डॉक्टर्स से मुलाकात की। इस दौरान उन्होंने डिप्टी सीएम अरुण साव को लेकर कहा कि हम राजनीति करने नहीं आए हैं। 11 मौतों का जिम्मेदार कौन है। डबल इंजन सरकार फेल है। मृतकों के परिजनों को 1-1 करोड़ और घायलों को 50-50 लाख रुपए मुआवजा देने की मांग की।

20 नवंबर को छत्तीसगढ़ आएंगी राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू

अंबिकापुर में जनजातीय गौरव दिवस कार्यक्रम में होंगी शामिल, मंत्री की निगरानी में तैयारी शुरू

रायपुर, 5 नवंबर (एजेंसियां)। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू 20 नवंबर को छत्तीसगढ़ प्रवास पर आएंगी। जहां अंबिकापुर में भगवान बिरसा मुंडा की जयंती पर होने वाले आयोजनों में वे शामिल होंगी। राष्ट्रपति के आगमन की तैयारियां शुरू हो गई है।

बता दें कि प्रधानमंत्री मोदी के ऐलान के बाद भगवान बिरसा मुंडा की जयंती 15 नवंबर को देशभर में जनजातीय गौरव दिवस के रूप में मनाई जाती है। छत्तीसगढ़ के अंबिकापुर में इस साल जनजातीय गौरव दिवस बड़े स्तर पर मनाया जाएगा।

इस अवसर पर 19 और 20 नवंबर को अम्बिकापुर के पीजी कॉलेज मैदान में भव्य दो दिवसीय

कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। इस आयोजन का मुख्य आकर्षण राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू की उपस्थिति रहेगी। वे इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल होंगी और प्रदेश के जनजातीय समुदायों के साथ अपनी उपस्थिति दर्ज कराएंगी। कार्यक्रम की तैयारियों को लेकर 3 नवंबर को नवा रायपुर में आदिम जाति विकास मंत्री रामविचार नेताम की अध्यक्षता में समीक्षा बैठक हुई। बैठक में प्रमुख सचिव सोनमणि बोरा, आयुक्त डॉ. सारांश मित्तर, संयुक्त सचिव बी.एस. राजपूत,

अपर संचालक संजय गौड़, नोडल अधिकारी गायत्री नेताम और अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे। सरगुजा संभाग के सभी जिलों के सहायक आयुक्त भी वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से इस बैठक में शामिल हुए।

मंत्री नेताम ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि यह आयोजन प्रदेश के गौरव और जनजातीय परंपराओं की समृद्ध झलक पेश करे। उन्होंने कहा कि सभी संबंधित अधिकारी और कर्मचारी संवेदनशीलता और उत्साह के साथ तैयारी में जुटें, ताकि कार्यक्रम ऐतिहासिक बने।

दंपती की संदिग्ध परिस्थिति में मौत

देवघर, 5 नवंबर (एजेंसियां)। देवघर शहर के बेलाबगान, काली बाड़ी मोहल्ले में बुधवार दोपहर उस समय सनसनी फैल गई जब एक किराए के मकान से दंपती का शव बरामद हुआ। मृतकों की पहचान रवि शर्मा (30) और उनकी पत्नी लवली शर्मा (24) के रूप में हुई है। दोनों की शादी को अभी लगभग एक साल ही हुआ था। घटना की सूचना मिलते ही नगर थाना पुलिस मौके पर पहुंची और जांच शुरू की। पुलिस के अनुसार, जिस कमरे में पति-पत्नी रहते थे, वह अंदर से बंद था। जब दरवाजा काफी देर तक नहीं खुला, तो आसपास के लोगों ने पुलिस को सूचना दी।

पुलिस की मौजूदगी में दरवाजा तोड़ा गया, तो अंदर दोनों के शव पड़े मिले। पुलिस ने कमरे से साक्ष्य जुटाए हैं। फोरेंसिक टीम ने भी साक्ष्य लिए हैं।

बृहस्पति बोले-निपटो-निपटाओ के कारण गई कांग्रेस सरकार

कहा- सिंहदेव अच्छे नेता, लेकिन सोच सरगुजा तक इसके पहले कहा था- मेरी हत्या करवाना चाहते हैं महाराज

सरगुजा, 5 नवंबर (एजेंसियां)। छत्तीसगढ़ के पूर्व कांग्रेस विधायक बृहस्पति सिंह ने कहा कि निपटो-निपटाओ के चक्कर में कांग्रेस की सरकार चली गई। छत्तीसगढ़ बनने के बाद मैंने अनुभव किया कि कांग्रेस कभी भी बीजेपी से नहीं हारती। निपटो-निपटाओ का खेल बंद हो जाए, तो सरकार आ जाएगी।

बृहस्पति ने कहा कि टीएस सिंहदेव अच्छे नेता हैं। वे सोच तो छत्तीसगढ़ का नेता बनने का रखते हैं, लेकिन उनकी सोच सरगुजा संभाग से ऊपर नहीं उठ पाई। हालांकि सिंहदेव को लेकर बृहस्पति सिंह इसके पहले यह भी कह चुके हैं कि टीएस सिंहदेव महाराजा हैं, मेरी हत्या करवा सकते हैं।

वहीं बृहस्पति सिंह के बयान पर दीपक बैज ने कहा कि सिंहदेव हमारे पार्टी के वरिष्ठ नेता हैं। वे हमेशा पार्टी का नेतृत्व करते रहे हैं। पूरे छत्तीसगढ़ के नेता हैं। उनकी सोच सिर्फ सरगुजा तक सीमित नहीं है। कांग्रेस में कहीं भी

'निपटो-निपटाओ' की स्थिति नहीं है। बृहस्पति सिंह ने दिल्ली में राहुल गांधी से हुई बैठक का जिक्र किया। उन्होंने बताया कि राहुल ने पूछा था कि आखिर छत्तीसगढ़ में सरकार क्यों नहीं बन पा रही। इस पर बृहस्पति ने जवाब दिया था कि वरिष्ठ नेताओं को ठीक कर दीजिए, तब सब संभल जाएगा।

उनका कहना था कि जनता और सभी वर्ग के लोग कांग्रेस की सरकार चाहते हैं, लेकिन एक ही मुख्यमंत्री की कुर्सी के लिए सभी बड़े नेता लड़ रहे हैं। मुख्यमंत्री की एक कुर्सी है, लेकिन सभी वरिष्ठ नेता मुख्यमंत्री बनना चाहते हैं, जो संभव नहीं है। इसके कारण एक-दूसरे के समर्थकों को हराना चाहते हैं।

बृहस्पति सिंह के बयान पर पूर्व डिप्टी सीएम टीएस सिंहदेव ने कहा था कि बृहस्पति सिंह ने अपने अनुभव के आधार पर बयान दिया है। कम से कम मुझे अच्छा नेता तो कहा। बृहस्पति सिंह ने बयान दिया था कि मैं उनकी हत्या करना चाहता हूं, यह कदापि स्वीकार्य नहीं है।

बृहस्पति सिंह ने जुलाई 2021 में टीएस सिंहदेव पर गंभीर आरोप लगाया था। उन्होंने कहा था कि टीएस सिंहदेव महाराजा हैं, वो मेरी हत्या करवा सकते हैं। बृहस्पति सिंह के काफिले पर हमला हुआ था, इसे लेकर टीएस सिंहदेव के खिलाफ गंभीर आरोप लगाए थे। उन्होंने मीडिया से कहा था कि जान से मारने की कोशिश की गई है। इसके पीछे सिंहदेव का हाथ है।

बृहस्पति सिंह ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में पत्रकारों के सवाल पूछने के अंदाज पर टिप्पणी की थी। उन्होंने कहा था कि आप पहले पत्रकार बनिए, पहले अपने सवाल पूछने का तरीका चुनिए, हमारे अंगूठाछाप आदिवासियों की तरह प्रश्न पूछना उचित नहीं।

इस बयान के बाद आदिवासी समाज भड़क गया था। विपक्षी दलों ने कड़ी प्रतिक्रिया दी थी।

नदी में डूबे पांच युवक, एक की मौत

धनबाद, 5 नवंबर (एजेंसियां)। धनबाद जिले के बाघमारा अनुमंडल स्थित तेलमच्चो में दामोदर नदी में कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर स्नान करने गए पांच युवकों में से दो डूब गए। इस घटना में तीन अन्य युवकों को स्थानीय लोगों ने सुरक्षित बचा लिया। एक युवक का शव बरामद कर लिया गया है, जबकि दूसरे लापता युवक की तलाश जारी है। यह घटना महुदा थाना क्षेत्र में हुई। स्थानीय लोगों और प्रशासन की टीम ने तत्काल बचाव अभियान शुरू किया। सूचना मिलते ही राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया बल की टीम भी रांची से घटनास्थल के लिए रवाना हो गई है, जो लापता युवक की खोजबीन में मदद करेगी।

कार्तिक पूर्णिमा के मौके पर बड़ी संख्या में श्रद्धालु दामोदर नदी में स्नान के लिए एकत्रित हुए थे। पुलिस और प्रशासन की टीम घटनास्थल पर मौजूद है और पूरे मामले की जांच कर रही है।

450 साल पुराना नृसिंह स्थान मेले का आयोजन

आस्था, कृषि परंपरा का अनूठा संगम, 'केतारी मेला' के नाम से भी है प्रसिद्ध

हजारीबाग, 5 नवंबर (एजेंसियां)। हजारीबाग मुख्यालय से छह किलोमीटर दूर कटकमदाग प्रखंड के खपरियावां गांव में स्थित ऐतिहासिक नृसिंह स्थान मंदिर में कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर पारंपरिक मेले का आयोजन किया गया। लगभग 450 वर्षों से आयोजित हो रहा यह मेला धार्मिक आस्था, लोक संस्कृति और कृषि परंपरा का प्रतीक है। स्थानीय लोग इसे 'केतारी मेला' के नाम से भी जानते हैं।

मंदिर का इतिहास 1632 ईस्वी में पंडित दामोदर मिश्र द्वारा इसकी स्थापना से जुड़ा है। पौराणिक कथाओं के अनुसार, पंडित मिश्र को स्वप्न में नेपाल के काक भूसारी पर्वत से भगवान नृसिंह की

प्रतिमा लाने का आदेश मिला था। उन्होंने काले ग्रेफाइट पत्थर से बनी प्रतिमा प्राप्त कर खपरियावां में स्थापित की, जिसके बाद यह मंदिर 'नृसिंह स्थान' के रूप में प्रसिद्ध हुआ। मंदिर का गर्भगृह विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जहां भगवान विष्णु और भगवान शिव एक साथ विराजमान हैं। यह अद्वितीय संयोग वैष्णव और शैव भक्तों को समान रूप से आकर्षित करता है। मंदिर परिसर में भगवान सूर्य देव, नारद, शिव-पार्वती, नवग्रह और हनुमान जी की प्रतिमाएं भी स्थापित हैं।

मुख्य पुजारी उपेंद्र मिश्र के अनुसार, नृसिंह स्थान को मनोकामना पूर्ण करने वाला तीर्थ स्थल माना जाता है। कार्तिक पूर्णिमा और माघ पूर्णिमा पर दूर-दराज से श्रद्धालु यहां विशेष पूजा-अर्चना के लिए आते हैं।

इस मेले का किसानों से गहरा संबंध है। चार शताब्दियों से किसान यहां गन्ना (ईख) बेचने के लिए एकत्रित होते हैं। ऐसी मान्यता है कि मंदिर में पूजा-अर्चना के बाद ईख को घर ले जाने से समृद्धि आती है। इसी कारण यह मेला 'केतारी मेला' के नाम से भी जाना जाता है।

खड़ी कार में लगी आग

गोड्डा से रांची जा रही नई गाड़ी जलकर राख, घटना के वक्त सवार गाड़ी से थे बाहर

रामगढ़, 5 नवंबर (एजेंसियां)। रामगढ़ जिले के मांडू में राष्ट्रीय राजमार्ग 33 के किनारे खड़ी एक मारुति सुजुकी कार में अचानक आग लग गई। गोड्डा से रांची जा रही यह कार पूरी तरह जलकर राख हो गई। घटना के समय कार में सवार लोग शांति मानसरोवर ढाबा होटल में खाना खाने रुके थे।

खाना खाकर बाहर आने पर उन्होंने देखा कि उनकी गाड़ी धू-धूकर जल रही थी। स्थानीय पुलिस और आसपास के लोगों ने आग बुझाने का प्रयास किया, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी और गाड़ी पूरी तरह से जल चुकी थी। यह घटना मांडू डीह इलाके की है।

रायपुर एयर शो: फाइटर जेट्स ने आसमान में दिल-तिरंगा बनाया

रायपुर, 5 नवंबर (एजेंसियां)। छत्तीसगढ़ राज्योत्सव के अवसर पर नवा रायपुर में भारतीय वायु सेना की सूर्यकिरण एयरोबेटिक टीम ने आसमान में रोमांचक करतब दिखाए। सेंध तालाब के ऊपर हुए एयर शो में 9 हॉक एमके-132 फाइटर जेट्स ने एक साथ उड़ान भरते हुए 'तिरंगा', 'हार्ट इन द स्काई' और 'एरोहेड' जैसे शानदार फॉर्मेशन पेश किए।

ग्रुप कैप्टन अजय दशरथी ने सूर्यकिरण टीम का नेतृत्व किया, जबकि स्क्वॉड्रन लीडर गौरव पटेल, जो छत्तीसगढ़ के रहने वाले हैं, टीम का हिस्सा रहे। गौरव ने कहा कि यह शो उनके लिए बेहद खास रहा। वहीं फ्लाइट लेफ्टिनेंट कंवल संधू ने कमेंट्री की जिम्मेदारी संभाली और दर्शकों को हर करतब की जानकारी दी।

राज्योत्सव पर वायु सेना की टीम का रोमांचक एयर शो, सेंध जलाशय के ऊपर आसमां में 'जय जोहार' और 'छत्तीसगढ़िया सबले बढ़िया' गूंजा। अनुशासन, परस्पर विश्वास, सटीकता और देश प्रेम के जज्बे के साथ वायु सेना के विमानों ने कलाबाजी दिखाई।

वायु सेना का एयर शो छत्तीसगढ़वासियों के लिए कमाल का अनुभव, लोग देखकर एक घंटे तक मंत्रमुग्ध होते रहे। इस दौरान उप राष्ट्रपति सीपी राधाकृष्णन, राज्यपाल रमेन डेका, CM विष्णु देव साय और विधानसभा अध्यक्ष रमन सिंह ने एयर शो देखा।

केस लड़ते-लड़ते महिला को दिल दे बैठा वकील

पति से तलाक कराया, फिर किया रेप बोला- पत्नी से तलाक लेकर करूंगा शादी

बिलासपुर, 5 नवंबर (एजेंसियां)। छत्तीसगढ़ के बिलासपुर में एक वकील महिला का केस लड़ते-लड़ते उसे अपना दिल दे बैठा। वकील ने पहले महिला का उसके पति से तलाक कराया। इस दौरान दोनों के बीच प्यार हो गया, तब उसने शादी करने का झांसा देकर रेप किया।

वकील ने महिला को कहा कि उसकी पत्नी से विवाद होता है। इसलिए उससे तलाक लेकर दोनों शादी करेंगे। इसी झांसे में महिला आ गई। लेकिन, बाद में वकील ने शादी करने से इनकार कर दिया। अब महिला की रिपोर्ट पर पुलिस ने वकील को गिरफ्तार कर लिया है। मामला सरकंडा थाना क्षेत्र का है।

दरअसल, सरकंडा इलाके की रहने वाली 26 साल की महिला ने पुलिस को बताया कि, शादी के बाद उसका पति उसके साथ मारपीट करता था। पति के साथ उसके संबंध अच्छे नहीं थे। इसलिए उसने अपने पति से तलाक लेने के लिए कोर्ट पहुंची थी। साल 2025 में ही केस लड़ने के लिए महिला ने सरकंडा के लतेल बाड़ा में रहने वाले वकील पवन अवस्थी से संपर्क किया। जिसके बाद वकील ने केस लड़ा। बाद में उसके पति से उसका तलाक हो गया।

महिला ने पुलिस को बताया कि, केस के सिलसिले में वो वकील से मिलने जाती थी, तब वकील ने उससे दोस्ती, फिर प्यार का इजहार किया। इसी दौरान उसने महिला से शादी करने का वादा कर शारीरिक संबंध बनाने लगा। बातचीत के दौरान वकील ने महिला को बताया कि, उसकी पत्नी के साथ उसका संबंध ठीक नहीं है। वह भी अपनी पत्नी से तलाक लेने वाला है। दोनों का तलाक हो जाने के बाद वह अपनी पत्नी को छोड़कर उससे शादी करेगा। महिला ने पुलिस को यह भी बताया कि, जब उसने वकील प्रेमी पर शादी करने के लिए दबाव बनाने लगी, तब वकील उसे घुमाने लगा। बाद में उसने शादी करने से इनकार कर दिया। इस दौरान विवाद बढ़ने पर उसने महिला की पिटाई की और उसका मोबाइल तोड़ दिया।

जिससे परेशान होकर महिला ने 2 नवंबर को सरकंडा थाने में केस दर्ज करा दी। पुलिस ने वकील के खिलाफ रेप, मारपीट और धमकी का केस दर्ज कर 3 नवंबर को उसे गिरफ्तार कर लिया है। फिलहाल, पुलिस मामले में आगे जांच कर रही है।

महिला पक्षकार द्वारा अधिवक्ता पर संगीन आरोप लगाने के मामले के बाद वकीलों ने कहा कि ऐसी स्थिति में वे महिला पक्षकारों के केस नहीं लड़ेंगे और एडवोकेट प्रोटेक्शन एक्ट लागू करने की मांग की है।

प्रिंस खान गैंग के 4 सदस्य गिरफ्तार

हवाला कारोबार का खुलासा, 17 लाख रुपए से अधिक नगदी बरामद

धनबाद, 5 नवंबर (एजेंसियां)। धनबाद पुलिस ने हैदर अली उर्फ प्रिंस खान गैंग के चार सदस्यों को गिरफ्तार किया है। ये सभी अवैध मनी लॉन्ड्रिंग और हवाला कारोबार में सक्रिय थे। पुलिस ने इनके पास से 17,34,900 रुपए नगद, दो लैपटॉप, तीन मोबाइल फोन और अन्य आपत्तिजनक दस्तावेज बरामद किए हैं।

धनबाद एसएसपी प्रभात कुमार ने बुधवार को यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि पुलिस विभाग की विशेष टीम ने 60 पुलिसकर्मियों के साथ छापेमारी अभियान चलाया। मंगलवार तड़के बैंक मोड़ थाना क्षेत्र के वासेपुर और आसपास के कई ठिकानों पर तलाशी ली गई थी।

पुलिस जांच में सामने आया है कि गिरफ्तार आरोपी प्रिंस खान के लिए 'स्लीपर सेल' के तौर पर काम कर रहे थे। वे धन के लेनदेन, जमीन पर कब्जा और अन्य गैरकानूनी गतिविधियों में उसकी मदद करते थे। गिरफ्तार आरोपियों की पहचान परवेज़ खान, सैफ आलम उर्फ राशिद, तौशीफ आलम उर्फ मूसा और इम्तियाज अली उर्फ लाडले के रूप में हुई है। ये सभी बैंक मोड़ थाना क्षेत्र के निवासी हैं।

एसएसपी के अनुसार, यह गिरोह धनबाद में व्यापारियों, पेट्रोल पंप संचालकों और ठेकेदारों से संपर्क कर अवैध कमाई को वैध दिखाने का काम करता था।

विवाहिता की मौत परिजनों ने लगाया हत्या का आरोप

देवघर, 5 नवंबर (एजेंसियां)। जिले के रिखिया थाना क्षेत्र के लकड़ीगंज गांव में बुधवार को एक विवाहिता की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। मृतका की पहचान 22 वर्षीय जानकी देवी, पत्नी अजय कुमार के रूप में हुई है। मायके पक्ष ने ससुरालवालों पर हत्या का गंभीर आरोप लगाया है। उनका कहना है कि दामाद ने प्रेमिका के चक्कर में बेटी को जहर दिया है। जानकी की मां ने बताया कि घटना से एक दिन पहले उनकी बेटी को ससुराल में जहर दिया गया था, जिसके बाद उसे देवघर सदर अस्पताल में भर्ती कराया गया। इलाज के दौरान बुधवार को उसकी मौत हो गई। दामाद ने फोन कर सूचना दी कि जानकी ने जहर खा लिया है।

अमेरिका के केंटकी में कार्गो प्लेन क्रैश, 7 की मौत

डेढ़ लाख लीटर तेल फैला, 8 किमी के दायरे में लोगों को आदेश– घर से न निकलें

वॉशिंगटन, 5 नवंबर (एजेंसियां)। अमेरिका के केंटकी राज्य में बुधवार को लुईविल में एक कार्गो प्लेन क्रैश हो गया है। हादसे में 7 लोगों की मौत हो गई है, जबकि कम से कम 11 के घायल होने की खबर है।

फेडरल एविएशन अथॉरिटी (एफएए) के मुताबिक, यूपीएस कंपनी की फ्लाइट 2976 ने मोहम्मद अली इंटरनेशनल एयरपोर्ट से होनोलुलु (हवाई) के डेनियल इनौये इंटरनेशनल एयरपोर्ट के लिए उड़ान भरी थी।

एफएए ने बताया कि यह हादसा शाम करीब 5:15 बजे (स्थानीय समयानुसार) हुआ। सोशल मीडिया पर वायरल वीडियोज में तेज आग और मलबा दिखाई दे रहा है।

बीबीसी की रिपोर्ट के मुताबिक विमान में करीब 38,000 गैलन ईंधन (करीब डेढ़ लाख लीटर तेल) भरा हुआ था, जो धमाके के बाद आग की लपटों में बदल गया।

पुलिस ने एयरपोर्ट से 8 किमी के दायरे में रहने वाले लोगों को घर के अंदर रहने का आदेश दिया है। साथ ही, एयरपोर्ट को फिलहाल बंद कर दिया है।

हादसे वाली जगह पर अभी भी आग लगी है

लुईविल पुलिस (एलएमपीडी) ने कहा कि हादसे वाली जगह पर अभी भी आग लगी हुई है और मलबा फैला है।

शुरुआती जांच में यह आशंका जताई जा रही है कि हो सकता है प्लेन में लिथियम बैटरियों से आग लगी हो, ठीक वैसे ही जैसे 2010 में यूपीएस फ्लाइट 6 के हादसे में हुआ था।

यूपीएस कंपनी ने बताया कि विमान में तीन क्रू मेंबर थे।

दावा- प्लेन में 95 हजार लीटर फ्यूल भरा था

मीडिया रिपोर्ट्स में दावा किया जा रहा है कि विमान में करीब 25,000 गैलन (95 हजार लीटर) जेट फ्यूल भरा हुआ था, जिससे आग तेजी से फैल गई। यह विमान मैकडॉनेल डगलस एमडी-11 मॉडल था और यूपीएस वर्ल्डपोर्ट सुविधा के पास गिरते ही धमाके के साथ आग का गोला बन गया।

यह मॉडल पहले 1990 में एक यात्री विमान के तौर पर लॉन्च हुआ था, लेकिन ईंधन की बढ़ती लागत की वजह से बाद में इसे कार्गो विमान में बदल दिया गया।

यह विमान करीब 2.8 लाख किलो वजन लेकर उड़ान भर सकता है और इसमें 38,000 गैलन (लगभग 1.44 लाख लीटर) तक ईंधन भरा जा सकता है।

यह एयरपोर्ट यूपीएस कंपनी का मेन सेंटर है, जहां 12,000 से ज्यादा कर्मचारी रोजाना 20 लाख पार्सल संभालते हैं। यह सेंटर 50 लाख वर्ग फीट में फैला है। पुलिस और फायर ब्रिगेड की टीमों ने मौके पर तुरंत पहुंचकर आग बुझाने का काम शुरू कर दिया है।

यूपीएस एयरलाइंस ने कहा कि केंटकी विमान के बारे में नई जानकारी मिलने पर अपडेट शेयर किया जाएगा।

तूफान कलमागी का कहर, फिलीपींस में 66 की मौत

26 लापता, भूकंप से उबर रहे प्रांतों में मची तबाही

मनीला, 5 नवंबर (एजेंसियां)। फिलीपींस में आए शक्तिशाली तूफान 'कलमागी' ने भारी तबाही मचाई है। अधिकारियों के अनुसार अब तक 66 लोगों की मौत हो चुकी है, जबकि 26 लोग लापता हैं। सबसे ज्यादा नुकसान देश के मध्य प्रांतों में हुआ है, जो कुछ समय पहले आए भूकंप से अभी पूरी तरह उबर भी नहीं पाए थे। अधिकारियों ने बताया कि तेज बारिश और बाढ़ के कारण कई लोग अपने घरों की छतों पर फंस गए। रेड क्रॉस को सैकड़ों कॉल्स आईं, जिनमें लोगों ने मदद की गुहार लगाई।

सेबू की गवर्नर पामेला बारिकुआत्रो ने कहा हमने बचाव के लिए पूरी तैयारी की थी, लेकिन अचानक आई फ्लैश फ्लड ने सब कुछ बदल दिया।

उन्होंने यह भी माना कि लंबे समय से हो रहे खनन और घटिया बाढ़ नियंत्रण परियोजनाओं ने स्थिति और बिगाड़ दी।

पाकिस्तान में मिला सोने का विशाल भंडार

636 अरब डॉलर आंकी गई कीमत, क्या दूर होगी गरीबी?

कराची, 5 नवंबर (एजेंसियां)। पाकिस्तान के तरबेला में सोने का विशाल भंडार मिला है। अनुमान लगाया गया है कि तरबेला में मौजूद सोने की कुल कीमत 636 अरब डॉलर हो सकती है। इस खोज की जानकारी एयर कराची के अध्यक्ष और फेडरेशन ऑफ पाकिस्तान चैंबर्स ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (एफपीसीसीआई) के पूर्व वरिष्ठ उपाध्यक्ष हनीफ गोहर ने सोमवार को कराची प्रेस क्लब में एक बातचीत के दौरान किया।

उन्होंने कहा कि तरबेला में पाया गया स्वर्ण भंडार देश के विदेशी ऋण को चुकाने के लिए पर्याप्त है और यह मामला पहले ही विशेष निवेश सुविधा परिषद (एसआईएफसी) और स्टेट बैंक ऑफ पाकिस्तान (एसबीपी) के गवर्नर के ध्यान में लाया जा चुका है। गोहर ने कहा कि भंडार की खोज के लिए ऑस्ट्रेलियाई और कनाडाई ड्रिलिंग कंपनियों से संपर्क स्थापित किया गया है। उन्होंने कहा, प्रधानमंत्री से निर्देश मिलते ही तरबेला की धरती से सोना निकालने की प्रक्रिया शुरू हो जाएगी। गौहर ने कहा कि प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ और सेनाध्यक्ष फील्ड मार्शल असीम मुनीर को इस खोज के बारे में औपचारिक रूप से सूचित कर दिया गया है और उन्होंने इस ब्रीफिंग पर सकारात्मक प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने आगे कहा कि गोताखोरों ने बांध के अंदर से मिट्टी के नमूने एकत्र किए, जिनका विश्लेषण प्रयोगशाला में सोने की मात्रा निर्धारित करने के लिए किया गया। गौहर ने कहा, परिणामों के आधार पर, बाँध की मिट्टी में मौजूद सोने का अनुमानित कुल मूल्य 636 अरब डॉलर है।

उन्होंने कहा कि जल एवं विद्युत विकास प्राधिकरण को स्वयं इस परियोजना को शुरू करना होगा, लेकिन अगर ऐसा नहीं होता है, तो उनकी कंपनी निवेश करने, सोना निकालने और उसे देश को सौंपने के लिए तैयार है।

गौहर ने कहा कि उनकी टीम तैयार है और उन्होंने हॉलैंड के ड्रेजिंग विशेषज्ञों के साथ-साथ एम्स्टर्डम और कनाडा के साझेदारों के साथ भी बातचीत की है। उन्होंने कहा, अगर सरकार हमें हरी झंडी देती है, तो हम इस परियोजना को लागू करने के लिए तैयार हैं।

विपक्ष का दावा- चुनाव बाद हिंसा में मारे गए सैकड़ों लोग

शव गुप्त तरीके से ठिकाने लगा रहे सुरक्षा बल

तंजानिया, 5 नवंबर (एजेंसियां)। तंजानिया में पिछले हफ्ते हुए आम चुनावों के बाद फैली हिंसा को लेकर मंगलवार को हालात और तनावपूर्ण हो गए। विपक्षी दलों ने दावा किया है कि सुरक्षाबलों ने विरोध प्रदर्शनों को कुचलने के दौरान सैकड़ों लोगों की हत्या की और अब वे शवों को गुपचुप तरीके से ठिकाने लगा रहे हैं ताकि मौतों का वास्तविक आंकड़ा सामने न आ सके।

देशभर में 29 अक्तूबर को हुए मतदान के बाद कई दिनों तक हिंसक प्रदर्शन हुए। ज्यादातर युवा सड़कों पर उतर आए और चुनाव में कथित धांधली के खिलाफ प्रदर्शन किया। अंतरराष्ट्रीय पर्यवेक्षकों का कहना है कि चुनाव लोकतांत्रिक मानकों पर खरे नहीं उतरे, क्योंकि विपक्ष के प्रमुख नेताओं को चुनाव लड़ने से रोका गया था। सरकार ने पूरे देश में कर्फ्यू लागू कर दिया। सुरक्षाबलों ने प्रदर्शनकारियों पर गोलियां चलाईं और आंसू गैस के गोले छोड़े। विपक्षी दल चाडेमा का दावा है कि एक हजार से ज्यादा लोगों की जान गई है। पार्टी ने आरोप लगाया कि सुरक्षाबल शवों को रातों-रात गुप्त ठिकानों पर फेंक रहे हैं। सरकार ने अब तक इन आरोपों पर कोई टिप्पणी नहीं की है। चाडेमा की प्रवक्ता ब्रेंडा रुपिया ने कहा, तंजानिया के लोग सदमे में हैं। हमारे देश के लिए यह स्थिति पूरी तरह नई है। उन्होंने कहा कि केवल म्बेया क्षेत्र के तुंडुमा इलाके में ही करीब 400 मौत की सूचना है। राष्ट्रपति सामिया सुलुहू हसन को 97 फीसदी से अधिक वोट मिले हैं। यह उनका पहला चुनाव था। वह 2021 में तत्कालीन राष्ट्रपति जॉन मागुफुली की अचानक मौत के बाद उपराष्ट्रपति से राष्ट्रपति बनी थीं। विपक्ष ने हसन की जीत को 'गैरकानूनी' बताया। चाडेमा के प्रमुख नेता तुंडू लिस्सू को देशद्रोह के आरोप में जेल में रखा गया है और उनके सहयोगी जॉन हेचे को मतदान से पहले गिरफ्तार किया गया था।

अमेरिका में 4 करोड़ लोगों की फूड सप्लाई बंद

लाखों बेरोजगार, कर्ज लेकर घर चला रहे, ट्रम्प की जिद से लगा सबसे लंबा शटडाउन

वॉशिंगटन, 5 नवंबर (एजेंसियां)। अमेरिका में 1 अक्टूबर से शुरू हुए सरकारी शटडाउन का आज 36वां दिन है। यह अमेरिका के इतिहास का सबसे लंबा शटडाउन है। इससे पहले राष्ट्रपति ट्रम्प के पहले कार्यकाल के दौरान 2018 में 35 दिनों तक सरकारी कामकाज ठप रहा था।

शटडाउन की वजह से 42 मिलियन (4.2 करोड़) अमेरिकियों की फूड स्टैंप (एसएनएपी) सहायता रुक गई है। अमेरिका के एग्रीकल्चर डिपार्टमेंट (यूएसडीए) के पास इस कार्यक्रम के लिए सिर्फ 5 अरब डॉलर का रिजर्व फंड है, जबकि नवंबर में फूड स्टैंप जारी रखने के लिए 9.2 अरब डॉलर की जरूरत होगी। वॉशिंगटन स्थित बाइपार्टिसन पॉलिसी सेंटर के मुताबिक अब तक 6.7 लाख सरकारी कर्मचारी छुट्टी पर भेजे जा चुके हैं, जबकि 7.3 लाख कर्मचारी बिना सैलरी के काम कर रहे हैं। इस तरह लगभग 14 लाख लोग कर्ज लेकर घर चला रहे हैं।

ट्रम्प हेल्थ केयर प्रोग्राम की सब्सिडी बढ़ाने को तैयार नहीं हैं, इस वजह से अमेरिकी संसद के ऊपरी सदन सीनेट में फंडिंग बिल पास नहीं हो पा रहा है। इस बिल पर अब तक 14 बार वोटिंग हो चुकी है, लेकिन हर बार बहुमत के लिए जरूरी 60 वोट नहीं मिल पाए। फूड सप्लाई प्रोग्राम रुकने के बाद न्यूयॉर्क, कैलिफोर्निया और मैसाचुसेट्स समेत 25 राज्यों ने इस फैसले के खिलाफ ट्रम्प प्रशासन पर मुकदमा दायर किया है। इन राज्यों का कहना है कि लाखों लोगों की फूड सप्लाई रोकना गैरकानूनी है।

वहीं, शटडाउन से अर्थव्यवस्था को भारी नुकसान हो रहा है। कांग्रेसनल बजट ऑफिस (सीबीओ) के मुताबिक अब तक 11 अरब डॉलर (करीब ₹1 लाख करोड़) का नुकसान हो चुका है। अगर शटडाउन जल्द खत्म नहीं हुआ तो देश की जीडीपी में चौथी तिमाही में 1% से 2% की गिरावट आ सकती है। सीबीओ के मुताबिक, जबरदस्ती छुट्टी पर भेजे गए कर्मचारियों (फर्लो कर्मचारी) की करीब 400 मिलियन डॉलर (₹3,300 करोड़) प्रतिदिन सैलरी का नुकसान हो रहा है।

सीबीओ के डायरेक्टर फिलिप स्वैगल ने कहा कि शटडाउन के कारण सरकारी खर्च में देरी हो रही है और इसका अर्थव्यवस्था पर नकारात्मक असर पड़ा है। यह असर कुछ हद तक खत्म हो जाएगा, लेकिन पूरी तरह नहीं।

अमेरिका में सरकारी कामकाज ठप पड़ने (शटडाउन) के चलते हवाई यातायात बुरी तरह प्रभावित हुआ है। देशभर के कई हवाई अड्डों पर उड़ानें देर से चल रही हैं या रद्द की जा रही हैं।

परिवहन विभाग ने चेतावनी दी है कि 11,000 एयर ट्रैफिक कंट्रोलर को वेतन नहीं मिला है और अगर यह स्थिति जारी रही तो हवाई यातायात पर गंभीर असर पड़ेगा। वहीं, फेडरल एविएशन एडमिनिस्ट्रेशन (एफएए) के मुताबिक, एयर ट्रैफिक कंट्रोलर (एटीसी) भारी तनाव और थकान से जूझ रहे हैं, जिसके कारण बड़ी संख्या में कर्मचारी ड्यूटी पर नहीं आ रहे हैं।

आईआईएसएसएम का वार्षिक समागम गोवा में

नई दिल्ली, 5 नवंबर (एजेंसियां)। इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ सिक्योरिटी एंड सेफ्टी मैनेजमेंट (आईआईएसएसएम) का तीन दिवसीय वार्षिक समागम 12 से 14 नवंबर तक गोवा में किया जाएगा। इसके मुख्य अतिथि गोवा के राज्यपाल पुसापति अशोक गजपति राजू होंगे। समारोह की अध्यक्षता भारत सरकार के नवीन और नवकरणीय ऊर्जा राज्यमंत्री श्रीपद एस्सो नाईक करेंगे। विशिष्ट अतिथि गोवा के पूर्व मुख्यमंत्री और वर्तमान सरकार के लोक निर्माण, विधिक माप और बन्दरगाह मंत्री दिगम्बर कामत होंगे। समारोह में देश-विदेश के कई विषय विशेषज्ञ शामिल होंगे। यह जानकारी आईआईएसएसएम के मुख्य कार्यकारी अधिकारी और जानेमाने आपदा प्रबंधन विशेषज्ञ प्रो. संतोष कुमार ने दी है।

प्रो. संतोष ने बताया कि समागम का विषय 'राष्ट्रीय सुरक्षा – लचीलेपन के लिए जोखिम' रखा गया है, जिसमें राष्ट्रीय सुरक्षा, आपदा प्रबंधन और जलवायु परिवर्तन पर तीन दिनों तक विस्तार से चर्चा की जाएगी। चर्चा में अमेरिका की क्यूनी क्रेस्ट सिटी यूनिवर्सिटी की निदेशक डॉ. शकीला मर्चेंट, दक्षिण अफ्रीका के प्रो. क्रिस पिल्लई, भारतीय मौसम विभाग के महानिदेशक मृत्युंजय महापात्रा, इंग्लैंड के ग्रोमोर समूह के सीईओ डॉ राज लाखा, डीआईआर के महानिदेशक अमित प्रोथी, भारतीय पुलिस फाउंडेशन के अध्यक्ष और उत्तरप्रदेश के पूर्व पुलिस महानिदेशक ओ पी सिंह, आईआईटी मुंबई के प्रो. रवि सिन्हा, उत्तरप्रदेश के पूर्व पुलिस महानिदेशक डॉ विक्रम सिंह और आईआईएसएसएम के संस्थापक अध्यक्ष उदय सिंह समेत कई विषय विशेषज्ञ भाग लेंगे। प्रो. संतोष कुमार ने बताया कि यह आयोजन आईआईएसएसएम की 35 वर्षगांठ पर किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि आईआईएसएसएम पिछले 34 वर्षों से निजी सुरक्षाकर्मियों को सुरक्षा और आपदा प्रबंधन का प्रशिक्षण देता रहा है। पिछले दिनों आईआईएसएसएम ने सिविल डिफेन्स, एनआईडीएम, एनडीएमए, क्यूनी क्रेस्ट सिटी यूनिवर्सिटी, एनडीआरआई समेत कई संस्थाओं के साथ सहमति पत्र पर हस्ताक्षर किये हैं और अब उन संस्थाओं के साथ कदमताल कर अपने कार्यों को आगे बढ़ा रहा है।

भारतीय मूल के तीन मुस्लिम चेहरों ने दी बड़बोले ट्रंप को पहली बड़ी शिकस्त

नई दिल्ली, 5 नवंबर (एजेंसियां)। भारतीय मूल के तीन मुस्लिम उम्मीदवारों ने डेमोक्रेटिक पार्टी को बड़ी जीत दिलाई है। उन्होंने अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को नवंबर में हुए राष्ट्रपति चुनाव जीतने के बाद पहली बार हार का स्वाद चखाया। जोहरान ममदानी, आफताब प्योरवल और गजाला हाशमी ने न्यूयॉर्क सिटी, सिनसिनाटी और वर्जीनिया में हुए हाई-प्रोफाइल चुनावों में जीत हासिल की। यह जीतें ऐसे समय में आई हैं जब डेमोक्रेटिक पार्टी को कई झटके लगे थे, इसलिए इनका प्रतीकात्मक और व्यावहारिक दोनों तरह से अतिरिक्त महत्व है।

भले ही राष्ट्रपति ट्रंप ने हर दौड़ में व्यक्तिगत रूप से भाग नहीं लिया, लेकिन उनका प्रभाव और समर्थन इन चुनावों में महत्वपूर्ण था। मतदाताओं ने ट्रंप के कार्यकाल के प्रदर्शन को अस्वीकार कर दिया है, और यह स्पष्ट है कि भारतीय मूल के इन तीन मुस्लिम उम्मीदवारों ने कहानी को पलट दिया और रिपब्लिकन की गति को झटका दिया। न्यूयॉर्क सिटी में मेयर का चुनाव जीतने वाले जोहरान ममदानी, भारतीय-अमेरिकी फिल्म निर्माता मीरा नायर के बेटे हैं। उन्होंने न्यूयॉर्क में राष्ट्रपति ट्रंप की ओर से समर्थित निर्दलीय उम्मीदवार एंड्रयू कुओमो को हराया। ट्रंप ने ममदानी के जीतने पर संघीय धन रोकने की धमकी भी दी थी। वर्जीनिया में, 61 वर्षीय गजाला हाशमी ने लेफ्टिनेंट गवर्नर का चुनाव जीता। वह वर्जीनिया में राज्यव्यापी पद संभालने वाली पहली भारतीय-अमेरिकी और पहली मुस्लिम बनीं। उन्होंने रिपब्लिकन उम्मीदवार जॉन रीड को हराया। सिनसिनाटी के मेयर आफताब प्योरवल ने दूसरा कार्यकाल हासिल किया है। उन्होंने ट्रंप के रिपब्लिकन प्रतिद्वंद्वी कोरी बोमन को हराया, जो अमेरिकी उपराष्ट्रपति जेडी वेंस के सौतेले भाई हैं। यह जीतें डेमोक्रेटिक पार्टी के लिए एक बड़ी राहत लेकर आई हैं। पार्टी को हाल के दिनों में कई मुश्किलों का सामना करना पड़ा था। ऐसे में इन तीन उम्मीदवारों की जीत ने पार्टी का मनोबल बढ़ाया है। इन जीतों का महत्व सिर्फ चुनावी नतीजों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक बड़ा प्रतीकात्मक संदेश भी देती है। यह दिखाता है कि अमेरिकी मतदाता विविधता और समावेशिता को महत्व देते हैं।

चीन के स्पेस स्टेशन से टकराया अंतरिक्ष मलबा

तीन अंतरिक्ष यात्रियों की वापसी टली, सीएमएसए ने दी जानकारी

बीजिंग, 5 नवंबर (एजेंसियां)। चीन के मानवयुक्त अंतरिक्ष मिशन में बड़ा झटका लगा है। चीन के स्पेस स्टेशन से सूक्ष्म अंतरिक्ष मलबे की टक्कर के कारण बुधवार को निर्धारित अंतरिक्ष यात्रियों की वापसी को फिलहाल टाल दिया गया है। यह जानकारी चाइना मैनड स्पेस एजेंसी ने दी। एजेंसी ने कहा कि यह फैसला अंतरिक्ष यात्रियों की सुरक्षा और मिशन की सफलता को ध्यान में रखकर लिया गया है।

चीन हर छह महीने में अपने स्पेस स्टेशन के दल की अदला-बदली करता है। बीते शनिवार को शेनझोउ-20 अंतरिक्ष यान ने शेनझोउ-21 क्रू के साथ कक्षा में हैंडओवर प्रक्रिया पूरी की थी। अंतरिक्ष स्टेशन की चाबियां मंगलवार को औपचारिक रूप से सौंप दी गईं।

शेनझोउ-20 के तीन अंतरिक्ष यात्री (चेन डोंग, चेन झोंगरुई और वांग जिए) अपने निर्धारित सभी कार्य पूरे कर चुके हैं और बुधवार को इनर मंगोलिया के डोंगफेंग लैंडिंग साइट पर उतरने वाले थे। हालांकि, मलबे की टक्कर के चलते उनकी वापसी अस्थायी रूप से रोक दी गई है। इस बीच, चीन ने हाल ही में शेनझोउ-21 अंतरिक्ष यान के जरिए तीन नए अंतरिक्ष यात्रियों को छह महीने के मिशन पर अपने कक्षीय स्टेशन पर भेजा है।

प्रदेश में रातें होंगी ठंडी दिन में बढ़ेगा तापमान

रायपुर, 5 नवंबर (एजेंसियां)। छत्तीसगढ़ में अगले तीन दिनों तक न्यूनतम तापमान में कोई खास बदलाव नहीं होगा। मौसम विभाग के अनुसार, इस दौरान रात का तापमान लगभग वही रहेगा जो अभी है। इसके बाद तापमान में 2 से 3 डिग्री तक गिरावट आ सकती है। यानी अगले हफ्ते से ठंड और बढ़ेगी। दरअसल, उत्तर दिशा से ठंडी हवाएं आने से तापमान में गिरावट की संभावना बनी हुई है। इसके अलावा आने वाले दो दिनों के बाद जिस तरह का मौसम बनेगा, उसमें तेजी से मलेरिया फैलने का संकट भी छत्तीसगढ़ में दिख रहा। ये खतरा 7 नवंबर से 11 नवंबर तक बना रहेगा। प्रदेश में पिछले 24 घंटे में सर्वाधिक अधिकतम तापमान 32.0°C जगदलपुर में तथा सबसे कम न्यूनतम तापमान 12.4°C अंबिकापुर में दर्ज किया गया। बंगाल की खाड़ी में बना निम्न दबाव का क्षेत्र अभी भी सक्रिय है। यह सिस्टम उत्तर-पूर्वी और पूर्व-मध्य बंगाल की खाड़ी और म्यांमार-बांग्लादेश तट के पास बना हुआ है। मौसम विभाग के अनुसार, यह सिस्टम अगले 24 घंटों में उत्तर-उत्तर-पश्चिम दिशा की ओर बढ़ते हुए तटीय क्षेत्रों के समानांतर आगे बढ़ेगा।

पाकिस्तान में अब होगा सिविल-मिलिट्री रूल

शहबाज सरकार बदलने जा रही संविधान, असीम मुनीर करेंगे देश पर राज

इस्लामाबाद, 5 नवंबर (एजेंसियां)। पाकिस्तान की शहबाज शरीफ सरकार 27वां संशोधन पेश करने जा रही है। शहबाज सरकार के इस कदम के साथ देश नागरिक शासन की जगह सिविल-मिलिट्री रूल के लिए पूरी तरह से तैयार बताया जा रहा है। पाकिस्तान में हालांकि सेना ही असल में परदे के पीछे शासन करती रही है लेकिन अब इसे संवैधानिक मंजूरी मिलने जा रही है। बताया जा रहा है कि यह कदम पाकिस्तान के सेना प्रमुख असीम मुनीर की रिटायरमेंट को ध्यान में रखकर किया जा रहा है, जिससे उन्हें असीमित ताकत मिल जाएगी और वह सिविल सरकार के साथ मिलकर पाकिस्तान पर राज करेंगे।

27वें संविधान संशोधन के प्रस्ताव को 7 नवम्बर को पाकिस्तान की संसद में पेश किए जाने की तैयारी है। संशोधन का पाकिस्तान के सेना प्रमुख असीम मुनीर के कार्यकाल के साथ ही न्यायिक स्वतंत्रता, पाकिस्तान में प्रांतों की शक्तियों पर महत्वपूर्ण असर पड़ सकता है। विश्लेषकों का कहना है कि यह संशोधन फील्ड मार्शल असीम मुनीर की स्थिति और शक्ति को सुरक्षित रखने के लिए डिजाइन किया गया है।

दिलचस्प बात यह है कि पाकिस्तान की सरकार संविधान संशोधन की बात सिरे से नकारती रही थी और पाकिस्तानियों को खुद इसका पता पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी (PPP) के प्रमुख बिलावल भुट्टो जरदारी के ट्वीट से चला। बिलावल ने खुलासा किया कि प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने संविधान संशोधन पर समर्थन के लिए उनकी पार्टी से संपर्क किया है।

बिलावल ने प्रस्तावित संशोधनों में संवैधानिक न्यायालयों और जजों के ट्रांसफर से संबंधित प्रावधान का जिक्र किया है लेकिन सबसे खास अनुच्छेद 243 में बदलावों का जिक्र है, जिसने लोगों की चिंता बढ़ा दी है। अनुच्छेद 243 पाकिस्तानी सशस्त्र बलों की कमान और नियंत्रण से संबंधित है। यह कहता है कि सशस्त्र बलों पर संघीय सरकार का नियंत्रण और कमांड होगी।

पाकिस्तान और बांग्लादेशी नौसेना के बीच नापाक समझौता

भारत से बहुत बड़ा विश्वासघात कैसे कर रहे मोहम्मद यूनुस?

ढाका/इस्लामाबाद, 5 नवंबर (एजेंसियां)। भारत को घेरने के लिए बांग्लादेश अब पाकिस्तान के साथ एक खतरनाक गठबंधन करने जा रहा है। ये गठबंधन 1971 के क्रूर नरसंहार के भूतों को फिर से जिंदा करता है और पूरे दक्षिण एशिया को अस्थिर करने का रास्ता खोलता है।

भारत ने जिस बांग्लादेश को पाकिस्तान की सेना के क्रूर चुंगल से आजाद करवाया था, वो फिर से पाकिस्तान को ही गले लगाने के लिए आतुर है। पाकिस्तान नौसेना के प्रमुख एडमिरल नवीद अशरफ 8 नवंबर को ढाका की यात्रा पर जा रहे हैं, जो सिर्फ कूटनीति नहीं है।

पाकिस्तान नौसेना प्रमुख का ढाका दौरा जिहादी नेटवर्क के फिर से बनने और भारत का उलझन बढ़ाने वाला दौरा है।

इसका साफ मतलब है कि आने वाले वक्त में बांग्लादेश में आईएसआई का बोलबाला होगा और बांग्लादेश, भारत के खिलाफ जिहादियों के घुसने का एक रास्ता बन जाएगा। यह गठबंधन एक साझेदारी के रूप में नहीं, बल्कि बांग्लादेश की संप्रभुता को नष्ट करने और भारत के पूर्वी किनारों पर अस्थिरता की आग को हवा देने की एक भयावह साजिश के रूप में उभर रहा है।

बांग्लादेश और पाकिस्तान के बीच काफी तेजी से ये नापाक गठबंधन बन रहा है। मनोज गुप्ता ओपिनियन पीस में लिखते हैं कि कुछ हफ्ते पहले ही पाकिस्तान के ज्वाइंट चीफ़्स ऑफ स्टाफ कमेटी के चेयरमैन, जनरल साहिर शमशाद मिर्जा चार दिनों के लिए ढाका गये थे।

जिसमें उन्होंने बांग्लादेश के अंतरिम मुख्य सलाहकार, मुहम्मद यूनुस और सैन्य अधिकारियों की तिकड़ी, जैसे सेना प्रमुख जनरल वकर-उज़-जमान, नौसेना प्रमुख एडमिरल मोहम्मद नजमुल हसन और एयर चीफ मार्शल हसन महमूद खान के साथ कंधे से कंधा मिलाकर बातचीत की।

पाकिस्तान और बांग्लादेश के लीडर्स के बीच हुई ये बातचीत, कोई खाली गपशप नहीं थी।

अब अवैध ढाबों के लिए थाना अधिकारी होंगे व्यक्तिगत रूप से जिम्मेदार : शेखावत

जोधपुर, 5 नवंबर (एजेंसियां)। केंद्रीय जलशक्ति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत जोधपुर पहुंचे और मतोड़ा सड़क हादसे में मारे गए लोगों के परिजनों से मुलाकात की। उन्होंने गहरी संवेदना व्यक्त करते हुए कहा कि यह घटना अत्यंत दुखद और हृदय विदारक है। उन्होंने कहा कि इतने लोगों का एक साथ तीर्थयात्रा से लौटते हुए काल के ग्रास में जाना असहनीय है।

शेखावत ने कहा कि ऐसी घटनाएं बार-बार नहीं होनी चाहिए। इसके लिए समाज को ड्राइविंग की जिम्मेदारी को लेकर एक जन आंदोलन के रूप में आगे आने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि केवल कानून या पुलिस कार्रवाई से ही इन हादसों को रोका नहीं जा सकता, बल्कि हर वाहन चालक और यात्री को भी अपनी

जिम्मेदारी समझनी होगी।

हादसों को रोकने के लिए सख्त निर्देश- अवैध ढाबे हटाए जाएंगे

केंद्रीय मंत्री शेखावत ने इस मौके पर प्रशासन को सख्त निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि फलोदी जिला कलेक्टर, एसपी और राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण को तत्काल कार्रवाई कर सड़क किनारे बने सभी अवैध ढाबों को हटाने के निर्देश दिए गए हैं। उन्होंने कहा कि अब अगर इस रोड पर कोई भी अवैध ढाबा बनता है तो उसके लिए संबंधित थाना अधिकारी व्यक्तिगत रूप से जिम्मेदार होगा। शेखावत ने कहा कि इस नियम का सख्ती से पालन कराया जाएगा ताकि भविष्य में इस तरह की घटनाएं न हों।

पीड़ितों के लिए मदद और राहत की व्यवस्था पर बोले मंत्री

शेखावत ने बताया कि हादसे की जानकारी मिलते ही उन्होंने जोधपुर और फलोदी प्रशासन से बात कर अस्पतालों में सभी आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित करवाईं। उन्होंने कहा कि वे मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का धन्यवाद करते हैं जिन्होंने तुरंत संज्ञान लेकर मृतकों के परिजनों को सहायता राशि उपलब्ध कराने का निर्णय किया।

राजनीति करने वालों पर साधा निशाना

पत्रकारों से बातचीत में शेखावत ने कहा कि कुछ लोग इस तरह की दुखद घटनाओं में भी राजनीतिक स्वार्थ साधने का प्रयास करते हैं। उन्होंने कहा कि ऐसे लोगों को 2023 की भूंगरा दुखांतिका को याद करना चाहिए और अपने गिरेबान में झांकना चाहिए कि उस समय उनकी सरकार ने क्या संवेदना दिखाई थी। उन्होंने कहा कि ऐसे समय में राजनीति नहीं, बल्कि मानवता और एकजुटता की भावना से कार्य करना चाहिए ताकि पीड़ित परिवारों को सांत्वना मिल सके।

'देश के बाहर और भीतर भी शत्रु', राज्यपाल हरिभाऊ ने सोनिया गांधी के मतदाता होने पर उठाए सवाल

बांसवाड़ा, 5 नवंबर (एजेंसियां)। राजस्थान के राज्यपाल हरिभाऊ बागडे ने कहा कि देश सुरक्षित रहेगा तो ही नागरिक सुरक्षित रहेंगे। उन्होंने आगाह किया कि आज भारत को न केवल बाहरी बल्कि भीतरी शत्रुओं से भी सावधान रहने की आवश्यकता है। राज्यपाल गोविंद गुरु जनजाति विश्वविद्यालय में आयोजित 'राष्ट्रीय एकात्मकता' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि जब शासन और जनता दोनों सुरक्षित हाथों में होते हैं तो देश विकास की दिशा में अग्रसर होता है। हर नागरिक में राष्ट्र के प्रति सद्भाव और जिम्मेदारी की भावना होनी चाहिए। बागडे ने कहा कि भारत विश्व का एकमात्र देश है जहां नदियों, पर्वतों और

वृक्षों जैसे प्राकृतिक संसाधनों की पूजा की जाती है, इसलिए नागरिकों को भी राष्ट्र के आदर्श मूल्यों के प्रति श्रद्धा और कर्तव्यभाव से कार्य करना चाहिए। उन्होंने कहा कि एकता की भावना हमें राष्ट्रीय सूत्र में बांधती है और यही भारत की सबसे बड़ी शक्ति है।

अपने संबोधन में राज्यपाल हरिभाऊ बागडे ने कांग्रेस की पूर्व अध्यक्ष और राज्यसभा सांसद सोनिया गांधी का नाम लेकर कहा कि कई समाचार पत्रों में यह बात आई है कि सोनिया गांधी ने भारत की नागरिकता नहीं ली, लेकिन उनका नाम वोटर लिस्ट में आ गया था। यह अच्छा नहीं है।

वहीं, उन्होंने कहा कि देश के विभाजन के समय जो निर्णय हुआ था, उसके विपरीत देश की आजादी के बाद भारत को धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र बनाने की बात कहते हुए कहा गया कि जो यहां रहना चाहता है रह सकता है और जो जाना चाहता है वह जा सकता है। इस दौरान करीब 10 लाख लोग मारे गए।

संगोष्ठी में वर्ल्ड एसोसिएशन ऑफ हिंदू अकैडमिशियन के डॉ. नचिकेता तिवारी ने कहा कि हिंदू समाज में अनेक विविधताएं हैं, जिन्हें एक मंच पर लाना आज की आवश्यकता है। कुलगुरु प्रो. केशव सिंह ठाकुर ने कहा कि भारत की सबसे बड़ी शक्ति उसकी विविधता में निहित एकात्म चेतना है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय एकात्मता एक ऐसी भावना है जिसमें सभी नागरिक एकता, अखंडता और सौहार्द के साथ रहकर देश को मजबूत बनाते हैं।

राज्यपाल के विश्वविद्यालय पहुंचने पर कुलपति प्रो. के.एस. ठाकुर ने उनका स्वागत किया। संगोष्ठी में राष्ट्रीय जनजाति आयोग के अध्यक्ष अंतर सिंह आर्य, विश्व हिंदू परिषद के केंद्रीय संगठन मंत्री मिलिंद परांडे, देशभर के शिक्षाविद्, चिंतक और युवा शोधार्थी उपस्थित रहे। कार्यक्रम में जनजातीय गौरव, राष्ट्र की संकल्पना और युवाओं की भूमिका पर चर्चा की गई। साथ ही जनजातीय स्वतंत्रता सेनानियों पर आधारित प्रदर्शनी ने आगंतुकों का ध्यान आकर्षित किया।

पूर्व सीएम के पीएसओ रहे राजकुमार सहित 5 को हाईकोर्ट से राहत नहीं, 9 आरोपियों को मिली जमानत

जयपुर, 5 नवंबर (एजेंसियां)। हाईकोर्ट ने पुलिस उपनिरीक्षक (एसआइ) भर्ती-2021 पेपरलीक मामले में पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के पर्सनल सिक्योरिटी ऑफिसर (पीएसओ) रहे राजकुमार यादव, पेपरलीक गिरोह के सदस्य, पेपर सॉल्वर और प्रशिक्षु एसआइ सहित 5 आरोपियों को राहत देने से इनकार कर दिया। वहीं, राजकुमार के बेटे भरत यादव सहित भर्ती में फेल होने वाले 9 आरोपियों की जमानत मंजूर कर ली। न्यायाधीश चंद्रप्रकाश श्रीमाली ने राजकुमार यादव, भरत यादव सहित 14 आरोपियों की जमानत याचिकाओं पर फैसला सुनाया। एसओजी ने राजकुमार यादव को अपने बेटे भरत यादव के लिए पेपर खरीदने के आरोप में 8 अगस्त को गिरफ्तार किया था। बेटा भरत यादव भर्ती परीक्षा में पास हो गया, लेकिन शारीरिक दक्षता परीक्षा में फेल हो गया था।

हाईकोर्ट ने आरपीएससी सदस्य बाबूलाल कटारा का भतीजा राहुल कटारा, नेहा पांड्या, नैतिक पांड्या, ऋद्धि पांड्या, भरत यादव, रविन्द्र सिंह, अशोक सिंह व राधिका सिंह, शिव सिंह को जमानत दे दी।

हाईकोर्ट ने गिरफ्तारी के समय पुलिस आयुक्तालय में तैनात राजकुमार यादव, आरपीएससी के निलम्बित सदस्य बाबूलाल कटारा का भांजा विजय कुमार डामोर, प्रवीण कुमार खराड़ी, सत्येन्द्र यादव व प्रशिक्षु एसआइ समेता कुमारी की जमानत याचिका खारिज कर दी।

याचिकाकर्ताओं की ओर से कहा गया कि वे लंबे समय से जेल में हैं। उनके खिलाफ कोई साक्ष्य नहीं हैं और ट्रायल पूरी होने में समय लगने की संभावना है। ऐसे में जमानत पर रिहा किया जाए। विशेष लोक अभियोजक अनुराग शर्मा ने जमानत याचिकाओं का विरोध करते हुए कहा कि आरोपियों ने एक गिरोह के रूप में प्रश्न पत्र लीक कर उसकी पवित्रता को भंग किया।

स्लीपर बसों की हड़ताल फेल, दोपहर में दी थी भजनलाल सरकार को चेतावनी

रात में बिना शर्त हुई समाप्त, आज से चलना हुई शुरू

जयपुर, 5 नवंबर (एजेंसियां)। पांच दिनों से चल रही निजी बस ऑपरेटरों की हड़ताल आखिरकार बिना शर्त समाप्त हो गई। सरकार की ओर से बस संचालकों की किसी भी शर्त को लिखित में नहीं माना गया है। स्लीपर बस संचालक अपनी मांगों को लेकर सरकार पर लगातार दबाव बना रहे थे। इसके लिए बस संचालक परिवहन मंत्री डॉ प्रेमचंद बैरवा व अन्य जनप्रतिनिधियों से मिले थे। हड़ताल समाप्त इसलिए नहीं हो रहीं थी, क्योंकि परिवहन विभाग की सचिव शुचि त्यागी ने मांगें नहीं मानी और साफ कहा कि जब तक बसें नियमानुसार नहीं होगी। तब तक वह सडक़ पर नहीं चलने देंगी।

दोपहर में चेतावनी, रात में हड़ताल खत्म

बस संचालकों की ओर से मांगें मानने को लेकर सरकार पर दबाव बनाने के लिए तमाम हथकंडे अपनाए गए। जब सारे हथकंडे फेल हो गए तो बस संचालकों ने भजनलाल सरकार को चेतावनी दे डाली। जिसमें कहा गया था कि 5 नंवबर तक मांगें नहीं मानी गईं तो रात से स्टेट कैरिज की बसें भी हड़ताल में शामिल हो जाएंगी। जिसके बाद प्रदेश में करीब 30 हजार निजी बसों का चक्का जाम हो जाएगा। चेतावनी देने के बाद ऐसा

क्या हुआ कि अचानक हड़ताल समाप्त हो गई?

दबाव में आए बस संचालक

स्लीपर बस संचालकों की ओर से हड़ताल अब लंबी होती जा रही थी। स्लीपर बसों में भी गुट बंट गए थे। ऐसे में हड़ताल पूरी तरह सफल भी नहीं हो रही थी। जिनकी बसें खड़ी थी, उन्हें हर दिन नुकसान हो रहा था। ऐसे में हड़ताल के कारण बस संचालक भी अंदरूनी तौर पर दबाव में थे। वहीं, परिवहन विभाग की सचिव शुचि त्यागी किसी भी तरह से इस हड़ताल से दबाव में नहीं आईं। रात में बस संचालकों और अपर परिवहन आयुक्त ओमप्रकाश बुनकर के बीच वार्ता हुई। इसके बाद बस संचालकों ने हड़ताल समाप्त कर दी। आज सुबह से स्लीपर बसों का वापस चलना शुरू हो गया है। बसें सवारियां लेकर आती जाती दिखाई दे रहीं है।

बिना शर्त हड़ताल समाप्त, बोले अध्यक्ष

ऑल राजस्थान कॉन्ट्रैक्ट कैरिज बस यूनियन के अध्यक्ष राजेंद्र शर्मा ने बताया कि हम यात्रियों की सुरक्षा को लेकर सरकार जितने ही गंभीर हैं। उन्होंने कहा कि हम बिना किसी शर्त के बसों की हड़ताल वापस लेते हैं। सुरक्षा के सभी मापदंड पूरे करके ही बसों का संचालन करेंगे। उन्होंने कहा कि सडक़ हादसे चिंताजनक हैं और उनमें हुई जनहानि पर हमें गहरा दुख है। आगे से हर बस में सुरक्षा के नियमों का पूरी तरह पालन किया जाएगा।

तीन महीने में साइबर अपराध के 60 मामले दर्ज

75 आरोपी गिरफ्तार; 35 करोड़ के लेनदेन का खुलासा

सवाई माधोपुर, 5 नवंबर (एजेंसियां)। सवाई माधोपुर पुलिस ने साइबर अपराध पर नकेल कसने के लिए ऑपरेशन एंटीवायरस चलाया, जिसके तहत पिछले तीन महीनों में 60 प्रकरण दर्ज कर 75 साइबर अपराधियों को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस अधीक्षक अनिल कुमार बेनीवाल ने बताया कि गिरफ्तार अपराधियों से पुलिस को लगभग 35 करोड़ के संदिग्ध वित्तीय लेनदेन का खुलासा मिला है। इस दौरान साइबर अपराध से अर्जित धन से खरीदी गई एक कार की कुर्की की गई, जो जिले में अपनी तरह की पहली कार्रवाई है। पुलिस ने बताया कि अभियान का असर यह हुआ कि कई साइबर अपराधी जिले से पलायन करने लगे हैं, जबकि फरार आरोपियों की तलाश में थानाधिकारी लगातार दबिश दे रहे हैं।

पुलिस अधीक्षक बेनीवाल ने बताया कि किराए पर बैंक खाते बेचने और खरीदने वालों पर कार्रवाई करते हुए 29 प्रकरण दर्ज कर 22 आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है। इन खातों को 'म्यूल अकाउंट्स' के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा था, जिनमें लगभग 25 करोड़ के संदिग्ध लेनदेन का पता चला है। इन खातों को अब फ्रीज कर दिया गया है। इसके साथ ही फर्जी सिम कार्ड बेचने वाले चार लोगों को भी गिरफ्तार किया गया है, जिन्होंने इन अपराधियों को पहचान छिपाने में मदद की थी।

'ऑपरेशन एंटीवायरस' के तहत पुलिस ने साइबर ठगी से जुड़े 25 प्रकरण दर्ज किए, जिनमें अब तक 49 आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस ने इनके कब्जे से 7 लाख नकद, तीन बाइक, तीन कारें, कई बैंक पासबुक, चेकबुक और एटीएम कार्ड जब्त किए हैं। जांच में सामने आया कि इन अपराधियों ने करीब 10 करोड़ की ठगी को अंजाम दिया था।

साइबर ठगी से खरीदी गई कार की कुर्की, जिले में पहली कार्रवाई

एसपी बेनीवाल ने बताया कि चौथ का बरवाड़ा थाना पुलिस ने एक विशेष मामले में आरोपी विक्रम पुत्र रामसिंह मीना, निवासी सारसोप को गिरफ्तार किया था। आरोपी के पास से 1.12 लाख नकद, सोने की चेन, अंगूठी और एक गाड़ी जब्त की गई। जांच में पता चला कि आरोपी ने यह गाड़ी साइबर फ्रॉड से अर्जित राशि से खरीदी थी। जांच अधिकारी मानटाउन थानाधिकारी ने जब बैंक खातों की पड़ताल की तो आरोपी के खाते में फ्रॉड की रकम जमा कर तुरंत एटीएम से निकासी की पुष्टि हुई।

बदमाशों ने चलाई 13 गोलियां सात लगीं, नहीं मरा तो चाकू से गोद डाला

बारां, 5 नवंबर (एजेंसियां)। बारां शहर की शाम उस वक्त दहशत में बदल गई जब कोतवाली थाना क्षेत्र के तालाबपाड़ा इलाके में हिस्ट्रीशीटर शाहरुख उर्फ शाहरुख शूटर की गोलियों से भूनकर हत्या कर दी गई। घटना इतनी भयावह थी कि बदमाशों ने शाहरुख पर करीब 13 फायर किए, जिनमें 7 गोलियां उसे लगीं। फायरिंग के बाद बदमाशों ने चाकू से भी वार किए, जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई। मृतक शाहरुख के खिलाफ कोतवाली थाने में एक दर्जन से अधिक आपराधिक मामले दर्ज थे, जिनमें हत्या का मामला भी शामिल था। बताया जा रहा है कि उसी पुराने हत्या प्रकरण की रंजिश के चलते इस वारदात को अंजाम दिया गया।

पुलिस के अनुसार, इस वारदात में सद्दाम, रेहान और एक अन्य युवक शामिल थे। तीनों ने पहले शाहरुख पर चाकू से हमला किया, इसके बाद लगातार फायरिंग शुरू कर दी। वारदात के दौरान सिग्मा ड्यूटी पर तैनात पुलिसकर्मी पास ही मौजूद थे, जिन्होंने तुरंत प्रतिक्रिया दी और सद्दाम व रेहान को मौके पर ही पकड़ लिया, जबकि तीसरा आरोपी मौके से फरार हो गया। घटना के बाद पुलिस के आला अधिकारी मौके पर पहुंचे। ASP राजेश चौधरी, सीओ ओमेन्द्र सिंह शेखावत और कोतवाली थाना प्रभारी सीआई योगेश चौहान ने जिला अस्पताल पहुंचकर स्थिति का जायजा लिया और जांच के निर्देश दिए। पुलिस ने एफएसएल टीम को मौके पर बुलाया ताकि हत्या के सबूतों की वैज्ञानिक जांच की जा सके। शहर में हुई इस फायरिंग के बाद लोगों में दहशत और सनसनी फैल गई है। एएसपी राजेश चौधरी ने बताया कि शाहरुख और हमलावरों के बीच पुरानी आपसी रंजिश चल रही थी। इसी विवाद के चलते आज शाम को सद्दाम, रेहान और उनके साथी ने घात लगाकर हमला किया। पुलिस ने बताया कि शहर में अब अतिरिक्त सुरक्षा बल तैनात किए गए हैं, ताकि किसी प्रकार की अप्रिय स्थिति न बन सके।

एक और भीषण हादसा, कटकर अलग हुए बाइक सवारों के हाथ पैर, दो की मौत, दो बेहद गंभीर

जालोर, 5 नवंबर (एजेंसियां)। भारतमाला एक्सप्रेसवे पर एक बार फिर रफ्तार और लापरवाही का घातक संगम देखने को मिला। राजस्थान के जालोर जिले में देवड़ा गांव के समीप एक भीषण सड़क हादसे में दो युवकों की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई, जबकि उनके दो साथी गंभीर रूप से घायल हो गए। यह दुर्घटना उस वक्त हुई, जब 1 मोटरसाइकिल पर सवार 4 दोस्त एक्सप्रेसवे पर रॉन्ग साइड में तेज रफ्तार से सांचौर की ओर जा रहे थे और सामने से आ रहे एक अनियंत्रित ट्रक की चपेट में आ गए।

यह टक्कर इतनी भीषण थी कि मोटरसाइकिल पर सवार एक युवक के हाथ और पैर कटकर मौके पर ही अलग जा गिरे। जबकि दूसरा युवक एक्सप्रेसवे किनारे लगी रेलिंग में जा फंसा। पुलिस ने पुष्टि की है कि दोनों मृतकों की शिनाख्त की जा रही है, जबकि दो गंभीर रूप से घायल युवकों को तुरंत सांचौर के एक प्राइवेट अस्पताल में भर्ती कराया गया हैए जहां उनकी हालत नाजुक बनी हुई है।

हादसे की शुरुआती जांच में यह स्पष्ट हुआ है कि इस दर्दनाक घटना का मुख्य कारण मोटरसाइकिल सवारों द्वारा की गई घोर लापरवाही थी, क्योंकि भारतमाला एक्सप्रेसवे पर दोपहिया वाहनों का प्रवेश बंद है। लेकिन ये बाइक सवार एक्सप्रेसवे पर रॉन्ग साइड ड्राइविंग कर रहे थे। तेज रफ्तार और नियमों की अनदेखी के चलते ही यह हादसा हुआ। स्थानीय लोगों का कहना है कि आसपास रहने वाले लोग अक्सर एक्सप्रेसवे पर बाइक लेकर बेरोकटोक निकल जाते हैं।

झाब थाना अधिकारी अरुण कुमार और बीट प्रभारी नरपत सिंह राजपुरोहित को जैसे ही हादसे की सूचना मिली, वे तुरंत भारी पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे। पुलिस ने तुरंत घायलों को निकालने और घटनास्थल को सुरक्षित करने का काम शुरू किया। उन्होंने टक्कर के बाद ट्रक चालक मौके पर रुका रहा और उसने दुर्घटना की सूचना पुलिस को देने में मदद की। पुलिस ने उससे पूछताछ की है ।

पुलिस ने दोनों मृतकों के शवों को कब्जे में लेकर कानूनी औपचारिकताओं के बाद पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया है। झाब थाने में इस संबंध में मामला दर्ज कर लिया गया है और विस्तृत जांच शुरू कर दी गई है। पुलिस अब यह पता लगाने की कोशिश कर रही है कि चारों युवक कहां से आ रहे थे और उन्होंने एक्सप्रेसवे पर रॉन्ग साइड जाने का खतरनाक फैसला क्यों लिया।

लिगामेंट का इलाज कराने भर्ती हुआ था युवक

गलत ब्लड ग्रुप का खून चढ़ाया, बाल-बाल बची जान

जोधपुर, 5 नवंबर (एजेंसियां)। जोधपुर के महात्मा गांधी अस्पताल में लापरवाही का एक बड़ा मामला सामने आया है। यहां एक बास्केटबॉल खिलाड़ी को गलत ब्लड ग्रुप का खून चढ़ा दिया गया। मरीज की सतर्कता और समय पर सूचना देने से बड़ा हादसा टल गया। घटना के बाद अस्पताल प्रशासन में हड़कंप मच गया और पूरे मामले की जांच के आदेश दे दिए गए हैं।

मामला जोधपुर के महात्मा गांधी अस्पताल के कॉटेज वार्ड का है, जहां जयपुर से इलाज करवाकर लौटे खिलाड़ी हर्षवर्धन को लिगामेंट की समस्या के चलते भर्ती किया गया था। हर्षवर्धन की स्थिति पहले से बेहतर थी और वह रिकवरी पर था। इसी दौरान अस्पताल स्टाफ ब्लड का किट लेकर उसके पास पहुंचा।

हर्षवर्धन के अनुसार ब्लड बैग पर B पॉजिटिव लिखा था, जबकि उसका ब्लड ग्रुप A पॉजिटिव है। जब उसने स्टाफ से कहा कि उसे डॉक्टर ने खून चढ़ाने के लिए नहीं कहा है तो कर्मचारियों ने फिर भी खून चढ़ाना शुरू कर दिया। कुछ ही देर बाद जब हर्षवर्धन के पिता मौके पर पहुंचे तो हर्षवर्धन ने उन्हें पूरी बात बताई।

इसके बाद जब अस्पताल प्रशासन को जानकारी दी गई तो तुरंत खून चढ़ाना रोका गया। मामला अस्पताल अधीक्षक डॉ. फतेहसिंह भाटी तक पहुंचा, जिन्होंने तुरंत जांच के आदेश देते हुए रिपोर्ट तलब की। उन्होंने कहा कि घटना की जांच के लिए कमेटी गठित की गई है। रिपोर्ट आने के बाद दोषी पाए जाने पर कर्मचारियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। मरीज को फिलहाल किसी तरह की परेशानी या लक्षण नहीं हैं।

हर्षवर्धन के पिता शिवलाल ने बताया कि जब वे बेटे के पास पहुंचे तो ब्लड पहले से चढ़ाया जा रहा था।

पीटीआई पर फर्जी शपथ-पत्र देने का आरोप

नौकरी के लिए छिपाई तीसरी संतान; जांच में जुटा शिक्षा विभाग

नागौर, 5 नवंबर (एजेंसियां)। नागौर जिले के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, श्रीबालाजी में कार्यरत पीटीआई (फिजिकल ट्रेनिंग इंस्ट्रक्टर) रमेश चन्द्र पुत्र दीपाराम पर नौकरी पाने के लिए फर्जी शपथ-पत्र दाखिल करने का गंभीर आरोप लगा है।

रमेश चन्द्र ने नियुक्ति के समय दिए गए दस्तावेज में केवल दो संतानों कुलदीप और उमेश का उल्लेख किया, जबकि शिकायत के अनुसार उनकी तीसरी संतान पूनम का जन्म नौकरी लगने से पहले ही हो चुका था। इस मामले में जिला शिक्षा अधिकारी को लिखित शिकायत दी गई है, जिसमें शिक्षक की बर्खास्तगी और कानूनी कार्रवाई की मांग की गई है।

शिकायतकर्ता के मुताबिक, रमेश चन्द्र के तीनों बच्चे कुलदीप, उमेश और पूनम उनकी नियुक्ति से पहले जन्मे थे। शिकायत में दावा किया गया है कि पूनम का जन्म राजकीय अस्पताल में हुआ था और सरकार की ओर से दी जाने वाली पुत्री जन्म प्रोत्साहन राशि भी रमेश चन्द्र के बैंक खाते में जमा हो चुकी है। यह सरकारी रिकॉर्ड कथित रूप से उनके शपथ-पत्र के विपरीत तथ्यों को साबित करता है। शिकायत में कहा गया है कि सरकारी सेवाओं में भर्ती प्रक्रिया के दौरान दो से अधिक संतान होने पर अभ्यर्थी अयोग्य माना जा सकता है, इसलिए उन्होंने जानबूझकर गलत जानकारी देकर नियमों का उल्लंघन किया।

शिकायतकर्ता ने जिला शिक्षा अधिकारी से अनुरोध किया है कि रमेश चन्द्र के खिलाफ धोखाधड़ी, फर्जीवाड़ा और दस्तावेजों में हेराफेरी के तहत मामला दर्ज किया जाए। उन पर सेवा नियमों का उल्लंघन करने का आरोप है और कहा गया है कि यदि ऐसे लोगों को सजा नहीं दी गई, तो यह भर्ती प्रक्रिया की साख को नुकसान पहुंचाएगा।

जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय ने शिकायत की पुष्टि करते हुए बताया कि प्रारंभिक जांच शुरू की जा चुकी है। जांच के तहत शपथ-पत्र की मूल प्रति, बच्चों के जन्म प्रमाण-पत्र, अस्पताल रिकॉर्ड और बैंक डिटेल्स की पड़ताल की जाएगी। अधिकारी के अनुसार, यदि यह साबित होता है कि तीसरी संतान नौकरी से पहले जन्मी थी, तो रमेश चन्द्र पर राजस्थान सेवा नियमावली के तहत बर्खास्तगी और आपराधिक मुकदमा दर्ज किया जा सकता है।

इस घटना ने नागौर के शिक्षा विभाग में हड़कंप मचा दिया है। स्थानीय अभिभावकों और शिक्षक संघों ने कहा है कि यदि फर्जी दस्तावेजों से नियुक्ति हुई है, तो यह योग्य उम्मीदवारों के अधिकारों का हनन है और विभाग की साख पर गंभीर प्रश्नचिह्न लगाता है। एक अभिभावक ने कहा कि स्कूल में बच्चों को अनुशासन सिखाने वाला शिक्षक ही अगर नियम तोड़ेगा, तो शिक्षा की नैतिकता पर क्या असर पड़ेगा? यह प्रकरण राज्य में सरकारी नौकरियों में दस्तावेजी हेराफेरी के बढ़ते मामलों की याद दिलाता है। हाल के वर्षों में कई शिक्षक और कर्मचारी जाति प्रमाण-पत्र, आय प्रमाण-पत्र और शैक्षणिक योग्यता में गड़बड़ी के कारण पकड़े जा चुके हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि ऐसी घटनाओं पर रोक लगाने के लिए डिजिटल वेरिफिकेशन और बायोमेट्रिक जांच प्रणाली को मजबूत करना आवश्यक है।

कार चलाते पूर्व सरपंच की हार्टअटैक से मौत

डिवाइडर पर चढ़ी गाड़ी तो लोग समझे नशे में है ड्राइवर

कोटा, 5 नवंबर (एजेंसियां)। कोटा के बोराबास पंचायत के पूर्व सरपंच और अब प्रशासक अर्जुन गुंजल (55) अचानक हार्टअटैक की वजह से चलती गाड़ी में बेसुध हो गए। घटना कोटा केएरोड्रम रोड से सीएडी सर्किल के बीच हुई। हार्टअटैक के बाद उनकी गाड़ी डिवाइडर पर चढ़ गई और दूसरी तरफ उतर गई।

अर्जुन गुंजल की फाइल फोटोः पत्रिका

स्थानीय राहगीरों ने गाड़ी के अचानक डिवाइडर पर चढ़ने पर शोर मचाया। कुछ लोगों को लगा कि ड्राइवर शराब में है लेकिन पास जाकर देखा तो अर्जुन गुंजल बेहोश थे। राहगीर तुरंत गाड़ी का शीशा तोड़कर उन्हें बाहर निकाले और पास के अस्पताल तक पहुंचाया।

सुबह बताई थी गैस और उल्टी की समस्या

अर्जुन गुंजल के रिश्तेदार भरत गुर्जर ने बताया कि सुबह उनकी तबीयत ठीक नहीं थी। उन्होंने उल्टी की शिकायत की थी और गैस की समस्या बताते हुए घर से बाहर निकले थे। इसी बीच गाड़ी चलाते समय उनकी तबीयत बिगड़ गई। राहगीरों ने अर्जुन पर सीपीआर देने का प्रयास किया और मुंह से सांस भी दी लेकिन तब तक उनकी मौत हो गई थी।

दक्षिण मध्य रेलवे

हमें @SCRailwayIndia पर फॉलो करें

ई-निविदा सूचना
सं.डीआरएम/वर्क्स/एससी/139-160/2025/ओटी, दि..31-10-2025

कृते भारत के राष्ट्रपति की ओर से व के लिए, अधोहस्ताक्षरी द्वारा निम्न कार्यो हेतु दि.28-11-2025 के 14.00 बजे तक ई-निविदाएं आमंत्रित हैं।

क्रम सं.01, ई-टेंडर नं.139_ सीआर_एससी_25_ओटी, कार्य विवरणः एससी केजेडजे सेक्शनः डीएलएस/केजेडजे-डिजल स्टोर्स डिपो पर नई आफिस बिल्डिंग का निर्माण कार्य तथा डिपो स्टोर्स का नवीनीकरण करना। अनुमानित निविदा मूल्य रु.2,15,19,694.00, पूर्व धरोहर राशि रु.2,57,600.00, कार्य पूरा करने की अवधिः 09 महिने, रखरखाव अवधिः36 महिने

क्रम सं.02, ई-टेंडर नं.140_ एन_एससी_25_ओटी, कार्य विवरणः केजेडजे-बीपीक्यू सेक्शनः पीडीपीएल-केवायओपी स्टेशनों के बीच किमी 296/27-25 पर बीआर नं.94 (अप&डाउन) हेतु पीएससी स्लैब्स सहित मौजूदा 5x12.20 एम स्टील गिर्डर्स का प्रस्तावित प्रतिस्थापन या रिप्लेसमेंट करना। अनुमानित निविदा मूल्य रु.6,97,33,782.00 पूर्व धरोहर राशि रु.4,98,700.00, कार्य पूरा करने की अवधिः 09 महिने, रखरखाव अवधिः36 महिने

क्रम सं.03, ई-टेंडर नं.141_ एनडब्ल्यू_एससी_25_ओटी, कार्य विवरणः वीकेबी-पीआरएलआय सेक्शनःडीइएन/उत्तर-पश्चिम/एससी सेक्शन के तहत कुल लंबाई 8.482 किमी हेतु बल्लास्ट कूपन की 30 सेंमी तक वृध्दि तथा रिकूपमेंट सहित सीटीआर (पी) कार्य एवम् कुल लंबाई 23.4% किमी हेतु टीआरआर (पी) कार्य तथा कुल लंबाई 9.148 किमी हेतु नई फिट्टिंग सहित मौजूदा फिट्टिंग्स की नवीनीकरण की पूरी फिट्टिंग का कार्य। अनुमानित निविदा मूल्य रु.2,%5,98,467.00 पूर्व धरोहर राशि रु.2,88,000.00, कार्य पूरा करने की अवधिः 12 महिने, रखरखाव अवधिः45 (दिन)

क्रम सं.04, ई-टेंडर नं.142_ एनडब्ल्यू_एससी_25_ओटी, कार्य विवरणः बीआयडीआर-जीआर सेक्शनः एडीइएन/बीआयडीआर सब-डिवीजन के तहत एसएसइ/पी.वे/एचएमबीडी सेक्शन में केएचएनपी-टीजेएसपी स्टेशनों के बीच एसएल लाइन पर किमी 0.00 से 97.70 तक प्रस्तावित सुरक्षा संबंधित ट्रैक कार्य तथा छिटपुट ट्रैक का (सुरक्षा संबंधी कार्यों के अलावा) कार्य। अनुमानित निविदा मूल्य रु.1,16,29,931.00 पूर्व धरोहर राशि रु.2,08,200.00, कार्य पूरा करने की अवधिः 12 महिने, रखरखाव अवधिः45 (दिन)

क्रम सं.05, ई-टेंडर नं.143_ एनडब्ल्यू_एससी_25_ओटी, कार्य विवरणः वीकेबी-पीआरएलआय सेक्शनः एडीइएन/बीआयडीआर सब-डिवीजन के तहत एसएसइ/पी.वे/ बीआयडीआर सेक्शन में जेडबी-बीएचएलके स्टेशनों के बीच एसएल लाइन पर किमी 64 से 129 तक प्रस्तावित सुरक्षा संबंधित ट्रैक कार्य तथा छिटपुट ट्रैक का (सुरक्षा संबंधी कार्यों के अलावा) कार्य। अनुमानित निविदा मूल्य रु.1,38,52,996.00 पूर्व धरोहर राशि रु.2,19,300.00, कार्य पूरा करने की अवधिः 12 महिने, रखरखाव अवधिः45 (दिन)

क्रम सं.06, ई-टेंडर नं.144_ एनडब्ल्यू_एससी_25_ओटी, कार्य विवरणः वीकेबी-पीआरएलआय सेक्शनः एडीइएन/बीआयडीआर सब-डिवीजन के तहत एसएसइ/पी.वे/ युडीजीआर सेक्शन में वीकेबी-पीआरएलआय स्टेशनों के बीच एसएल लाइन पर किमी 129 से 200 तक प्रस्तावित सुरक्षा संबंधित ट्रैक कार्य तथा छिटपुट ट्रैक का (सुरक्षा संबंधी कार्यों के अलावा) कार्य। अनुमानित निविदा मूल्य रु.1,13,85,841.00 पूर्व धरोहर राशि रु.2,07,000.00, कार्य पूरा करने की अवधिः 12 महिने, रखरखाव अवधिः45 (दिन)

क्रम सं.07, ई-टेंडर नं.145_ एनडब्ल्यू_एससी_25_ओटी, कार्य विवरणः वीकेबी-पीआरएलआय सेक्शनः एडीइएन/बीआयडीआर सब-डिवीजन के तहत एसएसइ/पी.वे/ पीआरएलआय सेक्शन में एलटीआरआर-पीआरएलआय स्टेशनों के बीच एसएल लाइन पर किमी 200.920 से 269.200 तक प्रस्तावित सुरक्षा संबंधित ट्रैक कार्य तथा छिटपुट ट्रैक का (सुरक्षा संबंधी कार्यों के अलावा) कार्य। अनुमानित निविदा मूल्य रु.1,34,39,165.00 पूर्व धरोहर राशि रु.2,17,200.00, कार्य पूरा करने की अवधिः 12 महिने, रखरखाव अवधिः45 (दिन)

क्रम सं.08, ई-टेंडर नं.146_ एनडब्ल्यू_एससी_25_ओटी, कार्य विवरणः पीडीपीएल-एनजेडबी सेक्शनः एडीइएन/केआरएमआर सब-डिवीजन के तहत एसएसइ/पी.वे/ केआरएमआर सेक्शन में पीडीपीएल-एपीजेएल स्टेशनों के बीच एसएल लाइन पर किमी 0 से 83 तक प्रस्तावित सुरक्षा संबंधित ट्रैक कार्य तथा छिटपुट ट्रैक का (सुरक्षा संबंधी कार्यों के अलावा) कार्य। अनुमानित निविदा मूल्य रु.1,36,53,244.00 पूर्व धरोहर राशि रु.2,18,300.00, कार्य पूरा करने की अवधिः 12 महिने, रखरखाव अवधिः45 (दिन)

क्रम सं.09, ई-टेंडर नं.147_ एनडब्ल्यू_एससी_25_ओटी, कार्य विवरणः पीडीपीएल-एनजेडबी सेक्शनः एडीइएन/केआरएमआर सब-डिवीजन के तहत एसएसइ/पी.वे/ एआरएमयु सेक्शन में एलपीजेएल- एनजेडबी स्टेशनों के बीच एसएल लाइन पर किमी 83 से 178 तक प्रस्तावित सुरक्षा संबंधित ट्रैक कार्य तथा छिटपुट ट्रैक का (सुरक्षा संबंधी कार्यों के अलावा) कार्य। अनुमानित निविदा मूल्य रु.1,37,05,986.00 पूर्व धरोहर राशि रु.2,18,600.00, कार्य पूरा करने की अवधिः 12 महिने, रखरखाव अवधिः45 (दिन)

क्रम सं.10, ई-टेंडर नं.148_ सीआर_एससी_25_ओटी, कार्य विवरणः एससी-केजेडजे सेक्शनः एडीइएन/ इ /एससी सब-डिवीजन के तहत एसएसइ/पी.वे/ एससी सेक्शन में एसएनएफ से एमएलवाय स्टेशनों के बीच एसएल लाइन पर अप एन्ड डाउन व तीसरी लाइन के किमी 190 से 203 तथा किमी 11 से 22 तक प्रस्तावित सुरक्षा संबंधित ट्रैक कार्य तथा छिटपुट ट्रैक का (सुरक्षा संबंधी कार्यों के अलावा) कार्य। अनुमानित निविदा मूल्य रु.1,82,05,027.00 पूर्व धरोहर राशि रु.2,41,100.00, कार्य पूरा करने की अवधिः 12 महिने, रखरखाव अवधिः45 (दिन)

क्रम सं.11, ई-टेंडर नं.149_ सीआर_एससी_25_ओटी, कार्य विवरणः एससी-केजेडजे सेक्शनः एडीइएन/ इ /एससी सब-डिवीजन के तहत एसएसइ/पी.वे/ जीटी सेक्शन में एमएलवाय से डब्ल्यूपी स्टेशनों के बीच अप एन्ड डाउन व चौथी लाइन्स पर किमी 203 से 252.60 तक प्रस्तावित सुरक्षा संबंधित ट्रैक कार्य तथा छिटपुट ट्रैक का (सुरक्षा संबंधी कार्यों के अलावा) कार्य। अनुमानित निविदा मूल्य रु.1,17,28,254.00 पूर्व धरोहर राशि रु.2,08,700.00, कार्य पूरा करने की अवधिः 12 महिने, रखरखाव अवधिः45 (दिन)

क्रम सं.12, ई-टेंडर नं.150_ सीआर_एससी_25_ओटी, कार्य विवरणः एससी-केजेडजे सेक्शनः एडीइएन/ एन /केजेडजे सब-डिवीजन के तहत एसएसइ/पी.वे/ आलेर सेक्शन में डब्ल्यूपी से जीएनपी स्टेशनों के बीच अप एन्ड डाउन लाइन्स पर किमी 252.60 से 300 तक प्रस्तावित सुरक्षा संबंधित ट्रैक कार्य तथा छिटपुट ट्रैक का (सुरक्षा संबंधी कार्यों के अलावा) कार्य। अनुमानित निविदा मूल्य रु.1,04,24,378.00 पूर्व धरोहर राशि रु.2,02,200.00, कार्य पूरा करने की अवधिः 12 महिने, रखरखाव अवधिः45 (दिन)

क्रम सं.13, ई-टेंडर नं.151_ सीआर_एससी_25_ओटी, कार्य विवरणः एससी-केजेडजे सेक्शनः एडीइएन/ एन /केजेडजे सब-डिवीजन के तहत एसएसइ/पी.वे/ सीआर/केजेडजे सेक्शन में जीएनपी से केजेडजे स्टेशनों के बीच अप एन्ड डाउन लाइन्स पर किमी 300 से 324 तक प्रस्तावित सुरक्षा संबंधित ट्रैक कार्य तथा छिटपुट ट्रैक का (सुरक्षा संबंधी कार्यों के अलावा) कार्य। अनुमानित निविदा मूल्य रु.1,40,20,434.00 पूर्व धरोहर राशि रु.2,20,100.00, कार्य पूरा करने की अवधिः 12 महिने, रखरखाव अवधिः45 (दिन)

क्रम सं.14, ई-टेंडर नं.152_ सीआर_एससी_25_ओटी, कार्य विवरणः एससी-केजेडजे सेक्शनः एडीइएन/ इ /एससी सब-डिवीजन के तहत एसएसइ/पी.वे/ एसएनएफ सेक्शन में एसएनएफ से एमएलवाय स्टेशनों के बीच अप एन्ड डाउन लाइन्स पर किमी 1%4.65 से 190 तथा डबल लाइन पर किमी 0.00 से 11 तक प्रस्तावित सुरक्षा संबंधित ट्रैक कार्य तथा छिटपुट ट्रैक का (सुरक्षा संबंधी कार्यों के अलावा) कार्य। अनुमानित निविदा मूल्य रु.1,65,05,625.00 पूर्व धरोहर राशि रु.2,32,600.00, कार्य पूरा करने की अवधिः 12 महिने, रखरखाव अवधिः45 (दिन)

क्रम सं.15, ई-टेंडर नं.153_ एस_एससी_25_ओटी, कार्य विवरणः डीकेजे-एमयुजीआर सेक्शनः एडीइएन/डीकेजे सब-डिवीजन के तहत एसएसइ/पी.वे/ केआरए सेक्शन में डीकेजे से बीडीसीआर स्टेशनों के बीच सिंगल लाइन पर किमी 2.000 से 48.000 तक प्रस्तावित सुरक्षा संबंधित ट्रैक कार्य तथा छिटपुट ट्रैक का (सुरक्षा संबंधी कार्यों के अलावा) कार्य। अनुमानित निविदा मूल्य रु.78,33,399.00 पूर्व धरोहर राशि रु.1,56,6700.00, कार्य पूरा करने की अवधिः 12 महिने, रखरखाव अवधिः45 (दिन)

क्रम सं.16, ई-टेंडर नं.154_ एस_एससी_25_ओटी, कार्य विवरणः डीकेजे-एमयुजीआर एन्ड बीडीसीआर-एसटीपीएल सेक्शनः एडीइएन/डीकेजे सब-डिवीजन के तहत एसएसइ/पी.वे/ बीडीसीआर सेक्शन में बीटीपीडी-एमयुजीआर स्टेशनों के बीच सिंगल लाइन पर किमी 48.000 से 104.400 पर तथा बीडीसीआर - जेवीआरबी स्टेशनों के बीच सिंगल लाइन पर किमी 2.000 से 54.000 तक प्रस्तावित सुरक्षा संबंधित ट्रैक कार्य तथा छिटपुट ट्रैक का (सुरक्षा संबंधी कार्यों के अलावा) कार्य। अनुमानित निविदा मूल्य रु.1,76,25,966.00 पूर्व धरोहर राशि रु.2,38,200.00, कार्य पूरा करने की अवधिः 12 महिने, रखरखाव अवधिः45 (दिन)

क्रम सं.17, ई-टेंडर नं.155_ एस_एससी_25_ओटी, कार्य विवरणः केजेडजे-केआय सेक्शनः एडीइएन/केजेडजे सब-डिवीजन के तहत एसएसइ/पी.वे/ डब्ल्यूएल सेक्शन में डब्ल्यूएल-एनकेडी स्टेशनों के बीच अप एन्ड डाउन तथा युडी लाइनों पर किमी 368.800 से 407.180 तक प्रस्तावित सुरक्षा संबंधित ट्रैक कार्य तथा छिटपुट ट्रैक का (सुरक्षा संबंधी कार्यों के अलावा) कार्य। अनुमानित निविदा मूल्य रु.2,35,47,676.00 पूर्व धरोहर राशि रु.2,67,800.00, कार्य पूरा करने की अवधिः 12 महिने, रखरखाव अवधिः45 (दिन)

क्रम सं.18, ई-टेंडर नं.156_ एस_एससी_25_ओटी, कार्य विवरणः केजेडजे-केआय सेक्शनः एडीइएन/एस/केजेडजे सब-डिवीजन के तहत एसएसइ/पी.वे/ एमएबीडी सेक्शन में एनकेडी-जीएलए स्टेशनों के बीच अप एन्ड डाउन तथा युडी लाइनों पर किमी 407.180 से 458.000 तक प्रस्तावित सुरक्षा संबंधित ट्रैक कार्य तथा छिटपुट ट्रैक का (सुरक्षा संबंधी कार्यों के अलावा) कार्य। अनुमानित निविदा मूल्य रु.1,07,70,041.00 पूर्व धरोहर राशि रु.2,03,900.00, कार्य पूरा करने की अवधिः 12 महिने, रखरखाव अवधिः45 (दिन)

क्रम सं.19, ई-टेंडर नं.15%_ एस_एससी_25_ओटी, कार्य विवरणः केजेडजे-केआय सेक्शनः एडीइएन/डीकेजे सब-डिवीजन के तहत एसएसइ/पी.वे/डीकेजे सेक्शन में जीएलए -पीएनडीपी स्टेशनों के बीच अप एन्ड डाउन तथा युडी लाइनों पर किमी 458.000 से 488.000 तक प्रस्तावित सुरक्षा संबंधित ट्रैक कार्य तथा छिटपुट ट्रैक का (सुरक्षा संबंधी कार्यों के अलावा) कार्य। अनुमानित निविदा मूल्य रु.78,33,789.00 पूर्व धरोहर राशि रु.1,56,700.00, कार्य पूरा करने की अवधिः 12 महिने, रखरखाव अवधिः45 (दिन)

क्रम सं.20, ई-टेंडर नं.158_ एस_एससी_25_ओटी, कार्य विवरणः केजेडजे-केआय सेक्शनः एडीइएन/एमडीआर सब-डिवीजन के तहत एसएसइ/पी.वे/एमडीआर सेक्शन में केएमटी -टीएनजीएम स्टेशनों के बीच अप एन्ड डाउन तथा युडी लाइनों पर किमी 488.000 से 533.200 तक प्रस्तावित सुरक्षा संबंधित ट्रैक कार्य तथा छिटपुट ट्रैक का (सुरक्षा संबंधी कार्यों के अलावा) कार्य। अनुमानित निविदा मूल्य रु.97,09,655.00 पूर्व धरोहर राशि रु.1,94,200.00, कार्य पूरा करने की अवधिः 12 महिने, रखरखाव अवधिः45 (दिन)

क्रम सं.21, ई-टेंडर नं.159_ एस_एससी_25_ओटी, कार्य विवरणः केजेडजे-केआय सेक्शनः एडीइएन/एमडीआर सब-डिवीजन के तहत एसएसइ/पी.वे/केआय सेक्शन में एमडीआर -केआय स्टेशनों के बीच अप एन्ड डाउन तथा युडी लाइनों पर किमी 533.200 से 568.000 तक प्रस्तावित सुरक्षा संबंधित ट्रैक कार्य तथा छिटपुट ट्रैक का (सुरक्षा संबंधी कार्यों के अलावा) कार्य। अनुमानित निविदा मूल्य रु.1,38,99,846.00 पूर्व धरोहर राशि रु.2,19,500.00, कार्य पूरा करने की अवधिः 12 महिने, रखरखाव अवधिः45 (दिन)

क्रम सं.22, ई-टेंडर नं.160_ एस_एससी_25_ओटी, कार्य विवरणः एमटीएमआय-जेएनपीडी सेक्शनः एडीइएन/एमडीआर सब-डिवीजन के तहत एसएसइ/पी.वे/एमटीएमपी सेक्शन में एमटीएमआय-जेएनपीडी स्टेशनों के बीच सिंगल लाइन पर किमी 2.86% से %%.400 तक प्रस्तावित सुरक्षा संबंधित ट्रैक कार्य तथा छिटपुट ट्रैक का (सुरक्षा संबंधी कार्यों के अलावा) कार्य। अनुमानित निविदा मूल्य रु.1,24,69,704.00 पूर्व धरोहर राशि रु.2,12,400.00, कार्य पूरा करने की अवधिः 12 महिने, रखरखाव अवधिः45 (दिन)

निविदाकार, केवल ई-टेंडरिंग के माध्यम से ही भाग ले सकते हैं एवं किसी भी मैन्युएल आफर्स पर कतई विचार नहीं किया जायेग।

निविदा शर्ते/अन्य विवरण जो आईआरईपीएस वेबसाइटः www.ireps.gov.in पर निविदा दस्तावेजों में उपलब्ध हैं, जिसे डाउनलोड किया जा सकता है, जिसमें भाग लिया जा सकता है एवं यदि कोई संशोधन हो तो उसे देख सकते हैं।

सभी भावी निविदाकारों से अनुरोध है कि, पूर्व धरोहर राशि-पूधरा को केवल आनलाइन पेमेंट्स/बीजी द्वारा ही जमा करें।

निविदा सूचना को एसआर.डीइएन/को-आर्डिनेशन का कार्यालय, सिकंदराबाद डिवीजन, दक्षिण मध्य रेलवे, सिकंदराबाद पर स्थित नोटिस बोर्ड पर भी दर्शाया गया है, जिसे सभी कार्यालयीन दिनों में देखा जा सकता है।

रेल प्रशासन के पास कोई भी कारण न देते हुए निविदा को निरस्त करने का पूरा अधिकार सुरक्षित है।

सभी भावी निविदाकारों को सलाह दी जाती है कि, जीएसटीआयएन पहचान संख्या प्राप्त करें तथा इसे अपने आफर सहित प्रस्तुत करें।

एसआर.डीइएन/को-ऑर्ड./सिकंदराबाद

A1754

निविदा शर्तें/अधिक जानकारी तथा निविदा दस्तावेजों की डाउनलोडिंग हेतु कृपया वेबसाइट्स https://www.ireps.gov.in या www.scr.indianrailways.gov.in देखें।

पुलिस व्यवस्था की प्रतिष्ठा धूमिल होने पर कड़ी कार्रवाई की जाएगी : वीसी सज्जनार

वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों और थाना प्रभारियों के साथ समीक्षा बैठक

हैदराबाद, 5 नवंबर (स्वतंत्र वार्ता)। हैदराबाद पुलिस आयुक्त वीसी सज्जनार, आईपीएस ने कहा कि कर्तव्य पालन में बुनियादी पुलिसिंग को नहीं भूलना चाहिए और अगर कोर पुलिसिंग प्रभावी ढंग से की जाए तो अपराधों को रोका जा सकता है। उन्होंने चेतावनी दी कि पुलिस व्यवस्था की प्रतिष्ठा धूमिल करने वाले किसी भी व्यक्ति के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी और कर्तव्य पालन में लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। पुलिस आयुक्त सज्जनार ने बुधवार को हैदराबाद के बंजारा हिल्स स्थित आईसीसीसी सभागार में वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों और थाना प्रभारियों के साथ समीक्षा बैठक की। उन्होंने पावर पॉइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से अधिकारियों को कानून-व्यवस्था बनाए रखने, अपराध नियंत्रण-जांच, सामुदायिक सहभागिता-प्रौद्योगिकी अपनाने, मानव संसाधन प्रबंधन आदि के महत्व को समझाया और उन्हें दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने सुझाव दिया कि कानून-व्यवस्था बनाए रखने के साथ-साथ लोगों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के उद्देश्य से बेहतर पुलिसिंग की जानी चाहिए। उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि प्रत्येक पुलिस अधिकारी अपनी ज़िम्मेदारी का शत-प्रतिशत निष्ठा और अनुशासन के साथ निर्वहन करे। उन्होंने कहा कि कर्मचारियों को केवल एक ही काम तक सीमित नहीं रखा जाना चाहिए, बल्कि यह सुनिश्चित करने के लिए कदम उठाए जाने चाहिए कि वे सभी विभागों में पारंगत हों। उन्होंने समझाया कि सभी को अपने पेशे और काम से प्यार करना चाहिए और अपने कर्तव्यों का निष्ठापूर्वक पालन करना चाहिए। उन्होंने कहा कि थाना प्रभारी अपने अधिकार क्षेत्र में होने वाले मामलों की पूरी ज़िम्मेदारी लें। उन्होंने कहा कि पिछले कुछ मामलों में लापरवाही सामने आई है और उन मामलों की फिर से जाँच की जा रही है। "पुलिस का काम चुनौतियों से भरा है, हमें इन सभी चुनौतियों का सामना करते हुए अपने कर्तव्यों का प्रभावी ढंग से पालन करते हुए आगे बढ़ना होगा। सभी मामलों को सामान्य न समझें। हर छोटे अपराध की गहन जाँच होनी चाहिए। अगर छोटे अपराधों पर लगाम नहीं लगाई गई, तो भविष्य में बड़े अपराध होने का खतरा बना रहता है। हर मामले का तकनीकी रूप से सभी कोणों से विश्लेषण किया जाना चाहिए।"

सज्जनार ने कहा। उन्होंने कहा कि हम जाँच में तेज़ी लाने के लिए अत्याधुनिक तकनीक एआई के इस्तेमाल पर विचार कर रहे हैं। उन्होंने सभी से तेलंगाना और हैदराबाद पुलिस को देश में और ऊँचे स्तर पर ले जाने के लिए कड़ी मेहनत करने का आह्वान किया। बैठक में अतिरिक्त पुलिस आयुक्त (अपराध) एम. श्रीनिवास, संयुक्त पुलिस आयुक्त (कानून व्यवस्था) तफ़सीर इकबाल, संयुक्त पुलिस आयुक्त (प्रशासन) जे. परिमाला हाना नूतन, डीसीपी (डीडी) एन. श्वेता, डीसीपी (विशेष शाखा) के. अपूर्वा राव सहित सभी ज़ोन के डीसीपी शामिल हुए।

पीएम मोदी से मिली वर्ल्ड चैंपियन भारतीय महिला टीम

जर्सी गिफ्ट की, प्रतिका रावल व्हीलचेयर पर नजर आईं; 2 नवंबर को विमेंस वर्ल्ड कप जीता था

नई दिल्ली, 5 नवंबर (एजेंसियां)। पहली बार विमेंस वनडे वर्ल्ड कप जीतने वाली भारतीय महिला टीम ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात की। टीम की खिलाड़ियों ने पीएम मोदी को स्पेशल जर्सी गिफ्ट की, जिसमें सभी खिलाड़ियों ने साइन किए थे। भारतीय टीम के साथ बीसीसीआई प्रेसिडेंट मिथुन मन्हास और कोच अमोल मजूमदार भी मौजूद रहे। बांग्लादेश के खिलाफ चोटिल होने वाली प्रतिका रावल व्हीलचेयर पर दिखीं। भारतीय टीम ने 2 नवंबर को डीवाय पाटील स्टेडियम में साउथ अफ्रीका को 52 रन से हराकर विमेंस वर्ल्ड कप जीता था।

सीएम ने केसीआर और केटीआर की गिरफ्तारी की अनुमति न देने पर पीएम पर सवाल उठाए

हैदराबाद, 5 नवंबर (स्वतंत्र वार्ता)। मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी ने आज जुबली हिल्स विधानसभा क्षेत्र में चुनाव प्रचार के दौरान शेखपेट संभाग के पैरामाउंट कॉलोनी में एक नुक्कड़ सभा को संबोधित किया। इस दौरान मुख्यमंत्री ए रेवंत रेड्डी ने कालेश्वरम घोटाले में पूर्व मुख्यमंत्री के चंद्रशेखर राव और फॉर्मूला ई रेस घोटाले में बीआरएस के कार्यकारी अध्यक्ष केटी रामाराव को गिरफ्तार करने की अनुमति न देने पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर सवाल उठाए। मुख्यमंत्री ने आरोप लगाया कि मोदी सरकार आयकर, सीबीआई और ईडी के छापे मारकर राजनीतिक प्रतिद्वंद्वियों को परेशान कर रही है और वही केंद्र सरकार घोटालों में शामिल बीआरएस नेताओं के खिलाफ कार्रवाई करने की अनुमति नहीं दे रही है।

केंद्रीय मंत्री जी किशन रेड्डी पर हमला जारी रखते हुए, मुख्यमंत्री ने कहा कि जब राज्य सरकार ने कालेश्वरम परियोजना में एक लाख करोड़ रुपये की लूट करने वाले केसीआर के खिलाफ सीबीआई जांच की मांग की, तो प्रधानमंत्री ने ध्यान नहीं दिया। राज्यपाल भी पिछले दो महीनों से फॉर्मूला ई रेस मामले में केटीआर की गिरफ्तारी की अनुमति नहीं दे रहे हैं।उपचुनावों में यह साबित हो गया कि केसीआर और मोदी एक तरफ हैं और राहुल गांधी और वह खुद दूसरी तरफ हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि केसीआर ने हर बार केंद्र में मोदी का समर्थन किया है। अब, भाजपा जुबली हिल्स में बीआरएस के नाम पर वोट मांग रही है। मुख्यमंत्री ने अजहरुद्दीन को राज्य मंत्रिमंडल में शामिल करने का विरोध करने के लिए किशन रेड्डी की भी आलोचना की। किशन रेड्डी अजहरुद्दीन का विरोध क्यों कर रहे थे? क्या यह केंद्रीय मंत्री की जागीर है? एक अल्पसंख्यक नेता को मंत्री पद देने में किशन रेड्डी को क्या दिक्कत है? यह दोहराते हुए कि कांग्रेस मुसलमानों के कल्याण के लिए प्रतिबद्ध है और उनकी हालिया टिप्पणियों को तोड़-मरोड़ कर पेश किया गया है, मुख्यमंत्री ने कहा कि बीआरएस मुसलमानों को धोखा दे रही है। केसीआर की पार्टी जल्द ही भाजपा में विलय कर देगी। "मैं राजनीति में आने के बाद से ही एक धर्मनिरपेक्ष नेता रहा हूँ। कांग्रेस सरकारों ने अल्पसंख्यकों को कई अवसर प्रदान किए। केवल कांग्रेस ने ही अल्पसंख्यकों को बड़े पद दिए। कांग्रेस का मतलब मुसलमान और मुसलमान का मतलब कांग्रेस है," मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी ने कहा कि उन्होंने अल्पसंख्यकों के समर्थन से कोडंगल विधानसभा सीट तीन बार जीती है। मुख्यमंत्री ने यह भी कहा कि राज्य में 20 महीने के कांग्रेस शासन के दौरान अल्पसंख्यकों को किसी भी समस्या का सामना नहीं करना पड़ा।

राज्यपाल अब्दुल नज़ीर को केएसएलयू द्वारा मानद डॉक्टरेट की उपाधि प्रदान की गई

विजयवाड़ा, 5 नवंबर (स्वतंत्र वार्ता)। कर्नाटक राज्य विधि विश्वविद्यालय (केएसएलयू) ने बुधवार को कर्नाटक के धारवाड़ स्थित कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय के किसान ज्ञान केंद्र में आयोजित अपने सातवें दीक्षांत समारोह में आंध्र प्रदेश के राज्यपाल एस. अब्दुल नज़ीर को डॉक्टर ऑफ लॉ की मानद उपाधि प्रदान की। कर्नाटक के राज्यपाल और केएसएलयू के कुलाधिपति थावर चंद गहलोत ने राज्यपाल अब्दुल नज़ीर को मानद उपाधि प्रदान की। विधि एवं न्याय मंत्री और विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति डॉ. एच.के. पाटिल मुख्य अतिथि थे, जबकि केएसएलयू के कुलपति प्रो. डॉ. सी. बसवराजू ने दीक्षांत समारोह का संचालन किया। भारत

गांधीनगर स्त्ति मलयाल स्वामी मठ में श्री अयोध्या राम चेरीटेबल ट्रस्ट द्वारा आयोजित कार्यक्रम में व्यास आश्रम पीठाधीपती स्वामी परिपूर्णानंद गिरीजी महाराज, भाग्यलक्ष्मी मंदिर ट्रस्टी सुश्री शशिकला, जसमत पटेल, रिद्धीश जागीरदार आदि को जीवदया धर्मरक्षा एवार्ड से सम्मानित करते हुए ट्रस्ट चेरमेन स्वामी कमलेश महाराज एवं अन्य।

दक्षिण मध्य रेलवे

हमें @SCRailwayIndia पर फॉलो करें. द.म. रेलवे की निविदा सूचनाओं के विवरणों को हमारी वेबसाइट : www.scr.indianrailways.gov.in पर देखा जा सकता है

संख्याः सी/ई-नीलामियों की सूची/एससी/2025-26, दि.3-11-2025

कृते भारत के राष्ट्रपति, भारतीय गणराज्य की ओर से व के लिए, वरिष्ठ विभागीय वाणिज्यिक प्रबंधक, सिकंदराबाद डिवीजन, दक्षिण मध्य रेलवे-दमरे द्वारा वाणिज्यिक आय तथा एनएफआर संविदाओं हेतु ई-नीलामी आमंत्रित हैं। तदनुसार, एससी डिवीजन ने निम्न श्रेणियों हेतु ई-नीलामी संसाधित की है, जिसे वेबसाइटः https://www.ireps.gov.in/website पर अधिसूचित किया गया है।

क्रम संख्याः 01 श्रेणीः एडवर्टाइजिंग कैटलॉग संख्याः एससी-एडी-इंटिरियर
नीलामी शुरु तिथि व समयः 06-11-2025 के 14.00 बजे तत्संबंधित स्टेशन(स्टेशन्स)/ट्रेन(ट्रेन्स) - 12723/24, 12791/92, 20707/08, 20701/02
नीलामी विवरणः 1. तेलंगाना एक्सप्रेस 12723/24 के पैसेंजर एरिया के भीतर स्टीकर्स के माध्यम से विज्ञापन हेतु ठेका या संविदा। 2. रेल सं. 12723/24 (तेलंगाना एक्सप्रेस एचवायबी-एनडीएलएस), 12791-92 (दानापुर एक्सप्रेस एससी-डीएनआर), 20629-30 (एससी-टीवीसी साबरी एक्सप्रेस) के यात्रियों हेतु इन्फोटेनमेन्ट बुकलेट या पुस्तिका के वितरण के लिए ठेका। 3. वन्दे भारत एक्सप्रेस ट्रेन 20707-08 एससी-वीएसकेपी के सभी कोचेस में फैक्ट्री-फिट्टेड 32 एलइडी टीवीज के माध्यम से वाणिज्यिक विज्ञापन अधिकार। 4. वन्दे भारत एक्सप्रेस ट्रेन 20701-02 के सभी कोचेस में फैक्ट्री-फिट्टेड 32 एलइडी टीवीज के माध्यम से वाणिज्यिक विज्ञापन अधिकार।

क्रम संख्याः 02 श्रेणीः एनएफआर कैटलॉग संख्याः एससी-पार्सलस्कैन-1 नीलामी शुरु तिथि व समयः 07-11-2025 के 14.00 बजे तत्संबंधित स्टेशन(स्टेशन्स)/ट्रेन(ट्रेन्स) - सीएचजेड, एचवायबी, एससी
नीलामी विवरणः चेर्लापल्ली, हैदराबाद, सिकंदराबाद पीएफ 10 एण्ड पीएफ 01 पर पार्सल कार्यालयों के पास पार्सल स्कैनर की स्थापना, संचालन व रखरखाव हेतु ठेका।

क्रम संख्याः 03 श्रेणीः पे एण्ड यूज कैटलॉग संख्याः पीएनयु-एससीडी-टीओआय-25 नीलामी शुरु तिथि व समयः 07-11-2025 के 14.00 बजे तत्संबंधित स्टेशन(स्टेशन्स)/ट्रेन(ट्रेन्स) - एचवायबी, केजेडजे, एचटीसीवाय
नीलामी विवरणः हैदराबाद, काजीपेट व हाय-टेक सिटी रेलवे स्टेशनों पर पे एण्ड यूज टायलेट्स या शौचालयों हेतु ठेका।

क्रम संख्याः 04 श्रेणीः पार्किंग कैटलॉग संख्याः एससी-पार्कमल्टिएलओसी नीलामी शुरु तिथि व समयः 08-11-2025 के 12.00 बजे तत्संबंधित स्टेशन(स्टेशन्स)/ट्रेन(ट्रेन्स) - पीआरएलआय, सीटी, जीएनपी, एलकेपीएल, पीडीपीएल
नीलामी विवरणः परली, चित्तापूर, घानापूर, पेध्दापल्ली व लकडी का पूल रेलवे स्टेशनों पर पार्किंग हेतु ठेका।

क्रम संख्याः 05 श्रेणीः पे एण्ड यूज कैटलॉग संख्याः पीएनयु-एससी-टीओआय-25-4 नीलामी शुरु तिथि व समयः 08-11-2025 के 14.00 बजे तत्संबंधित स्टेशन(स्टेशन्स)/ट्रेन(ट्रेन्स) - बीडीसीआर, बीएमटी
नीलामी विवरणः भद्राचलम रोड व बेगमपेट स्टेशनों पर पे एण्ड यूज टायलेट्स हेतु ठेका।

क्रम संख्याः 06 श्रेणीः एडवर्टाइजिंग कैटलॉग संख्याः एक्टीरीयर-आरडीएन-01 नीलामी शुरु तिथि व समयः 10-11-2025 के 12.00 बजे तत्संबंधित स्टेशन(स्टेशन्स)/ट्रेन(ट्रेन्स) - डब्ल्यूएल, केजेडजे, 12791/92, 12721, 12723/24, 12757/58
नीलामी विवरणः 1. वरंगल रेलवे स्टेशन के भीतर स्टेटिक बोड्र्स के माध्यम से वाणिज्यक विज्ञापन के प्रदर्शन या डिस्प्ले हेतु ठेका। 2. काजीपेट रेलवे स्टेशन के भीतर डिजीटल स्क्रीन्स के माध्यम से विज्ञापन हेतु ठेका। 3. ट्रेन नं. 12791/92, 12721, 12723/24 व 12757/58 रेलों के बाहरी भाग में विनाइल रैपिंग विज्ञापन हेतु ठेका।

क्रम संख्याः 07 श्रेणीः एमपीएस कैटलॉग संख्याः एससी-एमपीएस-केजेडजे डब्ल्यूएल नीलामी शुरु तिथि व समयः 10-11-2025 के 14.00 बजे तत्संबंधित स्टेशन(स्टेशन्स)/ट्रेन(ट्रेन्स) - डब्ल्यूएल, केजेडजे
नीलामी विवरणः काजीपेट तथा वरंगल रेलवे स्टेशनों पर बहु उध्देशीय स्टाल्स हेतु ठेका।

क्रम संख्याः 08 श्रेणीः मिक्सड कैटलॉग संख्याः एसीडब्ल्यूएच-पीआरकेजी-आरडीएम-2 नीलामी शुरु तिथि व समयः 11-11-2025 के 12.00 बजे तत्संबंधित स्टेशन(स्टेशन्स)/ट्रेन(ट्रेन्स) - आरडीएम
नीलामी विवरणः रामगुंडम पर प्रि-पेड एसीडब्ल्यूएच के संचालन व रखरखाव तथा टू/फोर व्हीलर पार्किंग हेतु ठेका।

क्रम संख्याः 09 श्रेणीः एडवर्टाइजिंग कैटलॉग संख्याः एसएबी-विनाइल-रैप
नीलामी शुरु तिथि व समयः 11-11-2025 के 12.30 बजे तत्संबंधित स्टेशन(स्टेशन्स)/ट्रेन(ट्रेन्स) - 26629/30
नीलामी विवरणः ट्रेन नं.26629/30 के लिए रेल के बाहरी तरफ (फुल फेस) विनाइल रैपिंग हेतु ठेका।

क्रम संख्याः 10 श्रेणीः कैटरिंग कैटलॉग संख्याः एससी-सीएटीजी-16-2025
नीलामी शुरु तिथि व समयः 11-11-2025 के 14.00 बजे तत्संबंधित स्टेशन(स्टेशन्स)/ट्रेन(ट्रेन्स) - सीएचजेड, आलेर, पीडीपीएल, बीडीसीआर, एलपीआय, जेएचएनपी, एचटीसीवाय
नीलामी विवरणः चर्लापल्ली,आलेर, पेध्दापल्ली, भद्राचलम रोड, लिंगमपल्ली, खानापूर दक्कन व हायटेक सिटी रेलवे स्टेशनों पर कैटरिंग स्टाल्स।

क्रम संख्याः 11 श्रेणीः पार्किंग कैटलॉग संख्याः पार्क-मल्टि-एससीडी नीलामी शुरु तिथि व समयः 12-11-2025 के 12.00 बजे तत्संबंधित स्टेशन(स्टेशन्स)/ट्रेन(ट्रेन्स) - एचएफजेड, एसएनएफ, बीजी, जीटी, एलपीआय, बीटीएनआर, एचटीसीवाय
नीलामी विवरणः 1. भोंगिर, हाफिजपेट, सनतनगर व घटकेसर स्टेशनों पर पार्किंग का ठेका। 2. लिंगमपल्ली, भरतनगर व हायटेक सिटी रेलवे स्टेशनों पर रेडियो टैक्सी का ठेका।

क्रम संख्याः 12 श्रेणीः एमपीएस कैटलॉग संख्याः एमपीएस-एससीडी एचवायडी सीएचजेड नीलामी शुरु तिथि व समयः 12-11-2025 के 14.00 बजे तत्संबंधित स्टेशन(स्टेशन्स)/ट्रेन(ट्रेन्स) - एचवायबी, सीएचजेड
नीलामी विवरणः हैदराबाद, चर्लापल्ली रेलवे स्टेशनों पर बहुउध्देशीय या मल्टिपरपज स्टाल्स।

क्रम संख्याः 13 श्रेणीः पार्सल्स कैटलॉग संख्याः एससीपार्सल्स 1925ए
नीलामी शुरु तिथि व समयः 13-11-2025 के 12.00 बजे तत्संबंधित स्टेशन(स्टेशन्स)/ट्रेन(ट्रेन्स) - 17039, 07075, 20629, 07030, 12220
नीलामी विवरणः 17039, 07075, 20629, 07030, 12220 ट्रेनों के एसएलआर कोच में पार्सल स्पेस।

क्रम संख्याः 14 श्रेणीः एडवर्टाइजिंग कैटलॉग संख्याः एडीवीटीएस-बी एमटी-केजेडजे
नीलामी शुरु तिथि व समयः 14-11-2025 के 13.00 बजे तत्संबंधित स्टेशन(स्टेशन्स)/ट्रेन(ट्रेन्स) - सभी एससी डिवीजन, बीएमटी, एमसीआय, केजेडजे, 12721/22, 12791/92 में
नीलामी विवरणः 1. बीएमटी रेलवे स्टेशन के भीतर डिजीटल बोड्र्स के माध्यम से वाणिज्यिक विज्ञापनों हेतु ठेका। 2. मंचेरियाल रेलवे स्टेशन हेतु नान-डिजीटल ठेका। 3. सिकंदराबाद डिवीजन के सभी स्टेशनों पर विवरित शर्तो नुसार तत्संबंधित क्षेत्र हेतु लिफ्ट्स के भीतर विनाइल रैपिंग के माध्यम से स्टैटिक एडवर्टाइजमेंट हेतु ठेका। 4. केजेडजे रेलवे स्टेशन के सर्कूलेटिंग एरिया में डिजीटल बोड्र्स के माध्यम से वाणिज्यिक विज्ञापनों हेतु ठेका। 5. मंचेरियाल रेलवे स्टेशन के सर्कूलेटिंग एरिया के भीतर वाणिज्यिक स्थिर विज्ञापनों या कमर्शियल स्टेटिक एडवर्टाइजमेंट्स के प्रदर्शन (डिस्प्ले) हेतु ठेका। 6. ट्रेन नं.12721/22 एचवायबी-एनजेडएम-एचवायबी दक्षिण एस/एफ एक्सप्रेस के ट्रेन के भीतर विज्ञापन। 7. ट्रेन नं.12791/92 एससी-डीएनआर-एससी दानापूर एक्सप्रेस के ट्रेन के भीतर विज्ञापन।

क्रम संख्याः 15 श्रेणीः पे एण्ड यूज कैटलॉग संख्याः पीएनयु-एसीडब्ल्यूएच-क्लोक
नीलामी शुरु तिथि व समयः 14-11-2025 के 14.00 बजे तत्संबंधित स्टेशन(स्टेशन्स)/ट्रेन(ट्रेन्स) - एससी, एचवायबी
नीलामी विवरणः सिकंदराबाद पर प्रि-पेड एसी वेटिंग हाल का ठेका एवं हैदराबाद रेलवे स्टेशनों पर क्लोक रूम हेतु ठेका।

क्रम संख्याः 16 श्रेणीः पार्सल्स कैटलॉग संख्याः एससीपार्सल्स- 2025 नीलामी शुरु तिथि व समयः 15-11-2025 के 12.00 बजे तत्संबंधित स्टेशन(स्टेशन्स)/ट्रेन(ट्रेन्स) - 12774/73, 22850/49, 22718/17, 17007/08
नीलामी विवरणः 12774/73, 22850/49, 22718/17, 17007/08 ट्रेनों के पार्सल वैन में पार्सल स्पेस।

इच्छुक पार्टीज एवं ठेकेदार इस बात पर ध्यान दें कि, ई-नीलामी सूचना के विस्तृत विवरण हेतु उपरोक्त वेबसाइट पर जाएं।

पूछताछ/स्पष्टीकरणों हेतु कृपया अधोहस्ताक्षरी कार्यालय पर संपर्क करें।

वरिष्ठ विभागीय वाणिज्यिक प्रबंधक, सिकंदराबाद

A1758

गुरु नानक देवजी का 556वाँ प्रकाश उत्सव मनाया गया

हैदराबाद, 5 नवंबर (स्वतंत्र वार्ता)। प्रथम सिख गुरु और सिख धर्म के संस्थापक श्री गुरु नानक देवजी का 556वाँ प्रकाश उत्सव (जयंती) बुधवार को शहर भर में बड़े उत्साह, भक्ति और सांप्रदायिक सद्भाव के साथ मनाया गया। विभिन्न धर्मों के हज़ारों श्रद्धालुओं ने प्रार्थना, 'गुरबानी कीर्तन' और गुरु का लंगर (निःशुल्क सामुदायिक रसोई) के साथ आयोजित इस भव्य समारोह में भाग लिया। मुख्य कार्यक्रम - विशाल दीवान (सामूहिक समागम) - गुरुद्वारा साहिब सिकंदराबाद की प्रबंधक समितियों और गुरुद्वारा श्री गुरु सिंह सभा, अशोक बाज़ार द्वारा संयुक्त रूप से नामपल्ली के प्रदर्शनी मैदान में आयोजित किया गया। समागम सुबह 11 बजे शुरू हुआ और शाम 4 बजे तक चला, जिसमें प्रसिद्ध 'रागी जत्थों और कथा वाचकों' द्वारा पवित्र भजनों का पाठ और आध्यात्मिक प्रवचन शामिल थे। पद्म श्री भाई हरजिंदर सिंहजी (श्रीनगर वाले), भाई बलजीत सिंह (यूएसए वाले), ज्ञानी साहब सिंहजी (मार्कंडा वाले) और भाई हरि सिंहजी, भाई जगदेव सिंहजी और भाई हरविंदर सिंह जैसे हजूरी रागी जत्थों सहित प्रमुख प्रचारकों ने शांति, समानता और भाईचारे पर गुरु नानक की शिक्षाओं पर प्रकाश डाला। समिति के अध्यक्ष सतविंदर सिंह बग्गा (जीएसजीएसएस) और बलदेव सिंह बग्गा (जीएसएस), उपाध्यक्ष जसपाल सिंह टूटेजा, और महासचिव जगमोहन सिंह और जोगिंदर सिंह मुजराल ने कहा कि इस कार्यक्रम का उद्देश्य गुरु नानक के एकता, सेवा और सद्भाव के सार्वभौमिक संदेश को फैलाना है।

अग्रणी महिला मंच द्वारा देव दीपावली के उपलक्ष्य पर नानकगुड़ा स्थित श्री हनुमान की के मंदिर में देव दीपावली मनाया गया। दीप प्रज्वलित किए गए और फटाके भी फोड़े गए। अवसर पर अध्यक्ष सुमन भुवानिया , शीतल बंसल , रितु गोयल , वंदना पचारिया, प्रीति गोयल , जॉली गुप्ता , एवं पवन भुवनिया आदि उपस्थित थे।

जंगली विठोबा मंदिर गौलीगुड़ा में सामूहिक सत्यनारायण पूजा में भाग लेते हुए मंदिर के अध्यक्ष वी किशन यादव, बीजेपी नेता गोविंद नारायण राठी, वेंकटेश यादव, साईनाथ महाराज, रवि महाराज और अन्य।

पूर्व तट रेलवे

सूचना सं. eT-Central-WAT-40-2025
दिनांक : 31.10.2025

कार्य का नाम : वाल्टियर मण्डल के KK-I लाइन का सहायक मण्डल अभियन्ता/ कोरापुट के अधिकार क्षेत्र के अधीन थ्रू बालास्ट रिकूपमेंट टीबीआर - 42.381 ट्रैक किमी (बीसीएम कार्य) का निष्पादन।

कार्य की अनुमानित लागत : ₹ 1,17,31,362.32, EMD : ₹ 2,08,700.00, कार्य पूरा होने की अवधि: 12 (बारह) महीने।

निविदा बंद होने की तिथि व समय : दिनांक 25.11.2025 को 1500 बजे।

ऐसी ई-निविदा के तहत डाक/कूरियर/फैक्स या व्यक्तिगत रूप से भेजा गया कोई भी मैनुअल प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया जायेगा, भले ही यह फर्म (Firm) के लेटर हेड एवं नियत समय पर प्राप्त किया गया हो। ऐसे सभी मैनुअल प्रस्ताव को अवैध माना जायेगा तथा उसके बारे में किसी विचार के बिना तत्काल निरस्त कर दिया जायेगा।

उपरोक्त ई-निविदा के ई-निविदा दस्तावेज सहित संपूर्ण जानकारी वेबसाइट : www.ireps.gov.in पर उपलब्ध होंगे।

द्रष्टव्य : प्रत्याशित निविदाकारों को यह सलाह दी जाती है कि इस ई-निविदा के लिए जारी कोई भी परिवर्तन / शुद्धिपत्र की ओर ध्यान देने के लिए वे निविदा बंद होने की कम से कम 10 (दस) दिन पहले वेबसाइट का पुन:अवलोकन करें।

मण्डल रेलवे प्रबंधक (इंजीनियरिंग), वाल्टियर

PR-764/Q/25-26

आज केबीआर पार्क में इक्षापूर्ति गणेशजी की पूजा आरती में भाग लेते हुए वीए प्रसाद ,राजेंद्र कुमार अग्रवाल गोपाल बलदवा अनिता दुर्गा विजया रेड्डी दिया अग्रवाल विजया संतोष अग्रवाल संध्या रानी अग्रवाल प्रमोद सरायवाला विजय कुमार अग्रवाल शेष चर्या पीसी जैन प्रवीण कुमार अग्रवाल रोहित अग्रवाल नारायण काकानी. बृजमोहन सोनी. कृष्णा अग्रवाल डॉ गुप्ता सुभाष अग्रवाल प्रमोद सरायवाला राहुल सिंघल दीपक कुमार सरायवाला अशोक सरायवाला आदि।

स्वतंत्र वार्ता

Email :
svaarttha2006@gmail.com
svaarttha@rediffmail.com
svaarttha2006@yahoo.com
Epaper :
epaper.swatantravaartha.com
For Advertisement :
swadds1@gmail.com

साउथ अफ्रीका के खिलाफ भारतीय टेस्ट टीम का ऐलान

पंत-आकाश की वापसी, 14 नवंबर से 2 मैच की सीरीज

मुंबई, 5 नवंबर (एजेंसियां)। दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ आगामी दो मैचों की टेस्ट सीरीज के लिए भारतीय टीम का एलान हो गया है। ऋषभ पंत की टीम में वापसी हुई है, जबकि तेज गेंदबाज आकाश दीप भी चोट के बाद वापसी कर रहे हैं। पंत को उपकप्तान की भूमिका मिली है, जबकि शुभमन गिल टीम की अगुआई करेंगे। भारत और दक्षिण अफ्रीका के बीच टेस्ट सीरीज की शुरुआत 14 नवंबर से होगी।

करुण नायर को फिर मौका नहीं

टीम में ज्यादातर खिलाड़ी वही हैं, जो वेस्टइंडीज के खिलाफ सीरीज में टीम का हिस्सा रहे थे। करुण नायर की एक बार फिर अनदेखी हुई है। वह हाल ही में रणजी ट्रॉफी में शानदार फॉर्म में दिखे हैं। वहीं, टीम की ओपनिंग की जिम्मेदारी एक बार फिर यशस्वी और राहुल पर ही होगी। सुदर्शन नंबर तीन की भूमिका निभाएंगे। वहीं, नंबर तीन पर सुदर्शन और नंबर चार पर देवदत्त पडिक्कल या ध्रुव जुरेल में से किसी एक को मौका मिल सकता है।

14 नवंबर से खेला जाएगा पहला टेस्ट

अक्षर, कुलदीप, सुदंर और जडेजा के रूप में टीम में चार स्पिनर हैं, जबकि बुमराह, सिराज और आकाश के रूप में तीन पेसर हैं। नीतीश पेस बॉलिंग ऑलराउंडर के तौर पर टीम में हैं। भारत और दक्षिण अफ्रीका के बीच पहला टेस्ट मैच 14 नवंबर से कोलकाता के ईडन गार्डेन्स में खेला जाएगा, जबकि दूसरा टेस्ट 22 नवंबर से गुवाहाटी में खेला जाएगा। इसके बाद दोनों टीमें 30 नवंबर से छह दिसंबर तक तीन मैचों की वनडे सीरीज खेलेगी, फिर नौ दिसंबर से 19 दिसंबर तक दोनों टीमों के बीच पांच मैचों की टी20 सीरीज खेली जाएगी।

भारत की टेस्ट टीमः शुभमन गिल (कप्तान), ऋषभ पंत (विकेटकीपर, उपकप्तान), यशस्वी जयसवाल, केएल राहुल, साई सुदर्शन, देवदत्त पडिक्कल, ध्रुव जुरेल, रवींद्र जडेजा, वॉशिंगटन सुंदर, जसप्रीत बुमराह, अक्षर पटेल, नीतीश कुमार रेड्डी, मोहम्मद सिराज, कुलदीप यादव, आकाश दीप।

भारत-ए टीम भी घोषित

इसके अलावा चयन समिति ने दक्षिण अफ्रीका ए के खिलाफ तीन मैचों की वनडे सीरीज के लिए भी भारत-ए टीम घोषित की। टीम की कप्तानी तिलक वर्मा करेंगे, जबकि ऋतुराज गायकवाड़ उपकप्तान हैं। ये तीनों मुकाबले 13, 16 और 19 नवंबर को खेले जाएंगे।

इंडिया-ए की वनडे टीमः तिलक वर्मा (कप्तान), ऋतुराज गायकवाड़ (उपकप्तान), अभिषेक शर्मा, रियान पराग, ईशान किशन (विकेटकीपर), आयुष बदोनी, निशांत सिंधु, विपराज निगम, मानव सुथार, हर्षित राणा, अर्शदीप सिंह, प्रसिद्ध कृष्णा, खलील अहमद, प्रभसिमरन सिंह (विकेटकीपर)।

अर्शदीप सिंह के साथ क्यों हो रही नाइंसाफी?

बॉलिंग कोच ने बताया इस वजह से करना पड़ता है बार-बार प्लेइंग 11 से बाहर

खेल डेस्क, 5 नवंबर (एजेंसियां)। टी-20 इंटरनेशनल में भारत की ओर से सबसे ज्यादा विकेट. डेथ ओवरों में सबसे बेहतरीन बॉलिंग का रिकॉर्ड. हर मौके को भुनाने में भी माहिर. इन सभी के बावजूद अर्शदीप सिंह को बार-बार प्लेइंग 11 से बाहर का रास्ता दिखा दिया जाता है. ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ खेली जा रही टी-20 सीरीज के भी पहले दो मैचों में अर्शदीप को अंतिम ग्यारह में मौका नहीं दिया गया था.

हालांकि, तीसरे मुकाबले में जैसे ही अर्शदीप को चांस मिला वो अपनी गेंदबाजी से महफिल लूट ले गए. इस बीच, भारतीय टीम के बॉलिंग कोच मोर्नी मोर्कल ने बताया है कि क्यों लगातार अच्छे प्रदर्शन के बावजूद भी हर बार गिरती है अर्शदीप पर गाज.

ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ होने वाले चौथे टी-20 इंटरनेशनल मुकाबले से पहले मोर्नी मोर्कल प्रेस कॉन्फ्रेंस में आए और उन्होंने अर्शदीप के साथ हो रही नाइंसाफी पर अपनी बात रखी. उन्होंने कहा, "अर्शदीप एक अनुभवी गेंदबाज हैं. वह इस बात को अच्छे से जानते हैं कि हम बड़ी पिक्चर के लिए कॉम्बिनेशन ट्राई कर रहे हैं. अर्शदीप एक वर्ल्ड क्लास गेंदबाज हैं और उन्होंने पावरप्ले में हमारे लिए सबसे ज्यादा विकेट निकाले हैं. ऐसे में हम इस बात को अच्छे से समझते हैं कि उनकी क्या वैल्यू है. हालांकि, इस दौरे पर हमारे लिए बाकी कॉम्बिनेशन को भी देखना जरूरी है और वह इस बात को अच्छे से समझते हैं. अर्शदीप इस समय टी-20 क्रिकेट में टीम इंडिया के सबसे घातक गेंदबाजों में से एक हैं. ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ खेले गए तीसरे टी-20 मुकाबले में भी बाएं हाथ के तेज गेंदबाज ने अपनी बॉलिंग से जमकर कहर बरपाया था. अर्शदीप ने ट्रेविस हेड, जोश इंग्लिस और मार्कस स्टोइनिस का अहम विकेट लेते हुए मैच का रुख पूरी तरह से मोड़ दिया था. भारत के लिए खेले अब तक 66 मैचों में अर्शदीप 104 विकेट निकाल चुके हैं.

'चेस के मेसी' 12 वर्षीय ओरो फाउस्टिनो का बड़ा कारनामा, विदित गुजराती को ड्रॉ पर रोका

नई दिल्ली, 5 नवंबर (एजेंसियां)। फिडे विश्व कप के दूसरे दौर के पहले मुकाबले में भारतीय ग्रैंडमास्टर विदित गुजराती को 12 वर्षीय अर्जेंटीनी प्रतिभा ओरो फाउस्टिनो ने ड्रॉ पर रोक दिया। 'चेस के मेसी' नाम से मशहूर फाउस्टिनो ने एक बार फिर अपने असाधारण खेल से सबको चौंका दिया। पहले दौर में उन्होंने क्रोएशिया के आंटे ब्रकिक को हराकर सनसनी फैला दी थी।

फाउस्टिनो ने दी कड़ी टक्कर

खेले गए मुकाबले में फाउस्टिनो ने काले मोहरों से बर्लिन डिफेंस अपनाई। विदित ने मिडिल गेम में थोड़ी बढ़त पाने की कोशिश की, लेकिन अर्जेंटीना के खिलाड़ी ने सटीक चालों से स्थिति बराबर रखी। आखिर में विदित ने जोखिम से बचते हुए तीन बार पोजिशन दोहराई और 28 चालों में खेल ड्रॉ घोषित हुआ। अब बुधवार को खेले जाने वाले रिटर्न गेम में विदित काले मोहरों से खेलेंगे। अगर वह मुकाबला भी बराबरी पर छूटा, तो नतीजा तय करने के लिए टाई-ब्रेक (कम समय वाले खेल) खेले जाएंगे।

विदित के लिए अहम है ये टूर्नामेंट

यह टूर्नामेंट विदित के लिए बेहद अहम है, क्योंकि यही उनका 2026 कैंडिडेट्स टूर्नामेंट में जगह बनाने का आखिरी मौका है। बता दें कि, फिडे विश्व कप से शीर्ष तीन खिलाड़ी क्वालिफाई करेंगे। दूसरी ओर, अमेरिका के लेवोन अरोनियन ने अपनी शानदार फॉर्म जारी रखते हुए भारत के युवा ग्रैंडमास्टर अरॉन्याक घोष को सफेद मोहरों से हराया।

राहुल द्रविड़ के बेटे को बड़ा मौका : भारत की अंडर-19 वनडे चैलेंजर में किया गया शामिल

मुंबई, 5 नवंबर (एजेंसियां)। भारत के दिग्गज क्रिकेटर राहुल द्रविड़ टीम इंडिया के सबसे सफल खिलाड़ियों में से एक हैं. इसके साथ-साथ उन्होंने बतौर कोच भी भारत को आईसीसी ट्रॉफी जिताई है. उनके दोनों बेटे भी क्रिकेट खेलते हैं. द्रविड़ के छोटे बेटे अनवय द्रविड़ पिछले कुछ समय से लगातार सुर्खियों में बने हुए हैं. हाल ही में कर्नाटक राज्य क्रिकेट संघ ने एनुअल अवॉर्ड समारोह में सम्मानित किया था. वहीं, पिछले महीने वीनू मांकड़ ट्रॉफी में कर्नाटक की कप्तानी की थी. अब उन्हें एक बड़े टूर्नामेंट के लिए भारत की एक टीम में शामिल किया गया है.

भारत की इस टीम में शामिल द्रविड़ के बेटे

राहुल द्रविड़ के बेटे अन्वय द्रविड़ को शुरू हो रही पुरुष अंडर-19 वनडे चैलेंजर ट्रॉफी के लिए चुना गया है. यह टूर्नामेंट हर साल आयोजित होता है और युवा खिलाड़ियों को अपनी प्रतिभा दिखाने का मौका देता है. अन्वय को चार टीमों में से टीम सी में शामिल किया गया है. टॉप ऑर्डर बल्लेबाज और विकेटकीपर की भूमिका निभाने वाले अन्वय आक्रामक बल्लेबाजी के लिए जाने जाते हैं. ये टूर्नामेंट पांच से 11 नवंबर 2025 तक हैदराबाद में खेला जाएगा.

टीम सी की कप्तानी एरॉन जॉर्ज संभालेंगे, जबकि उपकप्तान आर्यन यादव होंगे. टीम का पहला मुकाबला शुक्रवार को टीम बी के खिलाफ होगा, जिसकी कमान वेदांत त्रिवेदी के हाथों में है. अन्वय द्रविड़ इस मुकाबले में खेलते हुए नजर आ सकते हैं. अनवय द्रविड़ के लिए ये एक बड़ा मौका होगा, जहां वह अपनी छाप छोड़ना चाहेंगे. बता दें, राहुल द्रविड़ के बड़े बेटे समित द्रविड़ भी एक बल्लेबाज हैं. समित ने हाल ही में महाराजा टी20 केएससीए ट्रॉफी में टॉप ऑर्डर बल्लेबाज के तौर पर कुछ मैच खेले थे.

अंडर-19 वनडे चैलेंजर ट्रॉफी के लिए सभी टीमों के स्क्वॉड

टीम एः विहान मल्होत्रा (कप्तान), अभिज्ञान कुंडू (उपकप्तान और विकेटकीपर), वंश आचार्य, बालाजी राव (विकेटकीपर), लक्ष्य रायचंदानी, विनीत वी के, मार्कंडेय पांचाल, सात्विक देसवाल, वी यशवीर, हेमचुदेशन जे, आर एस अंब्रीश, हनी प्रताप सिंह, वासु देवानी, युधाजीत गुहा, ईशान सूद.

टीम बीः वेदांत त्रिवेदी (कप्तान), हरवंश सिंह (उपकप्तान और विकेटकीपर), वाफी कच्छी, सागर विर्क, सायन पॉल, वेदांत सिंह चौहान, प्रणव पंत, एहित सलारिया (विकेटकीपर), बी के किशोर, अनमोलजीत सिंह, नमन पुष्पक, डी दीपेश, मोहम्मद मलिक, महमद यासीन सऊदागर, वैभव शर्मा.

टीम सीः एरॉन जॉर्ज (कप्तान), आर्यन यादव (उपकप्तान), अनिकेत चटर्जी, मणिकांत शिवानंद, राहुल कुमार, यश कासवंकर, अन्वय द्रविड़ (विकेटकीपर), युवराज गोहिल (विकेटकीपर), खिलन ए पटेल, कनिष्क चौहान, आयुष शुक्ला, हेनिल पटेल, लक्ष्मण पृथी, रोहित कुमार दास, मोहित उल्वा.

टीम डीः चंद्रहास दश (कप्तान), मौल्यराजसिंह चावड़ा (उपकप्तान), शांतनु सिंह, अर्णव बुग्गा, अभिनव कन्नन, कुशाग्र ओझा, आर्यन सकपाल (विकेटकीपर), ए रापोले (विकेटकीपर), विकल्प तिवारी, मोहम्मद एनान, आयान अकरम, उद्धव मोहन, आशुतोष महिड़ा, एम तोषित यादव, सोलिब तारिक.

बांग्लादेश की कप्तान 'हिटलर'! साथी खिलाड़ियों संग ड्रेसिंग रूम में करती हैं मारपीट? हो गया खुलासा

ढाका, 5 नवंबर (एजेंसियां)। बांग्लादेश वुमेंस टीम की स्टार गेंदबाज जहांआरा आलम ने कप्तान निगार सुल्ताना जोटी पर कड़े आरोप लगाए हैं. 32 साल की महिला खिलाड़ी ने दावा किया है कि निगार सुल्ताना जूनियर खिलाड़ियों के साथ मारपीट करती हैं और इसी वजह से कई खिलाड़ी बांग्लादेश टीम के लिए नहीं खेलना चाहती हैं. जहांआरा अभी महिला टीम का हिस्सा नहीं हैं और दिसंबर 2024 में आखिरी बार खेलती हुई नजर आई थीं. खैर, कप्तान निगार के 'हिटलर' जैसा क्रूर व्यवहार करने के बड़े आरोप लगे हैं, जो हैरान करने वाली चीज है.

बांग्लादेश की कप्तान पर लगे मारपीट के आरोप!

बांग्लादेश के न्यूजपेपर कलेर कंठो के साथ बात करते हुए जहांआरा आलम ने चौंकाने वाला खुलासा किया. उन्होंने निगार सुल्ताना पर कड़े आरोप लगाते हुए कहा कि वो साथी जूनियर्स के साथ खराब व्यवहार और मारपीट करती हैं. उन्होंने कहा, 'ये कोई नई बात नहीं है. जोटी (निगार सुल्ताना) जूनियर्स के साथ काफी बार मारपीट करती है. इस वर्ल्ड कप के दौरान भी जूनियर्स ने मुझे बताया कि वो दोबारा ऐसा नहीं करेंगी, क्योंकि उन्हें थप्पड़ जड़ा गया है.'

उन्होंने आगे कहा, 'मैंने कई लोगों से पिछले दिन सुना था कि फिर किसी की पिटाई हुई थी. दुबई टूर के दौरान भी उन्होंने एक जूनियर को कमरे में बुलाया था और छप्पड़ जड़ा था. मैं अकेली नहीं हूं. बांग्लादेश टीम में हर कोई पीड़ित हैं. हर किसी को अलग तरह से समस्याएं हैं.' आपको बता दें कि बांग्लादेश क्रिकेट बोर्ड ने इन आरोपों को झूठा बताया है।

जहांआरा आलम को टीम से बाहर करने की हुई कोशिश?

आलम ने बातचीत के दौरान आरोप लगाए कि उन्हें और अन्य सीनियर प्लेयर्स को 2021 से ही टीम के बाहर करने की प्लानिंग शुरू कर दी गई थी. उन्होंने कहा, 'एक या दो लोगों को अच्छी व्यवस्था मिलती है. कुछ मौकों पर सिर्फ एक को ही मौका मिलता है. 2021 से ही मुझे और मेरे जैसी अन्य सीनियर खिलाड़ियों को हटाने की प्रक्रिया शुरू हो गई थी. इसके बाद मुझे बांग्लादेश गेम्स के दौरान तीन टीमों में से एक का कप्तान बनाया गया. दूसरी दो टीमों की कप्तान जोटी (निगार सुल्ताना) और शरमीन सुल्ताना को बनाया गया. इसके बाद से सीनियर्स पर प्रेशर आने लग गया.'

बीसीसीआई से डर गए ट्रॉफी 'चोर' मोहसिन नकवी!

नहीं बनेंगे आईसीसी मीटिंग का हिस्सा? कारण आया सामने

इस्लामाबाद, 5 नवंबर (एजेंसियां)। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड के मोहसिन नकवी ने बीसीसीआई से सीधी मुलाकात नहीं करने के लिए नया प्लान बना लिया है. बताया जा रहा है कि आईसीसी की मीटिंग में मोहसिन नकवी नहीं आएंगे. बीसीसीआई ने पहले ही ऐलान किया था कि वो एशिया कप ट्रॉफी विवाद को आईसीसी मीटिंग में सामने रखेंगे और मोहसिन नकवी का जमकर विरोध करेंगे. इसी वजह से शायद नकवी डर गए हैं और अब वो आईसीसी की बैठक का हिस्सा नहीं बनेंगे.

एशिया कप ट्रॉफी विवाद बना चर्चा का विषय

मोहसिन नकवी पीसीबी के चेयरमैन हैं और पाकिस्तान सरकार में इंटीरियर मिनिस्टर हैं. टीम इंडिया ने उनसे एशिया कप जीतने के बाद ट्रॉफी लेने से इनकार कर दिया था. नकवी चाहते, तो एसीसी के किसी और सदस्य को भी ट्रॉफी देने के लिए बोल सकते थे. हालांकि, वो ट्रॉफी अपने साथ ले गए थे और अब तक टीम इंडिया को कप नहीं मिला है. बीसीसीआई ने ट्रॉफी वापस लेने के लिए एसीसी चीफ मोहसिन नकवी को लेटर भी लिखा लेकिन कोई क्लियर जवाब नहीं आया. बीसीसीआई ने साफ कर दिया था कि वो आईसीसी मीटिंग में इस मुद्दे को उठाएंगे.

आईसीसी मीटिंग में नहीं आएंगे मोहसिन नकवी!

पीटीआई ने अपनी रिपोर्ट में बताया कि आईसीसी की दुबई में होने वाली एक्जीक्यूटिव बोर्ड मीटिंग में मोहसिन नकवी नजर नहीं आएंगे. उन्होंने घरेलू पॉलिटिकल मुद्दों को बड़ा कारण बताया. आईसीसी की चार दिनों की मीटिंग 4 नवंबर से शुरू हो गई थी लेकिन इसमें नकवी नहीं नजर आएंगे. रिपोर्ट में ये क्लियर नहीं किया गया है कि किन राजनैतिक कारणों के चलते नकवी बैठक का हिस्सा नहीं बन रहे हैं. पीसीबी ने 7 नवंबर 2025 को चीफ ऑपरेटिंग ऑफिसर सुमेर सईद उनकी जगह आईसीसी मीटिंग में भेजने का फैसला किया है. सूत्रों ने पीटीआई को ये भी बताया है कि नकवी के कॉल द्वारा मीटिंग में जुड़ने के चांस रहेंगे.

टीम इंडिया कब मिलेगी एशिया कप की ट्रॉफी?

एशिया कप की ट्रॉफी टीम इंडिया को जल्द ही मिल सकती है. आईसीसी की मीटिंग में जब ये बात उठाई जाएगी, तो पीसीबी और मोहसिन नकवी के पास साफ तौर पर इसका कोई जवाब नहीं होगा. ऐसा कोई नियम नहीं है कि एसीसी चीफ ही ट्रॉफी दे सकता है. ऐसे में आईसीसी नकवी को फटकार लगा सकता है और टीम इंडिया को जल्द ही ट्रॉफी देने के निर्देश दे सकता है.

एशेज सीरीज के पहले टेस्ट के लिए ऑस्ट्रेलियाई टीम जारी

स्टीव स्मिथ कप्तानी करेंगे, लाबुशेन की वापसी, सैम कोंस्टास बाहर

पर्थ, 5 नवंबर (एजेंसियां)। ऑस्ट्रेलिया ने इंग्लैंड के खिलाफ एशेज सीरीज के पहले टेस्ट के लिए टीम जारी कर दी है। यह मुकाबला 21 नवंबर से पर्थ में खेला जाएगा। इसके बाद ब्रिस्बेन, एडिलेड, मेलबर्न और सिडनी में मैच खेले जाएंगे।

बुधवार को जारी टीम में मार्नस लाबुशेन की वापसी हुई है। ओपनर जेक वेदराल्ड को टीम में शामिल किया गया है। वेदराल्ड ने पिछली शेफील्ड शील्ड सीजन में सबसे ज्यादा रन बनाए थे और ऑस्ट्रेलिया ए के लिए श्रीलंका ए के खिलाफ भी शतकीय पारी खेली थी।

स्टीव स्मिथ करेंगे कप्तानी

पहले टेस्ट मैच में चोटिल पैट कमिंस की जगह स्टीव स्मिथ को कप्तान बनाया गया। तेज गेंदबाजों में मिशेल स्टार्क, जोश हेजलवुड और स्कॉट बोलैंड शामिल हैं।

इसके अलावा ब्रेंडन डॉगेट और शॉन एबट भी तेज गेंदबाजी के विकल्प हैं।

ग्रीन की फिट होने पर प्लेइंग इलेवन में मिलेगी जगह

टीम में ऑलराउंडर्स ब्यू वेबस्टर और कैमरन ग्रीन शामिल हैं। ग्रीन की फिटनेस और गेंदबाजी की क्षमता को अंतिम टेस्ट से पहले परखा जाएगा। सिलेक्टर जॉर्ज बेली ने कहा कि 14 में से 15 खिलाड़ी शेफील्ड शील्ड खेल रहे हैं और उनकी फार्म को परखा जाएगा।

विराट कोहली से बहस करने वाले सैम कोंस्टास बाहर

BGT में विराट कोहली से उलझने वाले युवा सलामी बल्लेबाज सैम कोंस्टास की छुट्टी हो गई है। साल 2024 में हुए बॉक्सिंग-डे टेस्ट के दौरान कोहली को उनके विवादास्पद धक्के के लिए 20% मैच फीस का जुर्माना और एक डिमेरिट पॉइंट दिया गया था।

ऑस्ट्रेलिया की टीमः

स्टीव स्मिथ (कप्तान), शॉन एबट, स्कॉट बोलैंड, एलेक्स कैरी, ब्रेंडन डॉगेट, कैमरन ग्रीन, जोश हेजलवुड, ट्रैविस हेड, जोश इंग्लिस, उस्मान ख्वाजा, मार्नस लाबुशेन, नाथन लियोन, मिशेल स्टार्क, जेक वेदराल्ड, ब्यू वेबस्टर।

इंटरनेशनल डेब्यू करने के बाद से इन 22 मामलों में विराट कोहली हैं नंबर 1

नई दिल्ली, 5 नवंबर (एजेंसियां)। अगस्त 2008 में श्रीलंका का दांबुला वो मैदान बना, जहां से विराट कोहली का इंटरनेशनल सफर शुरू हुआ. तब कोहली की उम्र सिर्फ 20 साल की थी. लेकिन, अब उम्र के 37वें पड़ाव पर आकर वो एक विराट बल्लेबाज बन चुके हैं. कोहली के विराट बनने की कहानी उनसे जुड़े वो 22 आंकड़े भी कहते हैं, जिन्हें अपने इंटरनेशनल डेब्यू के बाद बनाने में वो सबसे आगे हैं. मतलब नंबर 1 हैं कोहली.

किन 22 मामलों में नंबर 1 बने विराट कोहली?

अब सवाल है कि वो 22 उपलब्धियां क्या हैं, जिन्हें अपने इंटरनेशनल डेब्यू के बाद ना सिर्फ विराट कोहली ने हासिल किया बल्कि अब उसमें दुनिया के बाकी सारे खिलाड़ियों से आगे भी निकल चुके हैं. उनके डेब्यू के बाद ऐसा कोई खिलाड़ी नहीं हुआ, जो उनसे ज्यादा बार उन उपलब्धियों को अपने नाम कर चुका हो. अपने इंटरनेशनल डेब्यू के बाद विराट कोहली सबसे ज्यादा 27673 रन बनाने वाले खिलाड़ी हैं. विराट कोहली ने सबसे ज्यादा 144 इंटरनेशनल अर्धशतक जड़े हैं.

इंटरनेशनल डेब्यू के बाद 22 'विराट' कामयाबी

विराट कोहली ने सबसे ज्यादा 82 शतक जड़े हैं.

सबसे ज्यादा 7 दोहरे शतक भी विराट कोहली ने ही लगाए हैं.

इंटरनेशनल क्रिकेट में डेब्यू के बाद 3034 बाउंड्रीज लगा चुके हैं विराट कोहली.

विराट कोहली ने सबसे ज्यादा 69 बार प्लेयर ऑफ द मैच अवॉर्ड जीता.

सबसे ज्यादा 21 बार प्लेयर ऑफ द सीरीज का खिताब जीता.

आईसीसी टूर्नामेंट में सबसे ज्यादा 3954 रन बनाए.

आईसीसी टूर्नामेंट्स में सबसे ज्यादा 39 फिफ्टी प्लस स्कोर बनाए.

आईसीसी टूर्नामेंट्स में सबसे ज्यादा 15 बार प्लेयर ऑफ द मैच बने.

सबसे ज्यादा 3 बार प्लेयर ऑफ द सीरीज भी आईसीसी टूर्नामेंट्स में बने.

विराट कोहली के पास सबसे ज्यादा 10 आईसीसी अवॉर्ड्स हैं.

आईसीसी टूर्नामेंट्स के सेमीफाइनल में सबसे ज्यादा 586 रन बनाने वाले बल्लेबाज हैं.

आईसीसी टूर्नामेंट्स के सेमीफाइनल में सबसे ज्यादा 7 फिफ्टी प्लस स्कोर बनाने वाले बल्लेबाज हैं.

आईसीसी टूर्नामेंट्स के फाइनल में सबसे ज्यादा 411 रन बनाए हैं.

सबसे ज्यादा 12883 रन बतौर कप्तान बनाए हैं.

विराट कोहली सबसे ज्यादा 41 शतक बतौर कप्तान जमा चुके हैं.

सबसे ज्यादा 7 दोहरे शतक भी बतौर कप्तान उन्होंने ही जमाए हैं.

बतौर कप्तान सबसे ज्यादा 27 बार प्लेयर ऑफ द मैच जीतने का रिकॉर्ड भी विराट के नाम है.

बतौर कप्तान सबसे ज्यादा 12 बार प्लेयर ऑफ द सीरीज जीतने का रिकॉर्ड भी विराट के नाम है.

वो जीत में सबसे ज्यादा 18172 इंटरनेशनल रन बनाने वाले बल्लेबाज हैं.

विराट कोहली ने 58 शतक जीत में जड़े हैं, जो कि एक रिकॉर्ड है.

भट्टी ने बिजली क्षेत्र के प्रति कांग्रेस सरकार की प्रतिबद्धता पर ज़ोर दिया

उपमुख्यमंत्री ने परिगी निर्वाचन क्षेत्र में कई विकास कार्यक्रमों में भाग लिया

हैदराबाद, 5 नवंबर (स्वतंत्र वार्ता)। उपमुख्यमंत्री भट्टी विक्रमार्क ने कहा, "कांग्रेस स्वयं बिजली है और बिजली स्वयं कांग्रेस है। जो लोग कहते थे कि कांग्रेस सत्ता में आई तो बिजली आपूर्ति बंद हो जाएगी, उन्हें कांग्रेस और करंट दोनों का अनुभव होने पर सच्चाई का एहसास होगा।" वे बुधवार को परिगी निर्वाचन क्षेत्र में कई विकास कार्यक्रमों में भाग लेने के बाद एक जनसभा को संबोधित कर रहे थे। उपमुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार राज्य भर में 53 लाख परिवारों को 200 यूनिट तक मुफ्त बिजली उपलब्ध करा रही है। अकेले विकाराबाद जिले में 2,47,777 परिवार लाभान्वित हो रहे हैं, जिनमें से 1,43,190 गरीब परिवार हैं। अकेले परिगी निर्वाचन क्षेत्र में, गृह ज्योति योजना के तहत 44,500 परिवारों को मुफ्त बिजली मिल रही है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार विकाराबाद ज़िले में 200 यूनिट तक मुफ्त बिजली आपूर्ति के लिए बिजली विभाग को 42 करोड़ रुपए का भुगतान कर रही है और कुल मिलाकर, सरकार इस योजना के तहत गरीब परिवारों के लिए बिजली विभाग को हर महीने 2,830 करोड़ रुपए का भुगतान कर रही है। उन्होंने घोषणा की कि परिगी निर्वाचन क्षेत्र के लिए 1,000 करोड़ के बिजली विकास कार्यों को मंज़ूरी दी गई है, जिसमें 9 सबस्टेशन, एक 33/11 केवी सबस्टेशन, एक 400 केवी सबस्टेशन और एक 220 केवी सबस्टेशन शामिल हैं। उन्होंने नैवेल परियोजना के लिए 3,000 करोड़ रुपए दिलाने में विधायक राममोहन रेड्डी के प्रयासों की प्रशंसा की, जिसे पिछली सरकार ने 10 वर्षों तक नज़रअंदाज़ किया था।

उन्होंने कहा कि रक्षा परियोजनाओं से संबंधित 3,000 करोड़ रुपए स्थानीय युवाओं के लिए रोज़गार के बेहतरीन अवसर प्रदान करेंगे। हाल ही में हुई एक सड़क दुर्घटना के बारे में बात करते हुए, भट्टी विक्रमार्क ने आश्वासन दिया कि सरकार प्रभावित परिवारों की हर संभव मदद कर रही है। उन्होंने कहा कि मन्नेगुडा से बीजापुर तक सड़क अविभाजित आंध्र प्रदेश के समय स्वीकृत हुई थी, लेकिन पिछली बीआरएस सरकार ने इसे 10 साल तक नज़रअंदाज़ किया। उपमुख्यमंत्री ने कहा कि कांग्रेस सरकार ने एनजीटी-2 के मामले को 30 अक्टूबर तक निपटाने का काम किया, जिसकी बदौलत अब चार लेन वाली सड़क परियोजना तेज़ी से आगे बढ़ रही है।

सीआईआई टीजी-पैककॉन 2025 शिखर सम्मेलन की मेजबानी करेगा

हैदराबाद, 5 नवंबर (स्वतंत्र वार्ता)। भारतीय उद्योग परिसंघ (सीआईआई) 6 और 7 नवंबर को हैदराबाद में सोमाजीगुडा के एक होटल में टीजी-पैककॉन 2025 - विज़न एडिशन के पाँचवें संस्करण की मेजबानी करेगा। दो दिवसीय यह शिखर सम्मेलन खाद्य एवं कृषि, फार्मा और जीवन विज्ञान, तथा प्रौद्योगिकी, इलेक्ट्रॉनिक्स, एफएमसीजी और सीपीजी जैसे क्षेत्रों में पैकेजिंग में नवाचार, स्थिरता और आर्थिक विकास पर केंद्रित होगा। सीआईआई ने उद्घाटन समारोह के लिए आईटी और उद्योग मंत्री डी. श्रीधर बाबू और विशेष मुख्य सचिव संजय कुमार को आमंत्रित किया है। वक्ताओं में डॉ. विष्णु वर्धन रेड्डी (आईएफएस), श्री निखिल चक्रवर्ती (आईए एंड एएस), अक्षय एससी (आईटीएस), डॉ. विनय कुमार गुप्ता (सीडीएससीओ), वेणुगोपाल राव संकिनेनी (तेलंगाना लाइफसाइंसेज़) और ब्रिटिश उच्चायोग के उप-उच्चायुक्त गैरेथ ब्यान ओवेन शामिल थे। उद्योग जगत के दिग्गज चक्रवर्ती एवीपीएस, मनीष जैन, एम. गौतम रेड्डी और आर.एस. रेड्डी नीति और नवाचार पर अपने विचार साझा करेंगे।

सीए महिला ने बेटी संग हुसैन सागर झील में कूदकर की आत्महत्या

हैदराबाद, 5 नवम्बर (स्वतंत्र वार्ता)। हैदराबाद में एक दर्दनाक घटना में 28 वर्षीय महिला ने अपनी छोटी बेटी के साथ हुसैन सागर झील में कूदकर आत्महत्या कर ली। लेक पुलिस के अनुसार, मृतका की पहचान कीर्तिका अग्रवाल के रूप में हुई है, जो पेशे से चार्टर्ड अकाउंटेंट थीं। वह अपनी बेटी के साथ लापता हो गई थीं, जिसके बाद बहादुरपुरा पुलिस स्टेशन में गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज कराई गई थी। 2 नवम्बर को झील पुलिस ने हुसैन सागर से एक महिला का शव बरामद किया, जिसकी पहचान बाद में कीर्तिका अग्रवाल के रूप में हुई। प्रारंभिक जांच में पता चला है कि वैवाहिक विवादों के कारण उन्होंने यह कदम उठाया। बाद में पुलिस को झील से उनकी लापता बेटी का शव भी मिला। लेक पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है और घटना की विस्तृत जांच जारी है।

पुलिस ने ऑनलाइन निवेश धोखाधड़ी से बचने के लिए महत्वपूर्ण सलाह जारी की

हैदराबाद, 5 नवंबर (स्वतंत्र वार्ता)। हैदराबाद सिटी पुलिस की साइबर अपराध इकाई ने जनता को ऑनलाइन ट्रेडिंग और निवेश घोटालों में बढ़ती चिंताजनक वृद्धि के बारे में आगाह किया है। धोखाधड़ी करने वाले सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म, टेलीग्राम या व्हाट्सएप ग्रुप के ज़रिए पीड़ितों को क्रिप्टोकरेंसी, विदेशी मुद्रा या शेयर ट्रेडिंग में उच्च रिटर्न या गारंटीकृत मुनाफ़े का वादा करके लुभाते हैं। बुधवार को यहाँ एक बयान में, पुलिस उपायुक्त (साइबर अपराध, हैदराबाद सिटी) ने कहा कि ये धोखेबाज अक्सर झूठे मुनाफ़े दिखाने और पीड़ितों को और ज़्यादा पैसा निवेश करने के लिए मनाने के लिए फ़र्ज़ी वेबसाइटों, ट्रेडिंग डैशबोर्ड या ऐप का इस्तेमाल करते हैं। लोगों से आग्रह किया जाता है कि वे असत्यापित प्लेटफॉर्म के ज़रिए निवेश करने से बचें और ऑनलाइन मुनाफ़े के वादों पर भरोसा न करें। ऑनलाइन ट्रेडिंग धोखाधड़ी का तरीका और सोशल मीडिया के ज़रिए शुरुआती संपर्क| धोखाधड़ी की शुरुआत फ़ेसबुक, टेलीग्राम या व्हाट्सएप जैसे प्लेटफॉर्म पर एक अनचाहे संदेश से होती है, जिसे अक्सर कोई निवेश सलाहकार या ट्रेडिंग एजेंट बताकर भेजता है।

एजेंट पीड़ित के साथ संबंध बनाता है और उसे एक तथाकथित ऑनलाइन ट्रेडिंग अवसर प्रदान करता है, जिसमें उच्च और तेज़ रिटर्न का वादा किया जाता है। पीड़ित को ट्रेडिंग शुरू करने के लिए एक छोटा सा प्रारंभिक निवेश करने के लिए कहा जाता है। एजेंट व्हाट्सएप के माध्यम से सहायता प्रदान करता है, जिससे उसे वैधता और रीयल-टाइम ट्रेडिंग सहायता का भ्रम होता है। पुलिस उपायुक्त ने बताया कि धोखेबाज़ नकली मुनाफ़े का वादा करते हैं और वॉलेट बैलेंस दिखाते हैं। शुरुआती निवेश के बाद, एजेंट एक फर्जी ट्रेडिंग प्लेटफ़ॉर्म पर नकली मुनाफ़ा दिखाता है। पीड़ित को यह विश्वास दिलाया जाता है कि ये रिटर्न असली हैं और निकाले जा सकते हैं। पुलिस आयुक्त ने बताया कि जब पीड़ित पैसे निकालने की कोशिश करता है, तो उसे विभिन्न "प्रसंस्करण शुल्क" देने के लिए कहा जाता है, जैसे कर भुगतान, मुद्रा रूपांतरण शुल्क, निकासी शुल्क, अनुपालन शुल्क। उन्होंने कहा कि हर बार भुगतान करने पर, और पैसे मांगने का एक नया बहाना गढ़ा जाता है। अगर पीड़ित हिचकिचाता है या प्रक्रिया पर सवाल उठाता है, तो स्कैमर्स कानूनी कार्रवाई की धमकी देकर डराने की कोशिश करते हैं और दावा करते हैं कि वॉलेट या पैसे फ्रीज हो जाएँगे या खो जाएँगे। आखिरकार, पीड़ित को पता चलता है कि यह एक घोटाला है और वह 1930 - राष्ट्रीय साइबर अपराध हेल्पलाइन या cybercrime.gov.in पर घटना की सूचना देता है। पुलिस आयुक्त ने लोगों को ऑनलाइन ट्रेडिंग धोखाधड़ी में शामिल न होने की सलाह दी। लोगों से निवेश करने से पहले सत्यापन करने और कोई भी वित्तीय प्रतिबद्धता करने से पहले ट्रेडिंग प्लेटफॉर्म, निवेश सलाहकारों और एजेंटों की प्रामाणिकता की पुष्टि करने का आग्रह किया गया है। उन्होंने लोगों से सेबी (भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड) के साथ आधिकारिक पंजीकरण और लाइसेंस और विश्वसनीय समीक्षाओं की जाँच करने का आग्रह किया। लोगों को सोशल मीडिया पर अनचाहे संदेशों के माध्यम से संपर्क किए जाने वाले प्लेटफॉर्म से बचने की सलाह दी गई है। पुलिस आयुक्त ने कहा कि धोखेबाज अक्सर अधिक पैसा ऐंठने के लिए कर, निकासी शुल्क या अनुपालन शुल्क जैसे बहाने गढ़ते हैं और वास्तविक ट्रेडिंग प्लेटफॉर्म कभी भी पैसे नहीं मांगते हैं।

राहुल गांधी की टिप्पणी 'अपरिपक्व', : भाजपा

हैदराबाद, 5 नवंबर (स्वतंत्र वार्ता)। तेलंगाना भाजपा ने बुधवार को लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी द्वारा भारतीय सेना पर की गई टिप्पणी को 'अपरिपक्व और गैर-ज़िम्मेदाराना' बताया। एक प्रेस बयान में, राज्य भाजपा के आधिकारिक प्रवक्ता और मीडिया प्रभारी एन.वी. सुभाष ने कहा कि राहुल गांधी की टिप्पणी न केवल भारतीय सेना का, बल्कि विपक्ष का भी अपमान है, जो राष्ट्रीय महत्व के मुद्दों पर सच बोलने में विफल रहा है। सुभाष ने दावा किया, "प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में पिछले 12 वर्षों में पिछड़े वर्गों, दलितों, अनुसूचित जनजातियों और अल्पसंख्यकों को कांग्रेस के 70 वर्षों के शासन की तुलना में अधिक लाभ और अवसर प्राप्त हुए हैं।"

भाजपा अध्यक्ष राव ने मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी के बयान की निंदा की

हैदराबाद, 5 नवंबर (स्वतंत्र वार्ता)। मुस्लिम वोटों को आकर्षित करने के उद्देश्य से मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी की हालिया टिप्पणियों की कड़ी निंदा करते हुए, प्रदेश भाजपा अध्यक्ष एन. रामचंदर राव ने बुधवार को आरोप लगाया कि मुख्यमंत्री के बयान ने एक बार फिर कांग्रेस पार्टी की विभाजनकारी और तुष्टिकरण की राजनीति को उजागर कर दिया है।

राव ने पत्रकारों से बात करते हुए कहा कि मुख्यमंत्री ने दावा किया था कि कांग्रेस पार्टी की वजह से मुसलमानों को समाज में सम्मान और अस्तित्व मिला हुआ है, और कांग्रेस के बिना उन्हें कोई समर्थन नहीं मिलेगा। उन्होंने कहा, "ये बयान साफ़ तौर पर साबित करते हैं कि कांग्रेस पार्टी धर्म-आधारित वोट बैंक की राजनीति पर निर्भर है। ये बयान राजनीतिक फ़ायदे के लिए सामाजिक विभाजन को भड़काने की एक ख़तरनाक कोशिश को दर्शाते हैं।" इसके अलावा, भाजपा अध्यक्ष ने कांग्रेस पर 80% हिंदू आबादी की भावनाओं की अनदेखी करके 20% मुस्लिम आबादी का समर्थन हासिल करने की कोशिश करते हुए बहुसंख्यक समुदाय को धोखा देने का आरोप लगाया। उन्होंने पूछा, "क्या यही आपकी धर्मनिरपेक्षता है?" और चेतावनी दी कि जनता आगामी जुबली हिल्स उपचुनाव में इस अहंकार और तुष्टिकरण की राजनीति का करारा जवाब देगी। राव ने रेवंत रेड्डी को चुनौती देते हुए कहा, "अगर आप और आपकी पार्टी सिर्फ़ मुसलमानों के वोट चाहते हैं और हिंदू वोटों की परवाह नहीं करते, तो सार्वजनिक रूप से कहने का साहस करें।

तेलंगाना की 80% हिंदू आबादी आपकी टिप्पणियों को देख रही है।" भाजपा नेता ने कहा कि मुस्लिम समुदाय के लिए सच्चा न्याय सुनिश्चित करने के लिए शिक्षा, रोज़गार और आर्थिक सशक्तिकरण पर ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिए, न कि वोट बैंक की राजनीति पर। उन्होंने कांग्रेस पर आरोप लगाया कि वह शुरू से ही मुसलमानों को सिर्फ़ वोट बैंक के तौर पर देखती रही है।

मुख्यमंत्री द्वारा मतदाताओं को कांग्रेस को वोट न देने पर राशन कार्ड रद्द करने, बढ़िया चावल वितरण और मुफ़्त बस सेवा का लाभ देने की धमकी देने की कथित टिप्पणी की निंदा करते हुए, राव ने कहा कि ऐसे बयान 'लोकतंत्र का अपमान और लोगों की आज़ादी पर हमला' हैं। राव ने ज़ोर देकर कहा कि भाजपा जनता के साथ मजबूती से खड़ी है और देश व समाज को एकजुट करने वाली एक ताकत के रूप में उभर रही है। उन्होंने विश्वास जताया कि भाजपा जुबली हिल्स उपचुनाव में जीत हासिल करेगी।

शशि थरूर देंगे पहला ज्योति कोमिरेड्डी स्मृति व्याख्यान

हैदराबाद, 5 नवम्बर (स्वतंत्र वार्ता)। वरिष्ठ कांग्रेस नेता और सांसद शशि थरूर 13 नवम्बर को हैदराबाद के राजभवन रोड स्थित द पार्क होटल में पहला ज्योति कोमिरेड्डी स्मृति व्याख्यान देंगे। उनका संबोधन 'रेडिकल सेंट्रिज्म: माई विजन फॉर इंडिया' विषय पर होगा। यह व्याख्यान श्रृंखला अग्रणी महिला अधिकार कार्यकर्ता और विधायक ज्योति कोमिरेड्डी की स्मृति में शुरू की जा रही है, जिनका वर्ष 2024 में निधन हो गया था। थरूर के व्याख्यान के बाद वे पत्रकार और पुस्तक "मेलवोलेंट रिपब्लिक: ए शॉर्ट हिस्ट्री ऑफ द न्यू इंडिया' के लेखक कपिल कोमिरेड्डी के साथ संवाद करेंगे। कार्यक्रम के अंत में दर्शकों के साथ प्रश्नोत्तर सत्र भी होगा।

शराब पीकर गाड़ी चलाते पकड़े जाने पर परेशान युवक ने की आत्महत्या

हैदराबाद, 5 नवम्बर (स्वतंत्र वार्ता)। शराब पीकर गाड़ी चलाने के आरोप में पकड़े गए 32 वर्षीय व्यक्ति ने मंगलवार आधी रात को मलकाजगिरी क्षेत्र के मौलाली में कुशाईगुडा ट्रैफिक पुलिस स्टेशन के बाहर खुद को आग लगाकर आत्महत्या कर ली। मृतक की पहचान दम्मईगुडा निवासी सिंगीरेड्डी मीन रेड्डी के रूप में हुई है। प्रारंभिक जानकारी के अनुसार, मीन रेड्डी हाल ही में पुलिस द्वारा शराब पीकर गाड़ी चलाने के मामले में की गई कार्रवाई से मानसिक रूप से परेशान था। बताया जाता है कि उसने रात करीब 2 बजे पुलिस स्टेशन के सामने खुद पर पेट्रोल डालकर आग लगा ली। मौके पर मौजूद पुलिसकर्मियों ने उसे तुरत गांधी अस्पताल पहुँचाया, जहाँ डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। मलकाजगिरी पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है और घटना के पीछे के कारणों की विस्तृत जांच कर रही है। अधिकारियों का कहना है कि आत्महत्या की असली वजह का पता लगाने के लिए जांच जारी है।

गोसनपल्ली में बंद मकान से आभूषण और नकदी चोरी

चोरों ने 18 तोला सोना, 30 तोला चांदी और 30,000 रुपये उड़ाए

सिद्दीपेट, 5 नवम्बर (स्वतंत्र वार्ता)। सिद्दीपेट जिले के दुब्बाक मंडल के गोसनपल्ली गाँव में चोरों ने एक बंद मकान को निशाना बनाते हुए लाखों रुपये के आभूषण और नकदी पर हाथ साफ कर दिया। जानकारी के अनुसार, मकान मालिक अस्का नरसिम्हुलु और उनकी पत्नी सोमवार को अपने बेटे के परिवार से मिलने सिद्दीपेट गए हुए थे। जब वे बुधवार सुबह लौटे, तो उन्होंने देखा कि घर का दरवाज़ा खुला हुआ है और अलमारी टूटी पड़ी है। चोर 18 तोला सोने के गहने, 30 तोला चांदी के आभूषण और 30,000 रुपये नकद लेकर फरार हो गए। घटना की जानकारी मिलते ही दुब्बाक पुलिस मौके पर पहुँची और जांच शुरू कर दी। नरसिम्हुलु की शिकायत पर मामला दर्ज कर लिया गया है। पुलिस इलाके के सीसीटीवी फुटेज खंगाल रही है ताकि आरोपियों का सुराग मिल सके।

रेलवे में नशीले पदार्थों की तस्करी पर आरपीएफ की बड़ी कार्रवाई

ऑपरेशन नारकोस के तहत 5.79 करोड़ की ड्रग्स जब्त, 107 गिरफ्तार

हैदराबाद, 5 नवम्बर (स्वतंत्र वार्ता)। रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) सिकंदराबाद मंडल ने ऑपरेशन नारकोस के तहत नशीले पदार्थों की तस्करी पर बड़ी कार्रवाई करते हुए इस वर्ष अब तक 5.79 करोड़ रुपये मूल्य की ड्रग्स जब्त की हैं। आरपीएफ अधिकारियों ने बताया कि मंडल में 88 अलग-अलग मामलों में 107 तस्करों को गिरफ्तार किया गया है। गिरफ्तार आरोपियों को आगे की कानूनी कार्रवाई के लिए नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो (एनसीबी) और अन्य एजेंसियों को सौंप दिया गया है।

सिकंदराबाद के मंडल सुरक्षा आयुक्त अलकुंटा नवीन कुमार ने बताया कि इस साल की बरामदगी पिछले वर्ष की तुलना में काफी अधिक है। उन्होंने कहा कि 2024 में 4.27 करोड़ रुपये मूल्य की ड्रग्स से जुड़े 67 मामले दर्ज हुए थे और 82 लोगों को गिरफ्तार किया गया था, जबकि इस साल जब्त की गई मात्रा में 59 प्रतिशत और गिरफ्तारियों में 62 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। नवीन कुमार ने बताया कि आरपीएफ ने पूरे मंडल में ट्रेनों और संवेदनशील इलाकों पर निगरानी बढ़ा दी है और एनसीबी व अन्य एजेंसियों के साथ मिलकर काम कर रही है। उन्होंने कहा कि इन प्रयासों का उद्देश्य केवल तस्करी रोकना ही नहीं, बल्कि लोगों में जागरूकता बढ़ाना भी है। उन्होंने कहा, नशीले पदार्थ हमारे युवाओं के स्वास्थ्य और भविष्य को नष्ट करते हैं और देश के सामाजिक एवं आर्थिक ढांचे को कमजोर करते हैं।

बीआरएस नेता कार्तिक रेड्डी ने भाजपा सांसद विश्वेश्वर रेड्डी पर साधा निशाना

चेवेल्ला सड़क विस्तार पर असंवेदनशील बयान देने का लगाया आरोप

हैदराबाद, 5 नवम्बर (स्वतंत्र वार्ता)। बीआरएस नेता पी. कार्तिक रेड्डी ने हाल ही में हुए बस हादसे के बाद चेवेल्ला सड़क विस्तार को लेकर भाजपा सांसद कोंडा विश्वेश्वर रेड्डी के बयान की कड़ी आलोचना की है। उन्होंने कहा कि पीड़ित परिवारों के शोक में होने के बावजूद सांसद का इस विषय पर राजनीतिक टिप्पणी करना असंवेदनशील है। कार्तिक रेड्डी ने बताया कि बीआरएस सरकार ने सड़क परियोजना के लिए भूमि अधिग्रहण समेत सभी औपचारिकताएँ पूरी कर ली थीं, लेकिन केंद्र सरकार ने 2021 में इसे राष्ट्रीय राजमार्ग घोषित करने के बाद भी अब तक काम शुरू नहीं किया।

तेलंगाना भवन में संवाददाताओं से बातचीत में कार्तिक रेड्डी ने कहा कि विश्वेश्वर रेड्डी ने 2023 में "सेव बनयान्स' संगठन का समर्थन किया था, जिसने एनजीटी

में जाकर परियोजना पर रोक लगवाई थी। उन्होंने सवाल उठाया कि सांसद होने के बावजूद वे यह नहीं जानते कि राष्ट्रीय राजमार्गों का सरेखण केंद्र के इंजीनियर तय करते हैं। उन्होंने भाजपा सांसद के इस दावे पर भी तंज कसा कि अच्छी सड़कें ज़्यादा दुर्घटनाओं का कारण बनती हैं। रेड्डी ने व्यंग्य करते हुए कहा, अगर खाना नहीं होगा तो कोई भूखा नहीं रहेगा, अगर घर नहीं होंगे तो वे नहीं गिरेंगे, और अगर बिजली नहीं होगी तो झटके भी नहीं लगेंगे।

कार्तिक रेड्डी ने आगे कहा कि बीआरएस सरकार के समय परियोजना के लिए टेंडर और भूमि अधिग्रहण की प्रक्रिया पूरी हो चुकी थी, लेकिन पिछले दो वर्षों में कांग्रेस सरकार ने केंद्र के समक्ष कोई प्रस्ताव पेश नहीं किया। उन्होंने आरोप लगाया कि मंत्री कोमटिरेड्डी वेंकट रेड्डी और डी. श्रीधर बाबू के बार-बार किए गए वादे अब तक अधूरे हैं। पूर्व विधायक मेथुकु आनंद और पायलट रोहित रेड्डी ने भी सरकार पर जन सुरक्षा की अनदेखी करने और लोगों की जान से ज़्यादा राजनीति को प्राथमिकता देने का आरोप लगाया। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि सड़क निर्माण का काम तुरंत शुरू नहीं हुआ तो वे तंदूर से विकाराबाद तक विरोध मार्च निकालेंगे।

पूर्व डीजीपी की पुस्तक "बोल्डेन डेज ऑफ बाउंसिंग अप' का विमोचन

कॉलेज जीवन की यादों और प्रेरणा से भरपूर है यह पुस्तक

हैदराबाद, 5 नवम्बर (स्वतंत्र वार्ता)। मध्य प्रदेश के पूर्व पुलिस महानिदेशक बी. मारिया कुमार की पुस्तक "बोल्डेन डेज ऑफ बाउंसिंग अप' का सोमवार को गुंटूर स्थित आंध्र क्रिश्चियन कॉलेज में कॉलेज के प्राचार्य डॉ. के. मोसेस ने विमोचन किया। मारिया कुमार ने 1975 से 1978 तक इसी कॉलेज से बी.एससी. की पढ़ाई की थी। उन्होंने अपनी इस किताब में कॉलेज के दिनों की मधुर यादें साझा की हैं, जिनमें कक्षा के अनुभव, प्रयोगशाला की घटनाएँ, पुस्तकालय में बिताए पल, मंचीय प्रस्तुतियाँ, खेलकूद और दोस्तों के साथ बीते कॉलेज जीवन के प्रसंग शामिल हैं।

इस अवसर पर लेखक के कई पुराने सहपाठी और मित्र उपस्थित थे, जिनमें पी.जे. लिविंगस्टन, एम. कमला राजू, महिपाल, हरिबाबू जगन्नाथम, जी. लक्ष्मी नारायण और रवि चंद्र शामिल थे। यह पुस्तक 1885 में स्थापित आंध्र क्रिश्चियन कॉलेज की 140वीं वर्षगांठ समारोह के हिस्से के रूप में जारी की गई। डॉ. के. मोसेस ने पुस्तक की प्रशंसा करते हुए कहा कि यह युवाओं को जिज्ञासा, दया और समर्पण के साथ उत्कृष्टता की राह पर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है।

कृषि अधिकारी ने बनाया कम लागत वाला प्रकाश जाल

मेदक, 5 नवम्बर (स्वतंत्र वार्ता)। रामायमपेट के एक मंडल कृषि अधिकारी टी. राजनारायण ने वयस्क पतंगों को पकड़ने और उनके जीवन चक्र को तोड़कर धान व अन्य फसलों को संक्रमण से बचाने के लिए एक सस्ता और कारगर प्रकाश जाल विकसित किया है। यह जाल पतंगों को प्रजनन से पहले ही आकर्षित कर लेता है, जिससे फसलों को होने वाले नुकसान में भारी कमी आती है। राजनारायण द्वारा बनाया गया यह मॉडल केवल लगभग 300 रुपये की लागत में तैयार किया जा सकता है, जबकि बाजार में मिलने वाले ऐसे जालों की कीमत 3,000 से 4,000 रुपये तक होती है। उन्होंने बताया कि किसान इसे एक बेकार पड़े पानी के बुलबुले वाले कंटेनर, एक रिचार्जेबल बल्ब, दस मीटर

बिजली के तार और तेल या पेट्रोल की कुछ बूंदों के साथ पानी का उपयोग करके आसानी से बना सकते हैं।

रात में बल्ब की रोशनी पतंगों को अपनी ओर आकर्षित करती है, जिससे वे थककर पानी में गिर जाते हैं और तेल की परत उन्हें बाहर निकलने से रोक देती है। राजनारायण ने बताया कि यह तकनीक धान, दलहन और सब्जियों की फसलों में लगने वाले तना छेदक, पत्ती मोड़क, हेलिकोवर्पा, स्पोडोप्टेरा और फल मक्खी जैसे कीटों से बचाव में उपयोगी है। उन्होंने कहा कि एक वयस्क कीट लगभग 300 अंडे देता है, इसलिए प्रकाश जाल उनके जीवन चक्र को रोकने में प्रभावी साबित होता है। रामायमपेट मंडल के करीब 50 किसानों ने इस कम लागत वाले जाल को अपनाया है और अच्छे परिणाम मिल रहे हैं। राजनारायण का इस तकनीक का प्रदर्शन करते हुए वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो गया है।

चेन्नूर आबकारी थाने में जुआ खेलते पकड़े गए अधिकारी

मंचेरियल, 5 नवम्बर (स्वतंत्र वार्ता)। मंचेरियल जिले के चेन्नूर आबकारी थाने के परिसर में मंगलवार रात मद्य निषेध एवं आबकारी विभाग के अधिकारियों के जुआ खेलते पकड़े जाने की घटना से हड़कंप मच गया। इस घटना की तस्वीर बुधवार को सोशल मीडिया पर वायरल होते ही विभाग की कार्यप्रणाली पर सवाल उठने लगे।

जानकारी के अनुसार, एक हेड कांस्टेबल और चार कांस्टेबल थाने के अंदर जुआ खेलते हुए देखे गए। बताया गया कि उन्होंने उस समय थाने को बंद कर दिया था और कार्यालय के भीतर ही यह अवैध गतिविधि चल रही थी। स्थानीय निवासियों ने अधिकारियों की कड़ी आलोचना करते हुए कहा कि सार्वजनिक कार्यालय को इस तरह की हरकतों का अड्डा बना देना बेहद शर्मनाक है। मंचेरियल निषेध एवं आबकारी विभाग के अधीक्षक नंदगोपाल ने बताया कि घटना की जांच के आदेश दे दिए गए हैं और दोषी पाए जाने वाले कर्मचारियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी।

जुबली हिल्स उपचुनाव में पहली बार ईवीएम पर दिखेंगी उम्मीदवारों की रंगीन तस्वीरें

मतदान प्रक्रिया को पारदर्शी और मतदाताओं के लिए आसान बनाने की पहल

हैदराबाद, 5 नवम्बर (स्वतंत्र वार्ता)। जुबली हिल्स उपचुनाव में 11 नवम्बर को होने वाले मतदान के दौरान मतदाता पहली बार इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन (ईवीएम) पर उम्मीदवारों की रंगीन तस्वीरें देख सकेंगे। भारत निर्वाचन आयोग ने मतदान प्रक्रिया को और अधिक पारदर्शी और मतदाताओं के लिए सुगम बनाने के उद्देश्य से यह नई व्यवस्था लागू की है। तेलंगाना में जुबली हिल्स विधानसभा क्षेत्र इस नई पहल को लागू करने वाला पहला क्षेत्र होगा। ग्रेटर हैदराबाद नगर निगम के चुनाव अधिकारियों ने बताया कि आयोग के निर्देशों के अनुसार सभी तैयारियाँ पूरी कर ली गई हैं। चुनाव आयोग ने बिहार विधानसभा चुनावों और आठ अन्य राज्यों के उपचुनावों में भी इसी तरह की व्यवस्था लागू करने का निर्णय लिया है। एक मतदान अधिकारी ने बताया कि रंगीन तस्वीरें शामिल करने से मतदाताओं के बीच भ्रम कम होगा, विशेषकर उन उम्मीदवारों के मामलों में जिनके नाम एक जैसे या मिलते-जुलते हैं। इससे मतदाता अपने पसंदीदा उम्मीदवार को आसानी से पहचान सकेंगे और मतदान के दौरान त्रुटियों में कमी आएगी। जुबली हिल्स उपचुनाव में कुल 58 उम्मीदवार मैदान में हैं। सभी के रंगीन फोटोग्राफ ईवीएम मतपत्र पर होंगे, जिनमें हर उम्मीदवार का चेहरा फोटो के तीन-चौथाई हिस्से में स्पष्ट रूप से दिखाई देगा। इसके अलावा, उपचुनाव में मतदान के दिन सभी 40% मतदान केंद्रों पर मोबाइल जमा सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी। साथ ही, मतदाताओं के लिए नई उन्नत मतदाता सूचना पर्ची जारी की जा रही है, जिसमें मतदाता का क्रमांक और भाग संख्या अधिक स्पष्ट रूप से प्रदर्शित होंगे।

Printed and published by Dr. Gireesh Sanghi on behalf of AGA Publications Ltd., at 396, Lower Tankbund, Hyderabad-500080 Editor: *Dhirendra Pratap Singh *responsible for selection of news under the PRB Act. Postal Licence H/SD/380/21-22, Phone:27644999. Fax:27642512, RNI No.69340/98, Regd.:No.AP/HIN/00196/01/1/97/TC.